प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी, गेट दिल्ली

प्रथम सस्करण
जुलाई, १९५६

मूल्य
दो रुपया आठ आना

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली.

अनुक्रमणिका

अंग्रेज़ी साहित्य

: १ :

सत्रहवीं सदी से पहले

इस देश के निवासियो के लिए, जो अपना इतिहास सहस्राब्दियो मे गिनते हैं, इङ्गलैड का इतिहास बहुत प्राचीन नही। उसके साहित्य का इतिहास तो अपेक्षाकृत नितान्त आधुनिक है। साधारणत उसका आरम्भ कवि चासर (लगभग सन् १३४०-१४००) से माना जाता है।

आरम्भ .

परन्तु चासर से पहले ही अग्रेजी साहित्य का जन्म हो गया था, यद्यपि छ सदियो के उस साहित्य को कुछ समृद्ध नही कहा जा सकता। उस साहित्य के इतिहास का प्रारम्भ वस्तुत एग्लो (आग्लो), सैक्सनो और जूटो की इङ्गलैड-विजय से हुआ। यह सही है कि उस काल का साहित्य जिस भाषा मे प्रस्तुत हुआ वह भी अग्रेजी कहलाती है यद्यपि आज हम उसे अपने प्राकृत रूप में नही समझ सकते, अनुवाद-रूप मे ही पढ पाते हैं। इसी कारण कुछ विद्वानो ने उसे अग्रेज़ी मानने में भी आपत्ति की है। परन्तु विशेष अन्तर काल की दूरी ने डाल दिया है और चासर-कालीन भाषा-साहित्य की पृष्ठभूमि के रूप में ही चाहे क्यो न हो, हमें उस प्रारम्भिक अग्रेजी साहित्य पर एक नज़र डालनी ही होगी। उस प्राक्-चासर-साहित्य के निर्माण का सम्बन्ध दो विशेष घटनाओ से है। उनमें एक तो छठी सदी ईस्वी मे एग्लो, सैक्सनो आदि का इङ्गलैड-प्रवेश है, दूसरी ५९७ ई० मे आगस्टाइन का केन्ट में ईसाई धर्म का प्रचार। जर्मन लोग जहां जाते थे, आज ही की भाँति, वे अपनी अनुश्रुतिया भी साथ लिए जाते थे।

बोवुल्फ :

चासर-पूर्व का अग्रेजी काव्य इन्ही जर्मन अनुश्रुतियो पर अवलबित है। यह काव्य तत्कालीन-पश्चात्कालीन हस्तलिपियो में इङ्गलैड के अनेक सग्रहालयो मे अशत आज भी सुरक्षित है। इनमें 'बोवुल्फ' की काव्य-बद्ध कथा विशेष महत्व की है। कथा के रूप में तो 'बोवुल्फ' की अनुश्रुति इङ्गलैड में एग्लो के आगमन के साथ ही पहुँच गई थी परन्तु उसका पद्याकन सातवी सदी के अन्त (प्राय ७०० ई०) मे हुआ, जब भारत में हूणो की रौंदी भूमि पर जहां-तहां राजपूत-राजकुल खडे हो रहे थे। 'बोवुल्फ' की हस्तलिपि अठारहवी सदी में जलते-जलते बच गई थी और उसकी सिकी-तपी प्रति आज भी ब्रिटिश म्यूजियम मे सुरक्षित है। इसी काव्य-परम्परा के 'वाल्डेयर' नामक

काव्य के भी दो अश पिछली सदी के उत्तरार्ध मे कोपेनहागेन के राजकीय पुस्तकालय में मिल गए थे।

'बोवुल्फ' की कथा का सम्बन्ध इङ्गलैंड अथवा एग्लो से नही है। जर्मन जाति सदा से अपनी अखण्डता में विश्वास करती आई है। इसीसे वह इस स्कैंडिनेविया-(नारवे, स्वीडन, डेनमार्क) सम्बन्धी अनुश्रुति की रक्षा भी कर सकी। कथा अनैतिहासिक है, ग्रेन्डेल नामक उस दैत्य की, जो डेनराज ह्रोयगर की सभा को भयानक रूप से भग कर दिया करता है और जिसका सहार अपने दल की सहायता से बोवुल्फ नाम का पराक्रमी वीर करता है। काव्य के उत्तरार्ध में बोवुल्फ राजा बनकर अग्निदैत्य से अपने देश की रक्षा करता है। निश्चय कथा कल्पित जगत् की है, परन्तु उसमें जो वीरो के दरबार, उनका रहन-सहन, आपान आदि का वर्णन है, वह तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। काव्य की पक्तियाँ अतुकात और लम्बी हैं, किन्तु प्रत्येक पक्ति में अनुप्रास की रवानी है और कवि की भारती तो नि सन्देह विशद है, अशत लाक्षणिक भी। वस्तु-नाम उसने साधारणत चित्र-नाम से अकित किए हैं। उदाहरणत' समुद्र को वह 'हस-पथ' और शरीर को 'पजरालय' कहता है।

यह जर्मन अनुश्रुति-प्रधान काव्य ईश्वरवादी ईसाई धर्म के विश्वासों से सर्वथा मुक्त है यद्यपि अपने निर्माणकाल में, उस धर्म-प्रचार का समसामयिक होने के कारण, उसमें जहाँ-तहाँ ईसाईवादी विधि-क्रियाओ का उल्लेख हो गया है। उसकी काव्यधारा सशक्त है — महाप्राण, अतीव शालीन, वीर काव्य-सी।

इसी जर्मन परम्परा में कुछ और खण्ड-काव्य या स्फुट कविताएँ हैं, जिनकी वेदना-व्यजक अनुभूति पाठक के हृदय को छू लेती है। इनमे प्रधान हैं | घोर, पत्नी का विलाप, पति का सवाद, सर्वनाश, पर्यटक, सागर-यात्री। अधिकतर कविताएँ जर्मन सामन्तो के दरबारो की हैं, शक्तिमय वीरकार्यों की।

धर्म-काव्य कीडमन और काइनवुल्फ

इन कविताओ का सम्बन्ध तो उस जर्मन जीवन से है जो ऐंग्ल-सैक्सन-जूटो के साथ अनुश्रुतियो की परम्परा में इङ्गलैंड पहुँचा। इनके अतिरिक्त उस प्राक्-चासर-काल में ईसाई धर्म के प्रादुर्भाव ने भी कुछ कम काव्य-स्फूर्ति नही सिरजी।

छठी सदी ईस्वी के अन्त में आगस्टाइन ने रोम से इङ्गलैंड जाकर कैंट के जूटो को ईसाई बनाना शुरू किया। इसी काल आयरलैंड के ईसाई साधुओ ने भी नार्थम्ब्रिया में अपने मठ बना प्रचार-कार्य प्रारम्भ किया। इसी प्रचार-प्रेरणा से तत्कालीन धर्म-काव्य प्रस्तुत हुए। इनकी कथाए तो ईसाई धर्म की थी, पर वाक्यावली, शब्दयोजना, काव्यप्रवाह सभी कुछ उसी पुरानी जर्मन अनीसाई परम्परा का था। ईसाई धर्म के समसामयिक प्रचार में इस नीति ने दूरगामी सफलता पाई। 'अन्द्रियाज' उसी परम्परा का काव्य है, जिसमें सन्त आन्द्रू द्वारा सन्त मैथ्यू की रक्षा

वर्णित है। इस काल के दो कवि विशेष जाने हुए हैं—कीडमन और काइनवुल्फ। इन्होने अनेक ईसाई सन्तो की कथा काव्यवद्ध की। 'वाइविल' की अनेक कथाओ को इन्होने काव्य का रूप दिया। 'सन्त जुलियाना', 'एलीनी', 'अर्हतो के भाग्य', 'रूड का स्वप्न', 'जूडिथ' आदि उस काल की कुछ जानी हुई कृतियाँ हैं। इनमें 'रूड का स्वप्न' जहाँ प्राचीन अग्रेजी काव्यो में कल्पना के क्षेत्र मे अपना सानी नही रखता, वहाँ 'जूडिथ' (निरकुश होलोफर्निज का जूडिथ द्वारा सहार) एग्लो-सैक्सन काव्य-परम्परा में लोमहर्षक वर्णन और अभिनयोचित तथ्य में वेजोड है। कीडमन और काइनवुल्फ के व्यक्तिगत जीवन के आँकडे हमें उपलब्ध नही।

आल्धेल्म (मृत्यु सन् ७०९) · वीड (सन् ६७३-७३५) : ऐल्फ्रेड (सन् ८४९-९०१)

यह तो हुई उस काल की काव्य-रचना, पर तब का गद्य-सृजन भी कुछ कम महत्व का नही। वस्तुत उस दिशा के गद्य-प्रयास अनेकार्थं में काव्य से अधिक महत्व के हैं। कम से कम उस काल के अग्रेज लेखको और विद्वानो को हम कवियो की अपेक्षा अधिक जानते हैं। शेरवोर्न का विशप आल्धेल्म पहला ज्ञात व्यक्ति है, जिसने इग्लैंड में अलकृत लेटिन में गद्य-रचना की। तव की रचनाएँ लेटिन में ही हैं। परन्तु उस काल का महान् पण्डित और रचयिता वीड (६७३-७३५) है, जिसने अरवो से आक्रात यूरोप के इस पश्चिमी द्वीप में सस्कृति का एक प्रशस्त केन्द्र स्थापित किया और जिसके 'अग्रेज जाति का धार्मिक इतिहास' (लेटिन में) ने उसके लिए अक्षय कीर्ति अर्जित की। वीड इतिहास, ज्योतिष आदि का प्रकाण्ड विद्वान् था यद्यपि जैरो के मठ से आए तपोनिष्ठ साधुओ में उसका स्थान विशिष्ट था। वीड के कुछ ही काल वाद डेनो के आक्रमण शुरू हुए। उन्होने अग्रेजी सस्कृति पर विकराल चोटें की। परन्तु उन चोटो और अत्याचारो का जनता ने खुलकर सामना भी किया। एगल-सैक्सनो के राजा ऐल्फ्रेड ने अपने देश की रक्षा में स्तुत्य कार्य किया। वह केवल सैनिक ही न था, भोज की भाँति वह विद्या-व्यसनी भी था। समर से समय मिलते ही भोज की ही भाँति वह भी भारती का रूप सवारता। उसने ग्रेगरी महान् के 'पैस्टोरल राइल' का अनुवाद प्रस्तुत किया और वीड के 'धार्मिक इतिहास' का अग्रेजी रूपान्तर अपनी प्रजा को दिया। उसके किए अन्य अनुवादो में ओरोसियस का 'ससार का इतिहास' और वोएथियम का 'दर्शन का आश्वासन' है। इसी काल उसी नृपति के तत्वावधान में 'एगलो-सैक्सन क्रानिकल' नामक एक राष्ट्रीय इतिहास भी प्रस्तुत हुआ। इससे उस काल के इग्लैड के विदेशियो के साथ सघर्ष, तप और त्याग का परिचय मिलता है।

ईल्फ्रिक और उल्फस्टैन

इसी डेन-आक्रमण-काल में दो धर्म-गुरुओ ने अत्यन्त निर्भीकता और साहस के

साथ अपने उद्गारो और रचनाओं द्वारा अपनी जनता का नेतृत्व किया। ये थे, ईल्फिक और उल्फस्टैन। ईल्फिक ने अंग्रेज़ी में अपने प्रवचन दिए और मधुर प्राय गेय गद्य में अपने श्रोताओं को 'बाइबिल' का सन्देश सुनाया। उल्फस्टैन की वाणी देश के शत्रुओ के विरुद्ध उठी और वह अपने राजा ईथेलरेड को भी उसकी कमज़ोरी और कायरता के लिए विधिवत् धिक्कारने से न चूका। डेनो के अत्याचारो के बीच उसके अंग्रेज़ी में दिए प्रवचन वायु में गूंज उठे। उसके 'भेडिया का प्रवचन' ने तो जनता में अपने शत्रुओ के विरुद्ध एक नई स्फूर्ति भर दी।

: २ :

चासर और उसके परवर्ती

ज्योफ्रे चासर (सन् १३४०-१४००)

आधुनिक अंग्रेज़ी काव्य-साहित्य का आरम्भ ज्योफ्रे चासर से होता है। चासर सैनिक, राजनीतिज्ञ और विद्वान् था। मध्य-वर्गीय होने के नाते उसका ज्ञान राज-दरबारो और साधारण जनता दोनो के सम्बन्ध में असाधारण था। उसने फ्रास और इटली की यात्राओ में फ्रेंच और लेटिन काव्य-रचना का भी अभ्यास किया था। वोविद और वर्जिल की रचनाएँ उसे कण्ठाग्र थी। समसामयिक साहित्य का उसे समुचित ज्ञान था। रूपक और दरबारी भावांकनो में उसे विशेष अभिरुचि थी। उसकी प्रारम्भिक कृतियो दि बुक आफ दि डचेज' (सन् १३६९) और 'दि हाउस आफ फेम' से रूपक और मध्यकालीन वस्तु-रचना के क्षेत्र में उसे अच्छी ख्याति मिली। परन्तु उसके वास्तविक कीर्ति-स्तम्भ हैं—'ट्रायलस एण्ड क्रिसिडी' (सन् १३८५-८७) 'दि लीजेन्ड आफ गुड विमेन' (सन् १३८५) और 'कैन्टरबरा टेल्स'। इनमें अन्तिम रचना चासर समाप्त न कर सका था।

'ट्रायलस एण्ड क्रिसिडी' इटालियन कथाकार वोकाचो के 'इल फिलोस्त्रातो' पर अवलम्बित है। पीछे यह शेक्सपियर के इसी नाम के नाटक का आधार बना। यह पद्य-साहित्य में एक प्रकार का उपन्यास है, जिसमें क्रिसिडी के प्रति ट्रायलस का प्रणय और क्रिसिडी की उपेक्षा तथा वचकता अंकित है। रचना का भावतत्व आज की दुनिया में भी नितान्त सार्थक है और इसके चरित्रों की सजीवता आज भी सिद्ध है। इस महान् रचना की अपेक्षा 'दि लीजेन्ड आफ गुड विमेन,' जिसमें क्लियोपेट्रा, थिस्बी, फिलोमेला आदि नारियो के प्रणय-विषाद प्रतिविम्बित हैं, गौण कृति है। इसमें फिर भी रूपको, 'लिरिको' आदि की भरमार है।

पर चासर का यश विशेषत 'कैन्टरबरी टेल्स' पर अवलंबित है। कैन्टरबरी जाने वाले तीर्थयात्रियो की कहानियाँ अद्भुत क्षमता और कुशलता से कही गई हैं। वैयक्तिक

और सामूहिक दोनो रूपो से ये काव्य-कथाएँ मध्यकालीन मानवता का चित्रण करती हैं। अभाग्य वश 'कैन्टरबरी टेल्स' चासर समाप्त न कर सका।

जान गावर (ल० १३२५-१४०८)

जान गावर ने भी अपनी रचनाएँ इसी काल की। वह चासर का समकालीन था। चासर की ही भांति उसने भी फ्रेंच और लेटिन का ज्ञान प्राप्त किया और अंग्रेजी की ही भांति उन भाषाओ में भी वह स्वाभाविक अधिकार से काव्य-रचना करता था। उसने भी अपने जीवन काल में ही इतनी ख्याति पाई कि कहते हैं, यदि चासर न हुआ होता तो उस काल का प्रतिनिधि कवि गावर ही होता।

विलियम लैंगलैंड

विलियम लैंगलैंड भी इसी काल हुआ और उसने पश्चिमी बोली मे अपनी दि विजन आफ पीयर्स दि प्लाऊमैन' लिखी। यद्यपि लन्दन की भाषा अंग्रेजी की प्रति-भाषा बनती जा रही थी, फिर भी स्थानीय बोलियो का प्रभाव कुछ कम न था। चासर पश्चिमी बोली की कविताओं का विरोधी था। विलियम लैंगलैंड ने इसी बोली मे काव्य-रचना की। उसने समसामयिक समाज का अपनी कृति में भरपूर परदा फाश किया है। शासन की दुर्व्यवस्था, धन के अनाचार आदि प्रचुर परिमाण में उस चौदहवी सदी की असामान्य कृति में प्रतिबिम्बित हैं। लैंगलैंड आधुनिक समाज-शास्त्री की भांति काव्यतः समाज का विश्लेषण करता है। उसकी धारणा है कि श्रम और ईसाई धर्म की सेवा मे ही मनुष्य का कल्याण है। उसने ईसाई-जीवन के आदर्शो से अनुप्राणित अंग्रेजी का सर्वोत्तम काव्य लिखा और उस क्षेत्र मे महाकवि दाते के सन्निकट पहुँच गया। लगता है, यदि वह रहस्यवादी न हो गया होता तो निश्चय ही क्राति का अग्रदूत होता।

लिरिक और बैलेड

उसी पश्चिमी बोली के काव्य-खण्ड हैं--'पर्ल', 'पेशेन्स,' 'प्योरिटी' और 'गवेन एण्ड दि ग्रीन नाइट'। इनमें उस मध्यकालीन युग की जागरूक प्रतिभाए अभिसृष्ट हुई हैं। उस काल के काव्य-रोमान्सो से कहीं सबल समसामयिक लिरिक (गेय कविताएं) हैं। इन मध्यकालीन लिरिको मे 'एलीसून' विशेपत प्रशसनीय है, जो सदियो और बद-लती बोलियो के पार आज भी उतना ही सबल और प्रभावशाली है, जितना अपने निर्माण-काल मे था। बैलेड भी इस काल काफी लिखे गए। बैलेड भी एक प्रकार का लिरिक ही है जिसमें कहानी एक विशेष रीति मे कही जाती है। इन बैलेडो में विशेप स्मरणीय 'सर पैट्रिक स्पेन्स' और 'दि मिल डैम्स आफ बिनोरी' हैं जिनका प्रवाह, छन्द-शैली और मध्ययुगीय जीवन के प्रतिबिम्ब सराहनीय हैं।

टामस आक्लीव लीडगेट हावेस जान स्केल्टन

पन्द्रहवी सदी का काव्य-साहित्य सर्वथा नीरस तो नहीं कहा जा सकता

परन्तु है वह प्रतीकत 'परावलवित'। उस सदी का अधिकतर काव्य चासर से अनुप्राणित और प्रकारत उसी की कृतियों का रूपान्तर है। स्वतन्त्र कृतियो का उस युग में प्राय अभाव है जिसका एक कारण शायद यह भी है कि चासर-सा सुकवि उसका पूर्ववर्ती प्रतीक है। टामस आक्लीव और जान लीडगेट इसी परम्परा के कवि हैं और वह स्टिफेन हावेस भी, जिसने 'दि पास्टाइम आव प्लेज़र' की रचना की। पन्द्रहवी सदी के पिछले युग में जान स्केल्टन (ल० १४६०-१५२९) नाम का समर्थ कवि हुआ। उसकी कविता में काव्यत्व की कमी है, व्यग्यात्मकता जहा-तहा फूहड तक है परन्तु परम्परागत काव्य-सौन्दर्य के अभाव के बावजूद उसमें एक जनपरक ताज़गी है।

स्काच कवि हेनरीसन विलियम डनवर जेम्स प्रथम और गैविन डगलस

स्काटलैंड में चासर का विस्तार अधिक योग्यता से हुआ। 'टेस्टामेन्ट आफ क्रेसिड' और 'किंगिस क्वेर' उस दिशा में सुन्दर प्रयास हैं। चासर का अनुवर्ती होकर भी विलियम डनवर 'टेस्टामेन्ट आफ क्रेसिड' के रचयिता राबर्ट हेनरीसन के विपरीत अपने पैरो पर खडा है। मध्यकालीन चारण की भाति उसकी वाणी तत्कालीन जीवन को मूर्तिमान करती है। गैविन डगलस भी इसी परिवार का कवि है और यद्यपि उसकी अपनी स्वतन्त्र कृतियो ने आधुनिक आलोचको को विशेपत प्रभावित नही किया, फिर भी उसका वर्जिल का अग्रेज़ी अनुवाद नि सन्देह सत्य है। स्काटलैंड के नृपति जेम्स प्रथम की काव्य-मेधा उस काल सजग थी और उसके 'किंगिस क्वेर' में राज रचना का एक नमूना हमें उपलब्ध है।

वाट और सरे

सोलहवी सदी के मध्य इटली का सर्वगामी प्रभाव इग्लैंड के साहित्य पर भी पडा। वाट और सरे ने 'टोटेल्स मिसेलिनी' (१५५९) के नाम से कविता-सग्रह प्रकाशित किया। लार्ड सरे को उस कामुक राजा के कोप का शिकार बन तीस वर्ष की आयु में ही सिर कटाना पडा। वाट ने चौदह पक्तियो के इटालियन सानेट को अग्रेज़ी रूप में सजाया। इस सानेट-निर्माता अग्रेज़ी कवि का काव्य-सस्कार सकर और बोझिल होता हुआ भी अपनी विशेपता रखता है। सरे की काव्य-धारणा अधिक स्वाभाविक है। उसने वर्जिल के 'ईनिड' के दूसरे और चौथे खण्डो का अग्रेज़ी मुक्त छन्द में अनुवाद किया। सरे को इसका गुमान भी न था कि जिस मुक्त छन्द का प्रयोग उसने पहले पहल किया वह कालान्तर में अग्रेज़ी छन्द-परम्परा में इतने महत्व का सिद्ध होगा। उसी परम्परा का उपयोग अग्रेज़ी के जगद्विख्यात् कवि मारलो और शेक्सपियर दोनों ने किया। मिल्टन, कीट्स और टेनिसन तीनो सरे छन्द-विन्यास से प्रभावित हुए।

सानेट

वाट और सरे दोनो स्वय पेत्रार्क से प्रभावित थे और एलिजाबेथ-युग के प्राय

सभी कवियो ने पेत्रार्च की ही उन प्रणय-चेष्टाग्रो का अनुकरण किया जिनकी दाय उनको वाट और सरे द्वारा मिली थी। सानेट की परम्परा का शेक्सपियर, सिडनी आदि ने भी अनुसरण किया। आश्चर्य की वात तो यह है कि शेक्सपियर और सिडनी दोनो ने पहले उस प्रणाली का मज़ाक उडाया मगर दोनो उसके शिकार हो गए। सानेट की शैली अग्रेज़ी मे अमर होकर रही। एलिज़ावेथ-युग में तो उसका प्रचार रहा ही वाद के युगो में भी १४ पक्तियो की वह कविता-शैली कवियो द्वारा अपनायी जाती रही। स्वय मिल्टन ने सानेट का प्रयोग किया यद्यपि उसने परम्परा के अनुकूल उसका उपयोग प्रणाय-सम्बन्धी अभिव्यक्ति मे नही किया। जनतन्त्रिक टिप्पणियो मे उसे सानेट का साहाय्य अत्यन्त शक्तिप्रद सिद्ध हुआ। स्वय वर्ड्स्वर्थ ने इग्लैंड को प्रमाद से मुक्त करने और नेपोलियन को धिक्कारने के लिए सानेट को ही उपयुक्त समझा। कीट्स का 'चैपमैन्स होमर' सानेट की ही पद्धति में लिखा गया। १९वी सदी में मेरेडिथ ने भी अपनी कविता 'माडर्न लव' मे प्रेम के विश्लेपण के लिए सानेट का ही प्रयोग किया और रोसेटी ने भी घूम-फिरकर दाते और पेत्रार्च के ही सानेट को काव्याभिव्यक्ति के लिए उचित समझा। इस प्रकार यद्यपि वाट और सरे की कविता स्वयं इतनी महत्व की न हुई, परन्तु उसे व्यक्त करने के लिए जिस 'सानेट' काव्य-प्रणाली का उन्होने प्रयोग किया वह निश्चय अगले युगो में अग्रेज़ी काव्य का सौन्दर्य वन गई।

एडमन्ड स्पेन्सर (सन् १५५२-९९)

एडमन्ड स्पेन्सर काव्य-कला का पण्डित माना गया है। केम्ब्रिज में पढते समय ही उसने अपने गुरुजन और सहपाठियो पर गहरा असर डाला। उसके व्यक्तित्व का प्रभाव सर्वत्र पडा और शीघ्र लीसेस्टर के अर्ल ने उसे अपने सरक्षण मे ले लिया। वह वरावर आयरलैंड मे रहा और वही से उसने अपनी कविताग्रो की दो जिल्दें प्रकाशित कीं—'दि शेपर्ड्स कैलेन्डर' और 'दि फेयरी क्वीन'। स्पेन्सर अग्रेज़ी भाषा का सस्कर्ता माना जाता है। अंग्रेज़ी में वह होमर और वर्जिल की वीर-काव्य-परम्परा स्थापित करना चाहता था जिसमें शब्द-गाम्भीर्य और काव्य-शालीनता नये रूप से अभिव्यक्त हो। अनेक वार उसने ऐसी काव्य-कहानिया लिखी जिनमें कथा-वस्तु 'क्लासिकल' पृष्ठभूमि पर खडा हुआ। दर्बार को उसने अपनी काव्य-प्रतिभा से विशेषत आकृष्ट किया। 'फेयरी क्वीन में तो उसने स्वय रानी एलिज़ावेथ को नायिका वना दिया। परन्तु उसकी काव्य-मेधा अभिजात कुलीय दरवार तक ही सीमित न रह सकी और उसने उसके पार साधारण मानव के अज्ञान, अन्धविश्वासो और कमज़ोरियो पर भी अपनी तीखी निगाह डाली। यद्यपि यह नही कहा जा सकता कि दरवारी परम्परा के वाहर भी उसका कृतित्व उतना ही सार्थक हुआ जितना राज-सभा की अभिव्यञ्जना में। हा, इतना जरूर है कि उसके कृतित्व में 'रेनैसां'

और सावधि युगो का समान रूप से योग मिला। वस्तुत वह पुनर्जागरण-युग और आधुनिक काल की सन्धि पर खडा हुआ।

उसकी रचना मे शब्द का माधुर्य अमिट है और यद्यपि काल की गति ने उसकी कृतियो के कथानको को आज नि शक्त बना दिया है फिर भी उसके काव्य की अभिव्यजना, कल्पना की सुचारुता और शब्दो का सगीत इस काल भी अपना प्रभाव रखते हैं। 'शेपर्ड् कैंटेलॉग' में पुराण पन्यिता का प्रचुर-पुट है, फिर भी कविताओ का रूप काफी मनोरम है। 'फेयरी क्वीन' ने स्पेन्सर के बाद के अधिकतर अग्रेज कवियो को आकृष्ट किया है। आज उसकी भी सत्ता कमजोर पड गयी है परन्तु एक समय था जब काव्य-कल्पना मे उसका विशेष महत्व था। एलिज़ाबेथ के युग से ही 'फयेरी क्वीन' का कथानक पुराना और अस्पष्ट हो चला था परन्तु उस काल इस काव्य का रूपक लोगो को मोह लेता था। आज की दुनिया में 'फयेरी क्वीन' का ससार मनुष्य का वह यथार्थ चित्रण हमें नहीं दे पाता जो चासर और शेक्सपियर दोनो की अमित शक्ति। मध्यकालीन जीवन का फिर भी एक सबल रूप स्पेन्सर की कृतियो में उपलब्ध है।

एलिजाबेथ-युग के कवि माइकेल ड्रेटन (सन् १५६३-१६३१)

एलिज़ाबेथ-युग की वास्तविक और सुन्दर कविता ने ड्रामा का रूप लिया और यह मानी हुई बात है कि स्पेन्सर को छोडकर कोई कवि मार्लो और शेक्सपियर का कविता के क्षेत्र में मुकाबला नही कर सका। एलिज़ाबेथ के नाटककार नाटक के क्षेत्र के बाहर अपनी काव्य-सम्पदा में भी कुछ कम चमत्कार उत्पन्न नही करते यद्यपि उनका प्रधान ध्येय नाटक है। मार्लो का 'हीरो ऐण्ड लीन्डर' शेक्सपियर के 'वीनस एण्ड एडोनिस', 'रेप आव् लुक्रीस', और विविध सानेट, और बेन जान्सन के अनेक लिरिक उस युग की काव्य-सम्पदा का हमें परिचय देते हैं। उस काल छोटी-बडी सब तरह की कविताए लिखी गयी। माइकेल ड्रेटन की कृतियो में कविता की अनेकरूपता का भडार प्रस्तुत है। इतालियन रूमानी वीर-काव्यो की धारा तो उसे न छू सकी पर स्वय उसने कविता की अनेक प्रणालियो का प्रयोग किया। ड्रेटन की कृतियो में 'दि बैरन्स वर्स', और 'पोल्योल्बियन' भारी भरकम कविताए हैं, जिनमें वह इग्लैड की अनुश्रुतिया, जन-विश्वास, भौगोलिक वर्णन आदि प्रस्तुत करता है। परन्तु इनके अतिरिक्त भी उसने कुछ ऐसी कविताए छोडी है जिनकी भाव-सम्पदा और सुकुमारता असाधारण है। 'निम्फीडिया' परी-साहित्य का एक सुन्दर नमूना है और 'बैलेड आफ अगिनकोर्ट' तो अग्रेजी काव्य-साहित्य पर अपनी गहरी छाप छोड गया है।

सेमुएल डैनियल (सन् १५६२-१६१९)

ड्रेटन की ही परम्परा में सेमुएल डैनियल ने भी लिखा। लैंकास्टर और यार्क के गृह-युद्धो का इतिहास उसने पद्य में लिखा, परन्तु उसकी महत्ता वस्तुतः 'एपिस्टल्स' की-सी उसकी कविताओ में है, जिनका प्रभाव वर्ड्सवर्थ पर काफी पडा। यह

कविताएँ वर्णनात्मक इतनी नही जितनी चिन्तनशील हैं।

जान डान (सन् १५७२-१६३१)

एलिजाबेथ-काल की लम्बी कविताए अपने ऐतिहासिक भार से पाठक को उबा देती हैं, परन्तु उस काल के गीत और लिरिक अपने प्रभावो मे आज सदियो बाद भी ताजे हैं। स्वय शेक्सपियर ने अपने नाटको में जहा-तहा इन गीतो का उपयोग किया है जो हृदय को छू लेते हैं। इस प्रकार की गेय कविताओ के क्षेत्र मे जान डान अनुपम है। वह स्वय रूमानी प्रवृत्ति का व्यक्ति था—प्रणयी, राज-सभासद्, सैनिक—उसका जीवन विविध स्थितियो से होकर गुज़रा। फलत उसका चित्त अस्थिर और जागरूक था। उसने पढा बहुत और सोचा भी काफी अत उसके विचारो मे तीव्रता काफी थी। उसकी अनुभूति उसके हृदय पर असाधारण प्रभाव डालती थी परन्तु उसकी मेधा उसके प्रणय को भी चिन्तनशील दर्शन का रूप दे देती थी। वह सौन्दर्य के आकार को देखता-समझता है। परन्तु उसके आधार को भौतिक पजर अथवा शव मानता है। प्रणय और चिन्तन दोनो का जान डान की काव्य-स्थिति मे अद्भुत ऊहापोह है। कुछ अजब नही कि सेन्टपाल का डीन होने के बाद युवावस्था में ही अपने आवेगमय जीवन के आवेगो के कारण ही उसने अपना अन्त कर लिया था।

जार्ज हर्बट हेनरी वान . रिचार्ड क्राशा

जान डान अपने समय का क्रान्तिकारी कवि है। वह पारम्परिक पद्य के रूप को स्वीकार नही करता, न पुरानी उपमाओ को ही स्वीकार करता है। पेत्रार्च के अनुयायी सानेट लिखनेवालो की उपमाओ को वह तत्काल त्याग देता है यद्यपि उसकी अपनी उपमाए स्वय अनोखी हैं। प्रसिद्ध डाक्टर जानसन ने कालान्तर मे जान डान और उसकी प्रणाली को मेटाफिजिकल (भौतिक अनुभूति से परे) कहा क्योकि उसकी कविताओ में विरोधी भावनाओ का समरूप में उपयोग हुआ। जान डान की पद्धति अनेक बार सूत्रवत् हो जाती है। डान का प्रभाव सत्रहवी सदी के धार्मिक कवियो पर बहुत गहरा पडा। जार्ज हर्बट (सन् १५६३-१६३३) उनमे विशेष प्रसिद्ध है। अपनी कविता 'दि टेम्पल' में उसने धार्मिक अनुभूति का सुन्दर वृत्तान्त उपस्थित किया। हेनरी वान (सन् १६२२-६५) रहस्यवादी कवि हुआ जिसने 'रिट्रीट' और 'आई सा एटरनिटी दि अदर नाइट' नाम की महत्त्वपूर्ण कविताए लिखी। रिचार्ड क्राशा (सन् १६१२-४६) इस वर्ग का तीसरा कवि है, जिसकी कविता 'स्टेप्स् टु दि टेम्पल' विशेष महत्व की मानी जाती है।

टामस कैरो (सन् १५६७-१६३६) सरजान सकलिंग (१६०६-१६४२) रिचार्ड लवलेस (१८१८-१८५७) . राबर्ट हैरिक (१५६१-१६७४) एन्ड्र मार्वेल (१६५१-१६७८)

टामस कैरो ने 'कवेलियर' कवियो का प्रारम्भ किया। उसकी शैली मे काफी भावु-

कता है और सग्रहो में उसके प्रेम सम्बन्धी लिरिको के उदाहरण उपलब्ध हैं। 'रैपचर' नाम की उसकी कविता में शृगार का प्राय नग्न वर्णन हुआ है, जिससे आलोचकों ने उसकी तीव्र आलोचना की है। इस कवेलियर काव्य-परम्परा में ही सर जान सर्कालिग भी हुआ जिसने जब-तब उस परम्परा को छोडकर विचारशील काव्य की भी रचना की। रिचार्ड लवलेस (सन् १८१८-५७) कैरो या सर्कालिग का-सा मेघावी तो न था, पर उसने भी कुछ सुन्दर गीत लिखे। इस परम्परा मे गीतकार रावर्ट हैरिक (१५६१-१६७४) कुछ विशेप दूर न था यद्यपि उसे कवेलियरो मे नही गिना जाता। वह बेन जान्सन का शिष्य था और अपनी कविता उसने डेवेनशायर में लिखी। १६४८ ईस्वी मे 'हेस्पराइडीज' में उसकी हजार से ऊपर कविताओ का सग्रह प्रकाशित हुआ। विपाद की छाया उसके लिरिको में काफी पडी है और उसका शब्द-चयन तो निश्चय ही अनूठा है। उसकी कविताओ मे इग्लैड का ग्राम्य जीवन मूर्तिमान् हो उठा है। उसके लिरिक प्रेम और कल्पना प्रधान हैं, उनका प्रवाह सरल और सहज है और सीमित क्षणभगुर आनन्द के प्रति उनकी अभिव्यक्ति हृदयग्राहिणी है। हैरिक के जीवन के प्रति इस दृष्टिकोण में उसका एकान्तवास भी सहायक हुआ। उसके विपरीत एन्ड्रू मार्वेल प्रवाहित जीवन का सबल सुकवि है। उसने क्रामवेल और चार्ल्स द्वितीय-काल के इग्लैंड का मनोहारी वर्णन किया है। प्यूरिटन होने के कारण उसकी कविताएँ व्यग्य और शब्द-प्रहारो से भरी हैं। इस रूप मे उसकी यह कविताएँ अपनी उन पूर्ववर्ती कृत्तियों के विपरीत पडती हैं, जो मधुर और सरल थी।

: ३ :

मिल्टन और परवर्ती कवि

सत्रहवी सदी इग्लैंड के इतिहास में विशेष महत्व की है। गृह-युद्ध ने उस देश मे एक नयी परम्परा स्थापित की, जिसने जनतन्त्र के विकास में बडे महत्व के परिवर्तन किये। विज्ञान और तर्कवाद नयी शक्ति धारण कर रहे थे और व्यापार तीव्र गति से एक नई विज्ञानानुमोदित क्रान्ति की ओर बढ चला था। डान ने उसी नयी चेतना का अपनी विकल कविताओ द्वारा परिचय दिया। मिल्टन उसी सदी के आरम्भ में उत्पन्न हुआ और उसने उस काव्य-सम्पदा को सिरजा जो अग्रेजी साहित्य में अमर हो गयी।

जान मिल्टन (सन् १६०८-७४)

जान मिल्टन इग्लैड के महान् कवियो मे है। यदि हम नाट्य-परम्परा के कवियो से उसे अलग कर दें तो निश्चय उसकी शालीनता अनुपम है। उसने ख्याति भी अपनी काव्याभिसृष्टि के गौरव के अनुकूल ही पायी है। गृह-युद्ध के पहले की उसकी कविताओ में 'कोमस' प्रधान है। उसकी प्रारम्भिक कविताएँ सन् १६४५ में

सग्रहीत हुई । मिल्टन को जो केवल कवि के रूप मे जानते हैं, उनको पता नही कि अपने निवन्धो में उस महाकवि ने गद्य का कितना प्रखर रूप सिरजा है। गृह-युद्धो के अवसर पर उसने जिस गद्य-धारा का सृजन किया वह उस काल के अंग्रेजी साहित्य में अनुपम है। मिल्टन अंग्रेजी साहित्य का प्राय· पहला पैम्फेलटियर है जिसने कलम का उपयोग जन-सघर्ष के पक्ष में किया। क्रामवेल के नेतृत्व ने उसमें मानवता के विजयी भविष्य के प्रति अद्भुत निष्ठा और आशा जगा दी थी। उसी सघर्ष की कटुता और मानवता के प्रति सजग निष्ठा ने जीवन के अन्तिम सालो में दृष्टिहीन, प्राय निराश मिल्टन को अपना वह अद्भुत वीरकाव्य लिखने को वाध्य किया जो 'पैराडाइज़ लॉस्ट' और 'पैराडाइज़ रिगेन्ड' के नाम से जगत में विख्यात हुए। इनमे पहला काव्य-खड सन् १६६७ में प्रकाशित हुआ, दूसरा चार वर्ष वाद सन् १६७१ मे ।

मिल्टन ने जो जीवन के भीतर भी सघर्ष की व्यवस्था पायी, वह निश्चय तत्कालीन ऐतिहासिक स्थिति का प्रतिविम्व था। 'कोमस' में उसने उसी अन्तस्सघर्ष की व्याख्या की। मिल्टन की सभी कृतियो में 'कोमस' आज विशेप लोकप्रिय है। इसी प्रकार 'पैराडाइज लॉस्ट' में ईव और एडम सघर्ष करते हैं, जैसे क्राइस्ट सैटन के विरुद्ध 'पैराडाइज रिगेन्ड' में सघर्प करता है और सैमसन एगोनिस्टस में मिथ्या मतो के विरुद्ध । 'पैराडाइज-लॉस्ट' सब युगो के लिए महान् कृति है। एडम और ईव, मुमकिन है, हमारे आज के जीवन में महत्व न रखते हो परन्तु मिल्टन के शैतान का विद्रोह निश्चय एक जीवित परम्परा है, जिसमें हम सदा साँस ले सकते हैं। मिल्टन न केवल प्यूरिटन सम्प्रदाय का, वरन् विश्व साहित्य का एक महान् कृतिकार है ।

सैमुएल वटलर (सन् १६१२-१६८०)

सैमुएल वटलर प्यूरिटनवाद का सवसे वडा तात्कालीन प्रतिवादी है। जहाँ मिल्टन ने प्यूरिटनवाद को सुन्दरतम चित्रित किया वहाँ वटलर ने उसे अपने व्यग्यात्मक काव्य 'हूडीव्रास' में मिथ्यावाद का मूर्तिमान स्वरूप कहा। वटलर मिल्टन के प्यूरिटनवाद का इस प्रकार सवसे वडा प्रतिद्वन्द्वी हुआ। वटलर का यह 'भाण' वास्तव मे अपनी भणेती की नग्नता में मिल्टन की शालीनता का ठीक जवाव है। मिल्टन, कहते हैं, अपने जीवन-काल मे जनता में अप्रिय हो गया था यद्यपि इसके लिए विशेप प्रमाण नही मिलता। वस्तुत उसके जीवन-काल में ही उसकी कृतियाँ श्रद्धा से पढी गयी और १८वी सदी मे तो उसका अनुकरण भी काफी हुआ। इसमे फिर भी सन्देह नही किया जा सकता कि मिल्टन की काव्यधारा क्लिष्ट थी और उसमें लेटिन और ग्रीक सन्दर्भो की भरमार है। 'लालेग्रो' और 'इल्पेन्सरेसो' उस शैली के सिद्ध प्रमाण हैं। मिल्टन की पद्धति के विरोधी कवियो ने 'हिरोइक कपलेट' का प्रयोग किया, जिसे कवि पोप ने विशेप महत्व देकर प्रसिद्ध किया ।

एडमन्ड वालेर (सन् १६०६-८७) सर जान डेनहम (सन् १६१५-६६)

इस हिरोइक पद्धति में भाषा के प्रवाह और सरलता को विशेष महत्व दिया गया। प्रसाद उसका विशेष गुण हुआ। इस प्रकार के छन्दपरक आन्दोलन का प्रथम प्रवर्तक एडमन्ड वालेर और सर जान डेनहम हुए। इनके आन्दोलन का परिणाम यह हुआ कि काव्य की विकृत और क्लिष्ट भाषा आशुगम्य और सहज बन गयी। विषय और उसकी अभिव्यक्ति दोनो में सरल समानता दृष्टिगोचर हुई। डेनहम की प्रसिद्ध कविता 'कूपर्स हिल' को जान ड्रायडन ने जो इतना सराहा वह उसके सहज प्रवाह के कारण ही।

जान ड्रायडन (सन् १६३१-१७००)

जान ड्रायडन—नाटककार, आलोचक और अनुवादक—स्वय इस पद्धति का प्रधान व्याख्याता था। सुन्दर प्रभावशाली वाक्यावली से अलकृत, सुष्ठु, सरल कविता लिखना उसकी कला का अन्तरग गुण था। ड्रायडन ने अपनी कृतियो द्वारा बडी कीर्ति कमाई है यद्यपि अग्रेज जाति ने उसे इतना महत्व न दिया। समकालीन घटनाओ को अपनी कविता में मूर्त कर ड्रायडन ने काव्य-क्षेत्र में उस काल का एक नया प्रयोग किया। उसका 'एनस मिराबिलिस' डच-युद्ध और लन्दन के अग्नि-सहार का काव्य-रूप है। शैफ्ट्सबरी के षड्यन्त्रो और मन्मथ की कृतघ्नता ने उसके 'एबसालोम एण्ड एचिटोफेल' मे अपनी व्यग्यात्मक अभिव्यक्ति पायी। इसी प्रकार उसकी अन्य कविताएँ भी समकालीन राजनीतिक और धार्मिक प्रवृत्तियो की पोषक हैं। ड्रायडन ने वर्जिल, जुवेनल, ओविद और चासर के अनुवाद किये। उसने गद्य का भी रूप निखारा। फेबुल्स की भूमिका में जिस गद्य का उसने प्रयोग किया वह उस क्षेत्र मे अनुपम है।

एलेग्जेंडर पोप (सन् १६८८-१७४४)

एलेग्ज़ेन्डर पोप अग्रेजी-साहित्य का सबसे बडा व्यग्य-कवि है। व्यग्य को उसने अपनी कला से आलोकित कर एक विशिष्ट रस के रूप मे प्रस्तुत किया। उसके आलोचको ने उसे अनेक प्रकार से जाँचा है परन्तु अधिकतर उसपर चोटें ही पडी हैं। उसके व्यग्य को साधारणत लोगो ने अन्यायनिष्ठ माना है। जो भी हो, इसमें सन्देह नही कि पोप कलाकार था। अग्रेजी भाषा में उसका स्थान 'क्लासिकल कवि' के सन्निकट है। उसके दृष्टिविस्तार की निश्चित कुछ सीमाएँ हैं। पोप में सेवा और त्याग की भावना मिल्टन की ही भाति प्रबल थी। 'एस्से ऑन मैन' में उसने पद्य में अपने अध्यात्म का रूप रखा। परन्तु निश्चय आध्यात्मिक साहित्य में उसके दृष्टिकोण की विशेषता नहीं। उसका महत्व साहित्य में व्यग्य कृति उत्पन्न करने में है। 'द रेप आफ द लाक' में उसने १८वी सदी के समाज का जो चित्र खीचा है, वह व्यग्य के रूप में बडे महत्व का है। 'डन्सियाड' मे उसने प्रमाद और निष्क्रियता का बुरी तरह मजाक

उडाया है और समसामयिक मूर्खो का जो रूप उसने उसमें प्रस्तुत किया है वह नितान्त हास्यास्पद है। उसकी अपेक्षाकृत छोटी कृतियां तो और भी सुन्दर हैं। 'दि एपिस्टल टु डाक्टर आर्बुथनौट' इस दिशा मे सुन्दर दृष्टान्त के रूप में रखा जा सकता है। स्पोरस अथवा लार्ड हर्वी के व्यग्य-चित्र अत्यन्त आकर्षक हैं। ऐडिसन पर उसकी चोट भी इसमें काफी गहरी है।

पोप ने व्यग्यात्मक काव्य के अतिरिक्त दूसरी कविताएँ भी लिखी हैं जिनमें होमर के अनुवाद के अतिरिक्त 'पेस्टोरल्स' और 'विन्डजर फारेस्ट' महत्व की हैं। होमर की कृति का उसका अनुवाद तो काफी पढा गया है यद्यपि उसकी अनुवाद-शैली की आलोचको ने कटु आलोचना भी की है। अनुवाद में जो उसने अलकरण की वहुलता उपस्थित कर दी है उससे उसके प्रति आलोचना की कटुता भी वढ गई है। उसकी रूमानी प्रवृत्ति का विशेषत 'एलोयसा टु एबेलार्ड' और 'एलिजी टु दि मेमरी आफ ऐन अनफारचुनेट लेडी' में होता है।

सैमुएल जान्सन गोल्डस्मिथ

एलेग्जैन्डर पोप ने अपने परवर्ती काल के साहित्य पर कुछ कम प्रभाव न डाला। उसके अनुयायियो में विशिष्ट सैमुएल जान्सन और आलिवर गोल्डस्मिथ हुए। यद्यपि अपनी कला में दोनो उससे काफी भिन्न हैं। सैमुएल जॉन्सन ने अधिकतर गद्य ही लिखा यद्यपि उसके दो व्यग्य 'लन्दन' (सन् १७३८) और 'डिवेनिटी आव् ह्यूमन विशेज़' (सन् १७४९) उसकी व्यग्यात्मक शक्ति को प्रचुरता से प्रदर्शित करते हैं। गोल्डस्मिथ के काव्य पर एक सामाजिक छाप है। 'ट्रैवेलर' (सन् १७६४) और 'डेजर्टेड विलेज' (सन् १७७०) में गोल्डस्मिथ ने इग्लैंड और आयरलैंड की सामाजिक और आर्थिक कुरीतियो का चित्रण किया है। पोप से कही वढकर समसामयिक सामाजिक स्थिति को समझने और व्यक्त करने की उसमें शक्ति थी। उसकी शैली चासर की कला के अनुकूल थी, और उसकी अभिव्यक्ति मे भावो का सम्मिश्रण असाधारण हुआ।

जेम्स टामसन (सन् १७००-४८)

पोप और उसके अनुयायियो ने अपनी कृतियो पर समकालीन समाज की छाप डाली। १८वी सदी के कवियो की एक विशेषता प्रकृति-पर्यवेक्षण की रही है। जेम्स टामसन (१७००-४८) इस प्रकार का सम्भवत पहला कवि है जिसने प्रकृति का आमूल वर्णन किया। 'सिक्स सीज़न' नाम की उसकी कृति ऋतुओ का चित्रण करता है जो कालिदास के 'ऋतुसहार' की भाँति प्रकृति सम्बन्धा स्वतन्त्र काव्य है, यद्यपि दोनो की प्राकृतिक सम्वेदना में न केवल मात्रा का वल्कि गुण का भी अन्तर है। सीज़न नाम की यह कविता वड़ी लोकप्रिय हुई। यह है भी वडी सरल। प्राय १०० वर्ष तक इग्लैंड के कविता-पाठको पर उसका अधिकार वना रहा। साधारण जीवन, गरीवी आदि के

प्रति उसकी गहरी सहानुभूति उसकी विशेष लोकप्रियता का कारण हुई। इसी कारण जो लोग पोप की प्रतिभा के समक्ष नही टिक पाते थे उन्होने भी टामसन की सादगी को सराहा। थी भी प्रकृति-अकन की उसकी कला सर्वथा मौलिक जो प्रकृति के प्रति लोगो की बढती हुई अभिरुचि को समृद्ध करती गई।

विलियम काउपर (सन् १७३१-१८००)

तब के इग्लैड में एक नयी मानवता का उदय हो रहा था। व्यवसाय ने एक धनी और सन्तुष्ट वर्ग उत्पन्न कर दिया था जो मनुष्य के प्रति दया और सहानुभूति की प्रेरणाओ से आकृष्ट हुआ और यद्यपि उसने अपने स्वार्थ के अर्जन में कभी कमी न की, अपनी अभिरुचि की उसने परिधि निश्चय बढा दी। मानव-चित्त में एक प्रकार का विद्रोह उदित हो रहा था और उसका सम्बन्ध निरन्तर बढते हुए जनान्दोलनो से होता जा रहा था। व्यापार, जो निरन्तर समाज को धनी और कगाल के दो स्पष्ट भागों में विभक्त करता जा रहा था, मानवता के प्रति इस नयी सहानुभूति का विशेष कारण बना। अनेक साहित्यकारो ने उस काल की परस्पर विरोधी तथा मानवता-प्रेरित प्रवृत्तियो का अपनी कृतियो में अकन किया। विलियम काउपर (१७३१-१८००) ने अपनी कृति 'जानगिल्पिन' में इसी प्रकार की प्रवृत्तियो और अनुभूतियो का प्रदर्शन किया। काउपर के 'लेटर्स' अग्रेजी भाषा के सर्वोत्तम नमूने हैं। उसकी सर्वोत्कृष्ट रचना 'टास्क' है जिसमें कवि नगरो से दूर देहात की दुनिया में घूमता है और बडे सहज भाव से गाँव के दृश्य प्रस्तुत करता है। इस काल के कवियों ने तर्कवाद के विरोध में बहुत कुछ लिखा। परन्तु कुछ को इसी कारण तर्कवाद और न्याय-सम्मत जीवन के लोप का भी अन्देशा हो आया। काउपर भी उन्ही में था और उसने अपनी सशक्त कविता 'कास्ट अवे' में अपने उसी भय का मूर्तन किया।

टामस ग्रे (१७१६-७१)

इस भय ने १८वी सदी के कृतित्व को काफी कलुषित भी कर दिया। फलत एक अद्भुत कष्टकर कायिक चेतना कवियो के एक वर्ग में हुई। विषाद की एक विचित्र अनुभूति का उन्होने अनेकत अकन किया। विषाद प्रेरित काव्य 'एलेजी' का इसी कारण अनेकत अकन उदय हुआ। बहुत कुछ तो हिन्दी के आधुनिक छायावाद की भाँति विषादमय कविता लिखना उस काल का 'फैशन' हो गया था परन्तु, चाहे रीति वत् ही क्यो न हो, कुछ कवियो का तो इसने जीवन ही अपनी शक्ति से प्रभावित कर दिया। इनमें 'एलेजी' का रचयिता टामस ग्रे (१७१६-७१) विशेष प्रसिद्ध हुआ होरेस वालपोल के साथ अपनी तरुणावस्था मे ग्रे ने यूरोप के समृद्ध और सुखी जीवन का काफा अनभव किया था। परन्तु १८वी सदी के केम्ब्रिज के उसके पिछले जीवन ने उसे शिथिल कर दिया। विषाद की एक लहर जैसे उसके रोम-रोम में बहकर भि

गयी जिसने उसकी कृतित्व-शक्ति शिथिल कर दी। अपने समय के यूरोप के प्रसिद्ध विद्वानो में टामस ग्रे भी एक था। उसने अपनी कविताओ में नयी रुचियो का समावेश किया। उसके 'डिसेन्ट आफ ओडिन' में नार्वे आदि उत्तरी प्रदेशो के प्रति सकेत है और 'बाट' में मध्यकालीन जीवन के प्रति। विषादपूर्ण 'एलेजी' सम्बन्धी साहित्य अग्रेजी में काफी बढ चला जिसमें कब्रिस्तानो, खडहरो, फैले सुनसान मैदानो का वर्णन महत्व का समझा गया।

विलियम कालेन्स (१७२१-५६)

विलियम कालेन्स (१७२१-५६) तो अपने विषाद के वितरण में ग्रे से भी बढ गया। कालेन्स अपने जीवित वातावरण से अनभिज्ञ हो यह उसकी 'हाउ स्लीप दि ब्रेव' से तो नही लगता परन्तु निश्चय उसकी प्रवृत्ति प्राय. स्वप्निल थी। उसकी कविताओ—'ओड ऑन दि पापुलर सुपर्स्टिशन्ज आफ दि हाई लैन्डस', 'ओड टु ईवनिंग' और 'डर्ज इन सिम्बेलीन'—में विषाद की छाया जैसे शब्द-शब्द को अपने भार से बोझिल कर रही है। साधारणत उसकी कला बोझिल है परन्तु जब कभी वह सरल हो पाता है तब जैसे उसका स्वर मधुर गुनगुनाहट से अद्भुत आकर्षण धारण कर लेता है।

क्रिस्टोफर स्मार्ट (१७२२-७१)

विलियम काउपर के ज़माने से ही कविता के क्षेत्र में असाधारण रुग्णता का प्रारम्भ हो गया था। क्रिस्टोफर स्मार्ट ने तो इस काव्यगत रुग्णता की पराकाष्ठा कर दी। उसका नितान्त विकृत और बदनाम जीवन पागलखाने में ही जाकर सुस्थिर हुआ। वहा उसने दीवारो पर चारकोल से अपना 'सॉग टु डेविड' लिखा। रोसेटी और ब्राउनिंग ने उस गीत को बेहद सराहा है।

विलियम ब्लेक (१७५७-१८२७)

ज़माने के भौतिकवाद ने कुछ कवियो को जैसे विक्षिप्त कर दिया। अनेको ने अपनी साधना उस भौतिकवाद के विरोध में प्रयुक्त की। अर्थवाद दिन-दिन ज़ोर पकडता जा रहा था और कवि, जब वे उसका आन्दोलन के रूप में प्रतिवाद न कर सके तब, स्वप्निल और अन्तर्मुख हो गये, निरन्तर इलहाम-सा उन्हें होने लगा और वे रहस्यमयी प्रेरणा से अपना उद्बोधन करने लगे। विलियम ब्लेक (१७५७-१८२७) ने तो जैसे फरिश्तो और दूसरी अपार्थिव मूर्तियो को स्पष्ट देखा, जैसे वे मूर्तिया उसे घेर कर मित्रो के समुदाय की भाति बगीचो में बैठने लगी। इस प्रकार के स्वप्नो ने उसे दुनिया से पृथक् कर दिया। उसके आलोचको का कहना है कि उसने मानव आत्मा को भौतिकता की दासता से मुक्त कर दिया और जीवन को नेक और बद के परे श्वेताकार जलती हुई शक्ति के रूप में देखा। नि सन्देह ब्लेक रहस्यवादी था। उसकी

कृतियो पर स्विडनवोर्ग की गहरी छाप है। अपनी इस नयी चेतना में काव्य की परम्परा से ब्लेक इतना दूर हो गया है कि उसने अपनी नयी रहस्यमयी भाषा, अपने नये प्रतीक, अपना नयी शब्दावली वना ली है जो पाठक को उलझन में डाल देती है। यदि कविता का कोई स्वरूप ब्लेक ने प्रस्तुत किया है तो वह केवल 'साग्स आफ इनोसेन्स एण्ड एक्सपीरियन्स' और 'एवरलास्टिग गास्पेल' आदि में देखा जा सकता है।

राबर्ट बर्न्स (१७५६-६६)

रावर्ट वर्न्स (१७५६-६६) भी इसी काल हुआ। उसने वडे सुन्दर व्यग्य लिखे जिससे उसका प्रवेश एडिनवरा के शिष्ट समाज में हो गया। वह अशिक्षित किसान कवि कहा जाता है, परन्तु कुछ ही दिनो वाद राजधानी के आसव-सिंचित जीवन ने उसे अकर्मण्य वना डाला। उसे फासीसी राज्यक्राति का शिशु भी कहा गया है। परन्तु उसके ये दोनो विरुद प्रश्नात्मक हैं। वह पोप, टामसन ग्रे, शेक्सपियर सवको पढ चुका था और शिष्ट अग्रेज कवि की भाति लिखता था। साथ ही उसकी सुन्दरतम कृतिया फ्रेंच-क्राति के पहले ही लिखी जा चुकी थी। उसने धर्म की कृत्रिमता के प्रति विद्रोह किया और मनुष्य-मनुष्य का भेद उमे असह्य हो उठा। 'जाली वेगर्स' में उसने इस भेद पर प्रवल कुठाराघात किया। 'टैम ओ' शैन्टर' भी इसी प्रकार की एक सशक्त कृति है। इसी कारण वह चर्च से विरक्त होकर पानशालाओ की ओर आकृष्ट हुआ यद्यपि इस आकर्षण ने उसके चित्त को सयत न रहने दिया।

जार्ज क्रेब (१७५४-१८३२)

कविता का रूप अब तक वदल चुका था। फिर भी जार्ज क्रेब के-से कुछ लोग पोप की ओर जव-तव झुक पडते थे। जिस 'कपलेट' का पोप और जान्सन ने प्रयोग किया था, क्रेव (१७५४-१८३२) ने भी उसका प्रयोग किया। उसकी कविताओ के विषय साधारणत देहाती जीवन के थे। उसने रूमानी माया को अपने पास फटकने न दिया। 'दि विलेज', 'दि पैरिश रजिस्टर' और 'टेल्स इन वर्स' उसकी प्रभूत आकर्षक कृतिया हैं। उसकी काफी कटु आलोचना हुई परन्तु रूमानी आलोचको ने वस्तुत उसके ऋद्ध यथार्थवाद को न पहचाना।

: ४ :

रोमांचक काव्य

टामस चेटरटन (१७५२-७०)

टामस चेटरटन (१७५२-७०) ने मध्यकालीन काव्यधारा का अनुकरण करते हुए उस अद्भुत रस का कविता में सचार किया जो कालान्तर में रोमाचक काव्य का आधार वन गया। चेटरटन नितान्त अल्पायु में मरा, केवल १८ वर्ष की आयु में और

वह भी सामान्य मृत्यु से नही आत्महत्या द्वारा। चेटरटन निस्सन्देह मनस्वी और मेधावी था और यदि वह जीता तो शायद बहुत कुछ कर सकता, परन्तु उसके भावावेगो ने उसे अकाल ही उठा लिया। उसकी इस अकाल-मृत्यु ने आलोचको में उसके सम्भावित भावी जीवन के सम्बन्ध में आशा और निराशा दोनो की प्रवृत्ति जनी है परन्तु उनके प्रति समभाव होकर भी कम से कम हम उसे रोमान्टिक कवियो की परम्परा का दूरस्थ प्रवर्तक मान सकते हैं।

× × ×

१६वी सदी मे अंग्रेज़ी कविता में उस नयी धारा की अभिसृष्टि हुई जो साधारणत रोमान्टिक (रूमानी, रोमाचक) कही जाती है और जिसने भारत की भाषाओ के अनेक कवियो को भी समय पाकर प्रभावित किया। रोमान्टिक शैली के कवियो की प्रकृति के प्रति वडी सहानुभूति थी। जीवन के ऊपर प्रकृति का प्रभाव वे प्राय आध्यात्मिक मानते थे। उद्योगवाद और उद्योगशील नगरो से आतकित होकर जैसे वे रक्षा के लिए प्रकृति की ओर वढे। प्राचीन धार्मिक परम्पराओ की जडता से भी ऊबकर अध्यात्म की नई दिशा, एक नई अनुभूति की ओर वे वढ चले। स्पेन्सर, मिल्टन और पोप की दुनिया वाहरी थी, इनकी स्वय इनके आवेगो में विखरी अथवा कसी। वर्डस्वर्थ, वायरन, कोलरिज, स्काट, शैली और कीट्स रोमान्टिक शैली के प्रमुख कवि हैं।

वर्डस्वर्थ (१७७०-१८५०)

विलियम वर्डस्वर्थ (१७७०-१८५०) रोमान्टिक कवियो में सवसे महान् है। उसका जीवन भी काफी लम्वा था, ८० वर्ष का। यद्यपि मृत्यु से प्राय ३५ वर्ष पहले ही उसकी कवित्व-शक्ति का निधन हो गया। अपने प्रारम्भिक वातावरण में अकृत्रिम मानव ने उसे आकृष्ट किया। रूसी की विचारधारा ने मानवता के प्रति उसकी आशाओ को सशक्त किया। फ्रान्सीसी राज्यक्रान्ति को उसने मनुष्य की स्वतन्त्रता के जनक के रूप मे स्वीकार किया। और इग्लैंड की फ्रास के विरुद्ध युद्ध-घोपणा का उसने सवल प्रतिवाद किया। परन्तु जव नेपोलियन की महत्वाकाक्षा शार्लमेन का अनुकरण कर चली तव उसे वडा क्षोभ हुआ। वर्क के प्रभाव से उसने भी धीरे-धीरे इग्लैंड की राजनीति का रुख स्वीकार कर लिया और शीघ्र वह घोर प्रतिक्रियावादी वन गया। इन क्रियाओ-प्रतिक्रियाओ से पृथक् वर्डस्वर्थ प्रधानत प्रकृति का कवि है। पिछले काल के प्रकृति-प्रेमी कवियो ने उसका अनुकरण भी प्रचुर मात्रा मे किया है। वर्डस्वर्थ की प्रारम्भिक ख्याति उसके 'लिरिकल वैलेड्स' के प्रकाशन से हुई। इस सग्रह में उसकी अपनी कविताओ के अतिरिक्त कोलरिज का 'एन्शेन्ट मैरिनर' भी प्रकाशित हुआ परन्तु जहाँ वर्डस्वर्थ ने सादे देहाती जीवन की घटनाओ का मूर्तन किया, वहाँ कोलरिज ने विचित्रता की उपासना की। 'लिरिकल वैलेड्स' (१७६८) के पहले ही 'प्रिल्यूड' का

प्रकाशन १८५० में ही हो चुका था। 'प्रिल्यूड' आधुनिक अंग्रेज़ी साहित्य की सबसे महान् कविता मानी जाती है, जिसमे मानव-चित्त की एकानुभूति असाधारण रीति से चित्रित हुई। 'लिरिकल बैलेड्स' के बाद वर्डस्वर्थ ने कविता के सानेट का ही उपयोग किया। 'ओड टु इम्मोरटेलिटी' मे उस कवि ने जन्मपूर्व के जीवन का एक रहस्यमय अकन किया। 'कैरेक्टर आफ द हैपी वारियर' में उसने अपने भाई और नेल्सन के कर्मठ जीवन की सम्पृष्टि की और 'ओड टु ड्यूटी' मे वह फिर 'क्लासिकल' अनुभूति की ओर आकृष्ट हुआ। 'लाओडेमिया' भी उसकी एक असामान्य 'क्लासिकल' कृति है। प्रकृति के साथ उसकी घनी सहानुभूति थी और आलोचको का विचार है कि काव्यालेखन में उसे उस दिशा से बडी प्रेरणा मिली। सम्भव है कि प्रकृति-चेतना का उसे आभास मात्र रहा हो परन्तु इसमें सन्देह नही कि उसने मनुष्य की प्रकृति की अनजानी गहराइयो तक पैठकर अनुभूति की समृद्धि खोजी और पाई। उसकी अपील परिपक्व चेतना के प्रति है।

एस० टी० कोलरिज (१७७२-१८३४)

एस० टी० कोलरिज (१७७२-१८३४) वर्डस्वर्थ का मित्र था, अभिन्न मित्र, और दोनो पर एक दूसरे का प्रभाव गहरा पडा। वर्डस्वर्थ की प्रकृति सयत, धीर और तपस्यापूर्ण थी। उसने काव्य के क्षेत्र में जो खोजा वह पाया। कोलरिज इसके विपरीत सर्वगामी था। इसीसे उसकी बुद्धि एकाकी न हो सकी। कहते हैं, अफीम के प्रति उसकी अदम्य तृष्णा भी उसमें एकनिष्ठा के अभाव का कारण हुई। यद्यपि अफीम का उपयोग उसने उस रोग के निवारणार्थ किया जो आमरण उसे जकडे रहा। अपने मित्रो और पत्नी तक के प्रति उसका भाव उपेक्षा का था, अनुत्तरदायी, यद्यपि उससे मिलने वाला विरला ही उसके व्यक्तित्व के सम्मोहन और शब्दो के चमत्काकार के जादू से बच पाता था।

कोलरिज केवल कवि ही न था, आलोचक और दार्शनिक भी था। उसने दर्शन, धर्म, विज्ञान और राजनीति का समन्वित स्वप्न भी देखा। उसकी 'बायोग्रेफिया लिटरेरिया' में कला की आधुनिक दार्शनिक आलोचना के बीज मिलते हैं। कोलरिज की कल्पना में स्मृति और स्वप्न का अद्भुत सयोग था। उसके काल्पनिक ससार में अद्भुत पक्षियो, अनूठे जहाजो, अनोख समुद्रो का भी स्थान था। अपार्थिव मूर्तिया, अपार्थिव सगीत, अपार्थिव रूपरेखाएँ अद्भुत रूप से जीवित-सी होकर उसके कल्पना-क्षेत्र में विचरण करती थी। 'एन्शन्ट मेरिनर' उसके इसी स्वप्न का सत्य है। 'कुबलाखाँ' भी इसी परम्परा में एक अबीसीनियन कुमारी का जादूभरा सगीत है। कवि जीवन के तन्तुओ को तोडकर अज्ञात, परन्तु जीवित स्वप्न-देश में पहुँच जाता है।

सर वाल्टर स्काट (१७७१-१८३२)

सर वाल्टर स्काट (१७७१-१८३२) की गणना भी रोमान्टिक प्रवृत्ति के

कवियो मे की जाती है। स्काट अंग्रेज़ी के प्रारम्भिक उपन्यासकारो मे है और उसका साहित्य में अधिकार विशेषत उपन्यास-रचना पर माना जाता है। परन्तु काव्य के क्षेत्र में भी उसने काफी ख्याति प्राप्त की, यद्यपि उसका काव्य-क्षेत्र औपन्यासिक विशेषताओ से भरा है। उसकी कविता में भी उपन्यास की ही भाति मध्यकालीन सघर्षमय जीवन के आलोक मिलते हैं। मध्यकालीन बैलेड और 'रोमान्स' उसकी कविताओ में सजग हैं। इस प्रकार की उसकी कविताओ का आरम्भ 'दि ले आफ दि लास्ट मिन्स्ट्रेल' (१८०५) से होता है। 'मारमियन' (१८०८) और 'दि लेडी आफ दि लेक' (१८१०) इसी परम्परा की कविताएँ हैं। उपन्यासो में सफल हो जाने से उसकी निष्ठा काव्य-रचना में कम हो गई, फिर भी भावो के आवेग, करुण रस का आर्द्रता, वीर और रौद्र रसो के पारिपाक और अतीत के चमत्कारी वर्णन मे स्काट अनोखा है।

लार्ड बायरन (१७८८-१८२४)

लार्ड बायरन (१७८८-१८२४) रोमान्टिक कवियो मे अपना विशेष स्थान रखता है। बायरन का व्यक्तित्व उसकी कविताओ से कही महान् माना गया है। यद्यपि ऐसा कहने से उसकी कवित्व-शक्ति की उपेक्षा भी हो गयी है, फिर भी यह सच है कि बायरन का महान् व्यक्तित्व केवल काव्य-शक्ति तक ही सीमित न था और अनेक बार वह राजनीति के क्षेत्र में भी आकार धारण कर लेता था। यूरोपीय जनता ने तो अधिकतर उसे उसकी स्वातन्त्र्य-प्रियता से जाना। उसने ग्रीक-आज़ादी के लिए जो कुछ किया, वह सब का जाना हुआ है। बायरन महान् था, व्यक्तित्व मे, आज़ादी की उपासना मे, प्रणय की रुग्णता में, काव्य की प्रौढता में। आरम्भ में उसने जो 'आवर्स आफ आइडलनेस' लिखा तो आलोचको और कवियो ने उसे धिक्कारा। इस पर दबना तो दूर रहा, उस महाकवि ने उनका उत्तर 'इंग्लिश बार्डस एण्ड स्काच रिव्युअर्स' (१८०९) नामक अत्यन्त प्रखर चुभने वाली व्यंग्यात्मक कविता से दिया। बायरन अत्यन्त सुन्दर था, कुछ लगडा, और घोर प्रणयी, दुसाध्य कामुक। कहते हैं कि एक बार जब एक प्रणयिनी से वह पहलेपहल मिला, तब उसका प्रभाव उस नारी पर ऐसा पडा कि उसे देखते ही नारी ने अपनी डायरी निकाली और उसमे लिखा—'मैड, बैड एण्ड डेन्जरस' (पागल, बद और खतरनाक)। बायरन 'लार्ड' वर्ग का था। लन्दन की बैठको का वह 'विजयी नेपोलियन' माना जाता है, यद्यपि प्रणय के क्षेत्र मे उसकी यह विजय इग्लैंड तक ही सीमित न रही। यूरोप के कान्टिनेन्ट पर भी उसका विस्तार हुआ, और इटली, विशेषकर वेनिस में तो उसने भयानक कामुकता का जीवन बिताया। काउन्टेस गिचोली से उसका सम्बन्ध इटली के स्वप्न-जगत का रहस्य बन गया है। वैसे स्वय इग्लैंड में बायरन की कामुकता का व्यापार कुछ कम सजग न था और स्वय उसकी अर्धभगिनी के साथ जो उसका प्रणय-सम्बन्ध बताया जाता है, वह सर्वथा

निराधार न था। रोमाचक प्रवृत्तियो और भावावेगों से उन्मत्त, बायरन की तेजस्विता इग्लैंड में राजनीति के क्षेत्र में विशेप व्यक्त न हो पायी क्योकि रोमाचकता उसकी राजनीति पर छा गयी थी। एक बार नाटिंघम के श्रमिको के प्राणदण्ड के विरुद्ध जो उसने लार्डसभा में व्याख्यान दिया, वह अद्भुत शक्ति का था और कुछ लोगो ने आशा भी बाधी कि एक दिन बायरन इग्लैंड के राजनीजिक क्षेत्र का नेतृत्व करेगा परन्तु उनकी कामना सफल न हुई।

बायरन पर्यटक था। उसने अनेक लम्बी यात्राएँ की और उन यात्राओ में जो रोमाचक साहसिकता का पुट था, उसने उससे अँग्रेज पाठको को घर बैठे विदेशो से साक्षात् कराया। 'गियोर' (१८१३) में उसने अपनी पीढी की अभिरुचि को अभिव्यक्त किया। इससे उसकी ख्याति फ्रास से रूस तक फैली। 'गियोर' से भी अधिक विख्यात 'चाइल्ड हेरोल्ड'(१८१२-१८)हुआ, जिसमें उसने लुके-छिपे अपना ही परिचय दिया। इसके पिछले सर्गो में वर्णन-व्याख्या प्रधान है। नगर, खण्डहर, फैले मैदान बायरन के तीव्र वर्णन से पाठक के सामने मूर्तिमान हो आते हैं। इन सबकी पृष्ठभूमि रोमाचक है, जो एक अनोखी शालीनता का सृजन करती है। उसने कुछ सचेतक कारुणिक कथाए भी अपने 'मैनफ्रेड' और 'केन' जैसी कृतियो में सिरजी परन्तु वस्तुत उसकी ख्याति काव्य के क्षेत्र में व्यग्यात्मक रचना 'बेप्पो' (१८१८), 'दि विजन आफ जजमेन्ट' (१८२२) और 'डान जुआन' (१८१९-२४) पर प्रतिष्ठित हुई। 'डान जुआन' तो निश्चय अँग्रेजी भाषा की महत्तम कविताओ में है। इसमें जीवन की विषमताएँ, कारुणिकता, साहस, आवेग सभी कुछ सजीव हो उठे हैं। व्यग्य उसके चित्र-चित्र से बोलता है, जीवन शब्द-शब्द से चूता है।

शेली (१७९२-१८२२)

शेली (१७९२-१८२२) और कीट्स (१७९५-१८२१) इसी अँग्रेजी रोमाण्टिक शैली के कवि है। पी० बी० शेली प्रखर रोमाचक बायरन के विपरीत उस परम्परा का सबसे बडा आदर्शवादी है। उसके आदर्शवाद पर कुछ आलोचको ने असन्तोष प्रकट किया है और उसे ब्लेक की श्रेणी में रखा है। नि:सन्देह शेली ब्लेक की ही भाति द्रष्टा है परन्तु वह उससे कही बढकर कवि है। आरम्भ से ही शेली को सघर्ष करना पडा था, पहले पिता के विरुद्ध, फिर अपने आचार्यो के विरुद्ध। आक्सफोर्ड में जो उसने अपने अनीश्वरवादी सिद्धान्तो से आचार्यों को चुनौती दी, तो उसे विश्वविद्यालय छोडना पडा। हैरियट के साथ उसका विवाह भी अत्यन्त कष्टकर सिद्ध हुआ और इन कटु अनुभवो ने उसकी प्रकृति को सर्वथा अक्खड बना दिया। उसने अपनी पत्नी को त्याग दिया और पत्नी ने आत्महत्या कर ली। उसके बाद उसने मेरी गोडविन से विवाह किया, जिसके साथ उसने अपने जीवन का बडा भाग स्विटजरलैंड और इटली में

बिताया, जहाँ स्पेजिया की खाडी में तूफान से उसकी मृत्यु हुई। जिसके जीवन में इतनी घटनायें घटें, इतनी तिक्त अनभूतियाँ भरी हो, उसका द्रष्टा हो जाना कुछ अजब नही, विशेषकर जब उसमें कृतित्व की इतनी महान् शक्ति हो, जितनी शेली में थी। शेली ने जीवन को केवल देखा, उसकी कटु अनुभूतियो को सहा ही नही, उसने उन्हे बदल भी देना चाहा। आशावादी द्रष्टा की भाँति उसने कहा कि यदि अत्याचार दूर कर दिया जाय, क्रूरता और अनाचार का लोप हो जाय, द्वेष और शक्ति के ताडव ससार से उठा दिये जाएँ तो निस्सन्देह जीवन सुन्दर हो जाय और ससार वश्य। इसी सदेश को लेकर वह मानवता के सामने खडा हुआ। इसी सन्देश को लेकर वह 'क्वीन मैब' और 'रिवोल्ट आफ इस्लाम' के साथ कार्यक्षेत्र में उतरा। लेकिन उसकी साधना की सिद्धि वस्तुत 'प्रमेथियस अनबाउण्ड' में हुई। इस गेय नाटिका मे उसने स्काइलस की 'ट्रेजेडी' को अपना माडल बनाया और जुपिटर द्वारा प्रमेथियस के चट्टान से बाँधे जाने की कथा लिखी। उसने इसमें मनुष्य को प्रेम की शक्ति से निरकुशता और अत्याचार का प्रतिरोध करने को ललकारा। आधुनिक अंग्रेज़ी-साहित्य मे 'प्रमेथियस अनबाउण्ड' का लिरिक तत्व अद्वितीय है। शेली की आलोचना भी तीव्र हुई है और इसमें कुछ तथ्य है कि उसमें विनोद की मात्रा बहुत कम है। साधारण जीवन से भी, उसके सघर्ष के बावजूद, उसका सम्बन्ध कम दीखता है। इस रूप में न तो वह चासर है, न शेक्सपियर, न मिल्टन। ससार से जैसे वह दूर है और उसकी भाव-प्रतिमाओ में वायु, सूखी पत्तियाँ, ध्वनियाँ, लहरें आदि रूप धारण करती हैं। अनेक बार तो ऐसा लगता है कि वह जीवित जगत से दूर के किसी आत्म-परिवार का परिचय दे रहा है। आज काव्य-पाठको के ससार पर उसकी पकड ढीली पड चली है, यद्यपि 'ओड टु दि स्काई लाक' आज भी पढा जाता है। कारण कि जीवन उसकी पकड से छूट चुका है।

जान कीट्स (१७९५-१८२१)

रोमाटिक परम्परा के विशिष्ट कवियो में जान कीट्स है। रोमांचकता का वह मूर्तिमान् स्वरूप था। इग्लेंड के महान् कवियो में वह सबसे अल्पायु में मरा, प्रायः २५ वर्ष की आयु में। वह रोमाटिक कवियो में सबसे पिछला था, सबसे पहले मरा। उसका पिता अस्तबल का रक्षक था। उसने उसे डाक्टर बनाने की प्रभूत चेष्टा की, यद्यपि बचपन से ही काव्य-प्रेम ने कीट्स को कविता के प्रति अनुरक्त कर दिया था। प्राचीन काव्यो से उसने कथाएँ ढूंढ निकाली और स्पेंसर तथा शेक्सपियर की कृतियो से शब्द की माया-शक्ति प्राप्त की। साथ ही एक्रोपोलिस से लायी एल्गिन की संगमरमर-प्रतिमाओ (एल्गिन मार्बल्स) और उसके मित्र हेडन के चित्रो ने उसे आलेखन की शक्ति प्रदान की। वैसे कविता के क्षेत्र में वह किसी का शिष्य न था, अपने आप उसने उस दिशा में सफलता पाई। उसके 'लेटर्स' उसके आलोचनात्मक विचारो के अद्भुत प्रमाण हैं यद्यपि साथ

ही वे फैनी ब्राउन के प्रति उसके असीम प्रेम का उद्घाटन करते हैं । इटली जाकर उसने अपने गिरते हुए स्वास्थ्य की रक्षा का असफल प्रयत्न किया परन्तु क्षय ने उसे विवश कर दिया और एक दिन वह दुनिया मे चल बसा ।

उसकी लम्बी कविता 'एन्डीमियन' (१८१८) उसी साल लिखी गयी, जिस साल यूरोप का महादार्शनिक हीगल मरा और महामना मार्क्स उत्पन्न हुआ । आलोचको ने 'एन्डीमियन' की या तो सक्रिय उपेक्षा की अथवा उसकी तीव्र आलोचना । यह सही है कि यह कविता अतिरंजित है परन्तु इसके अनेक स्थल उस सौन्दर्य के प्रतीक भी हैं जो मूर्तिकार और चित्रकार के समन्वित प्रयत्न शब्दाकन के आधार से प्रस्तुत कर सकते हैं । 'लामिया', 'इजाबेला' और 'ईव आफ सेन्टएग्नीज़' के द्वारा उसने काव्य-कथाएँ प्रस्तुत की जिनकी पृष्ठभूमि रगो के विस्तार में नितान्त ऋद्ध थी ।

कीट्स आवेगो का कवि था, सौदर्य का उपासक, उसकी प्रेरणा से समर्थ कवि । 'हाइपीरियन' नामक उसकी कविता यद्यपि अधूरी रह गई परन्तु उतने से ही प्रमाणित है कि यदि कीट्स ने उसे पूरा कर दिया होता तो वह दार्शनिक कवि के रूप में भी कितना महान् होता । धीरे-धीरे उसकी सम्वेदना अपने वातावरण से घनी हो चली थी और जहाँ शेली एक स्वप्न के देश में विचरने लगा था वहाँ कीट्स अपने वातावरण का घना स्पर्श पाने लगा था । 'हाइपीरियन' में पुरानी परम्परा के देवताओ के स्थान पर नित्य नये देवो की उठने वाली शृखला का प्रतिपादन है जो उसकी मिल्टन-वत् प्रगतिशीलता को एक मात्रा तक प्रकट करता है । यदि कीट्स कुछ काल और जी गया होता तो मानवता उसकी सक्रिय भावुकता के योग से निःसन्देह बलवती होती ।

: ५ :

टेनिसन से यीट्स तक

टेनिसन (१८०९ ९२)

१९वी सदी के कवि, जिनका आरम्भ कीट्स तथा अन्य रोमान्टिक कवियो के बाद हुआ, अधिकतर मलका विक्टोरिया के समकालीन थे । टेनिसन (१८०९-९२) शायद विक्टोरिया कालीन कवियो में सबसे महान् हुआ, यद्यपि उसके आलोचको ने उसके पराभव में कुछ उठा न रखा । शब्दो की शालीनता और ध्वनियो के उपयोग में तो वह अग्रेजी-साहित्य में बेजोड है । उसकी प्रारम्भिक गेय कविताए तो जैसे शब्दों के सुन्दरतम नमूने बुनती जाती हैं । हाँ, इतना ज़रूर है कि मौलिकता और गहराई में अपने पूर्ववर्ती रोमान्टिक कवियों की अपेक्षा वह काफी पीछे है । उसकी बडी कविताओ में लोगो ने शिथिलता का दोष पाया है, यद्यपि 'उलिसिज़' के सम्बन्ध में यह दोष सार्थक

नही। 'उलिसिज़' वीर-काव्य की आत्मा को रोमाञ्चकसजीवता से अनुप्राणित करता है।

परन्तु वस्तुत टेनिसन की प्रतिभा उसकी लिरिको और 'इनोन', 'दि ड्रीम आफ फेयर वुमन', 'दि प्लेस आफ आर्ट' आदि छोटी कविताओ मे है, यद्यपि उसकी महत्वाकाक्षा उमे इन तक ही सीमित न रख सकी। उसकी 'ईडिल्स' मे चित्रण और रूपको का प्रसार है परन्तु चासर या स्पेन्सर के सामने वह फीकी पड जाती हैं। टेनिसन ने आर्थर-सम्बन्धी कहानियो को विक्टोरिया-कालीन आचार से मढा परन्तु वह स्वय समसामयिक युग को पकड न सका। आखो के नीचे बहता जीवन उसके दृष्टिपथ से ओझल हो गया, और एक दूर की अनजानी स्वप्निल दुनिया उसकी नज़रो मे लहरा उठी। 'आइडिल्स' मे आर्थर-सम्बन्धी काव्य-कहानियो की ही भाति शब्दो की शालीनता है, कल्पना की रोमाञ्चकता है और अनजाने का अनोखापन है, परन्तु वह सारा जीवन से परे की दुनिया है, उसका लोक उस 'पोयट लारियट' का लोक है जो टेनी-सन था। 'इन मेमोरियम' का लोक निश्चय उसका अपना है, टेनिसन का, कवि का। और चूकि यह कवि की अपनी सच्ची कृति है अत उस युग की वह महान् कृति भी बन गयी है। उसमें उसने अपने मित्र आर्थर हैलम की मृत्यु का वर्णन किया है और उसके विचार जीवन-मरण तथा उनके बाद की दुनिया का स्पर्श करते हैं। सावधि जगत का विज्ञानवाद उसे जैसे डरा देता है और वह बालक की भाँति भगवान् की सरक्षा का वरदान माँगता है। 'इन मेमोरियम' निस्सन्देह अकृत्रिम कृति है।

टेनिसन काफी पढा गया है, उसका अनुकरण भी काफी हुआ है, इसी से यह भी प्रत्यक्ष है कि उसके अनेक आलोचक हुए। उसने काव्य के क्षेत्र में प्रगति करते हुए अपनी आखें स्वदेश के औद्योगीकरण की ओर से मीच ली। इसी कारण उसकी कविता भी मैथ्यू आर्नल्ड के शब्दो में 'जीवन की व्याख्या' न बन सकी। इस खतरे से जैसे भयभीत होकर वह अपनी अन्य कविताओ—'लाक्सले हाल', 'दि प्रिन्सेस' और 'माड'—में वास्तविक जीवन के स्तर पर उतर आता है।

राबर्ट ब्राउनिंग (१८१२-८९)

जिन नैतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक समस्याओ का टेनिसन ने स्पर्श-मात्र किया, राबर्ट ब्राउनिंग (१८१२-८९) के लिए वे प्रधान प्रेरणाएँ बन गयी। राबर्ट ब्राउनिंग को अधिकतर दार्शनिक कवि मानते हैं। साहस और शक्ति उसके शब्द-शब्द से टपकती है परन्तु यह सब उसके उस दर्शन से सम्बन्ध रखता है जिसमें वह निर्भी-कता पूर्वक मृत्यु से लडता है अथवा मृत्यु के भय का सफल सामना करता है। इसी कारण उसकी कविता में जीवन के प्रति बडा विश्वास बन पड़ा है। आशावादी जीवन स्पष्टत निराशा पर व्यग्य करता है।

ब्राउनिंग ने कविताएँ तो लिखी ही, उसने ड्रामे के भी कुछ प्रयोग किये। उसने ड्रामे का प्रयोग विना उसके रगमचीय अभिनय के विचारो के किया। उसमें उसका दर्शनमात्र प्रतिविम्बित था, जैसा कि 'पैरासोल्सस' (१८३५) या 'पिप्पा पासेज़' (१८४१) से प्रकट है। इन नाटको में गति केवल मानव-कर्मो की शृखला से प्रस्तुत होती है, उसके लिए अनेक चरित्रो की पारस्परिक प्रतिक्रियाएँ उतना अर्थ न रखती थी जितना एक ही व्यक्ति के आन्तरिक द्वन्द्व। इसी कारण उसने एक प्रकार के एक-पात्रीय वक्तव्य वाली नाटकीयता की नीव डाली। इसी रूप मे उसके विशेषत जाने हुए नाटक 'एन्ड्रीयाडेल सार्टो,' 'फ्रालिपो लिपी', 'साल', और 'दि विशप आर्डर्स हिज़ टूम्ब' आदि प्रस्तुत हुए। इनका प्रकाशन जिल्दो की एक शृखला में 'ड्रामेटिक लिरिक्स' (१८४२),'मेन एण्ड विमेन' (१८५५) और 'ड्रामेटिस्ट पर्सेनी'(१८६४) में सग्रहीत हुए। और इन्होंने राबर्ट ब्राउनिग को जो यश प्रदान किया वह टेनिसन को छोडकर और किसी को १९वी सदी के उत्तरार्ध मे न मिला।

इसी परम्परा में प्रस्तुत उसकी 'दि रिंग एण्ड दि बुक' (१८६८-६९) है, जिसमें एक पात्रीय नाटकीयता का तन्तु अग्रेज़ी साहित्य की सबसे लम्बी कविताओ में से एक प्रस्तुत करती है। इसमें ब्राउनिंग ने एक इटालियन अपराध-कहानी का काव्य-रूप में वितन्वन किया है और उसी सूत्र से उसने अपने रहस्यमय काव्य-दर्शन का अकन किया है। उसकी कविताएं प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तियो से भरी हैं और इटली का पुनर्जीवन-काल जैसे ब्राउनिग के पृष्ठो मे एक बार फिर जी उठता है। ब्राउनिग के साहस और निर्भीकता के वावजूद उसका प्रयास डान क्विक्ज़ोट का-सा है। दर्शन के माध्यम से घूमने वाले उसके चरित्र जैसे एक कल्पित ससार में घूमते हैं और किसी प्रकार भी उनको स्वतन्त्र नही कहा जा सकता। लगता है, जैसे उसके नर-नारी पात्र किसी तानाशाही दुनिया के जीव हैं, जिनका तानाशाह ब्राउनिग स्वय है।

एलिजाबेथ बार्नेट (१८०६-६१)

राबर्ट ब्राउनिग के साथ अग्रेज़ी-साहित्य की प्रसिद्ध कवियित्री एलिज़ाबेथ वार्नेट (१८०६–६१) का नाम सम्बन्धित है। एलिजाबेथ निस्सन्देह ब्राउनिग के सम्पर्क में विशेष चमकी परन्तु निश्चय काव्य के क्षेत्र में उसका अपना स्थान है और उसकी कविताएँ, 'सानेट्स फ्राम दि पोर्चुगीज़' और 'आरोश ले', जो उसने ब्राउनिग से सम्बन्ध के पहले लिखी थी, इस दिशा में ज्वलन्त प्रमाण हैं। ब्राउनिग एलिज़ाबेथ को लेकर इग्लैंड से बाहर कान्टिनेन्ट भाग गया था और उसके अनुयायियो पर उसका यह आचरण रोमाटिक हीरो के रूप में अपनी छाप छोड गया।

मैथ्यू आर्नल्ड (१८२२-८८)

१९वी सदी के उत्तरार्ध में मैथ्यू आर्नल्ड, फित्सजेराल्ड, रोसेटी स्विनबर्न, मारिस, क्रिस्टिना रोसेटी, पैटमोर, टामसन आदि हैं। मैथ्यू आर्नल्ड (१८२२-८८) जो

आलोचक के रूप में विशेष प्रसिद्ध हैं, कविता के क्षेत्र में भी काफी जाना हुआ है। उसकी कविताएँ—'एम्पिडाक्लीज़ ऑन एटना', 'दि फोरसेकन मरमैन,' 'थेरसिस', 'दि स्कालर जिप्सी' और 'डोवर बीच'—काफी प्रसिद्ध हैं। अपनी कृतियो मे, विशेषकर गद्य की, उसने मानव-जीवन की समस्याओ पर विचार किया। उसकी 'सोहराव और रुस्तम' की-सी लम्बी कविता काफी लोकप्रिय है। परन्तु निस्सन्देह मैथ्यू आर्नल्ड का वास्तविक स्थान आलोचना के क्षेत्र में है।

एडवर्ड फित्सजेराल्ड (१८०९-८३)

एडवर्ड फित्सजेराल्ड (१८०९-८३) अत्यन्त प्रमादी था और स्वतन्त्र कविताएँ भी उसने कुछ वहुत नही लिखी परन्तु फारसी कवि उमर खय्याम की अमर रूवाइयो का जो 'दि रूवाइयात आफ उमर ख़य्याम' के नाम से १८५९ मे उसने प्रकाशित की, वह अनूदित साहित्य के क्षेत्र मे एक आलोक-स्तम्भ है। कहते हैं, फित्सजेराल्ड ने अनुवाद को मूल से सुन्दरतर बना दिया है। इस एक सफल अनुवाद ने उसे हजार स्वतन्त्र कृतियो के कवि-सा साहित्य में प्रतिष्ठित कर दिया और वह १९ वी सदी के पिछले दशको मे साहित्य के प्रधान व्यक्तियो में से माना गया है।

डी० जी० रोसेटी (१८२८-८२)

फित्सजेराल्ड को खोजने का श्रेय डी० जी० रोसेटी को है। रोसेटी का स्थान विक्टोरिया-काल के साहित्य में बहुत ऊचा है। वह इटली के एक राजनीतिक शरणार्थी का बेटा था। विक्टोरिया-काल का साहित्यकार होकर भी उसने साहित्य से दार्शनिक, राजनीतिक और धार्मिक प्रसगो को अलग रखा। वह निरा कलाकार था। वैसे भी वह पहले चित्रकार रह चुका था, जहाँ उसने परम्परा की शृखला को तोडकर स्वतन्त्रता और सत्य का अन्वेषण किया था। उसका चित्त प्रतीकवादी और कल्पना-प्रधान था, जिससे उसकी कविता में भी यथार्थ के विरुद्ध चित्रो का प्राधान्य हो गया है, यद्यपि उसके सिद्धान्तो में यथार्थता का अभाव नही। चित्त के इस सघर्ष का उदाहरण स्पष्ट रूप से उसके 'दि ब्लेसेड डेमोज़ेल' में मिलता है, जिसमें काव्य-विस्तार और प्रसग रहस्यवादी है परन्तु अन्तिम लक्ष्य शृगारिक है, प्राय यौन, काय-प्रधान। उसकी नितान्त पार्थिव कृतियो में सर्वत्र प्रतीको की छाया है जो उसके साहित्य पर घुधले जल-प्रवाह, मलिन ज्योत्स्ना और जब-तब प्रभूत चित्रो के साथ अवतरित होती है। उसके लिरिको और बैलेडो का यही वातावरण है। यही उसके प्रकाशनो—'पोयम्स' (१८७०) और 'बैलेड्स' तथा 'सानेट्स' (१८८१)—में प्रतिबिम्बित है। दि हाउस आफ लाइफ' उसकी प्रसिद्ध कृति है, जिसमें रहस्य और यौन का अद्भुत सम्मिश्रण है। दांते और उसके समवर्ती साहित्यकारो का जो रोसेटी ने अनुवाद किया तो वस्तुत. वह स्वय उनके गहरे प्रभाव से वचित न रह सका। रोसेटी के आकर्षक व्यक्तित्व ने

अनेक प्रतिभाशाली तरुणो को आकृष्ट किया।

स्विनवर्न (१८३७-१९०९)

इन तरुणो में स्विनवर्न (१८३७-१९०९) अपनी कविता और उसके नग्न प्रणय-निवेदन से शीघ्र प्रसिद्ध हो गया। एलजरनोन चार्ल्स स्विनवर्न पहले इटन और आक्सफोर्ड का विद्यार्थी था, जहाँ उसने अपनी जीवन-सम्बन्धी चुनौतियो द्वारा काफी हलचल पैदा की और जब १८६६ में वह साहित्य के क्षेत्र मे अपनी 'पोयम्स एण्ड वैलेड्स' लेकर उतरा, तब तो विक्टोरिया-कालीन काव्य मे उसके भाव-विद्रोही प्रणय-बहुल नग्न चित्रणो ने उथलपुथल मचा दी। एक वासना की लहर-सी नये काव्य-क्षेत्र में बह गयी, जिसको विक्टोरिया-कालीन काव्य-क्षेत्र मे सहन करने की ताव न थी। एक प्रकार से वह कीट्स की भावनाओ को उनके ग्रीक आधारो से पुनरुज्जीवित कर रहा था। उसके लिरिको ने एक प्रकार से ड्रामा और कोरी कविता के क्षेत्र में विप्लव मचा दिया। उसकी कृतियो में विशेष 'इटिनस', 'एटलान्टा इन कैलीडन' (१८६५) और 'इरेक्थियस' (१८७६) विशेष प्रसिद्ध हैं। स्विनवर्न ने कविताए और नाटक फिर-फिर लिखे परन्तु उसके कृतित्व की शक्ति उनमें इतनी प्रकट न हो सकी जितनी उसकी प्रारम्भिक कृतियो में हुई थी। कारण यह था कि उसकी वासना-चेतना स्वाभाविक ही कायिक शक्तियो से सम्बद्ध थी और अपनी तरुण आयु में उनका 'डोलोरिस', 'लाउस वेनेरिस,' 'फास्टाइन' आदि में वह अकृत्रिम अश्रृखलित रूप प्रस्तुत कर सका। शर्म और परहेज उसकी राह में कही नही अटके।

विलियम मारिस (१८३४-९६)

विलियम मारिस (१८३४-९६) भी रोसेटी के ही भावो से प्रभावित था। काव्य के क्षेत्र में वह शिल्प के क्षेत्र से प्रादुर्भूत हुआ। उसने शिल्प की चेतना काव्य की सृष्टि में डाली। और अपने जीवन-काल की उस परिस्थिति को वह न भुला सका जहाँ तीव्र उत्पादन और अमित लाभ का राज है। 'दि डिफेन्स आफ गिनिवियर' (१८५८) के चित्र कल्पना-प्रधान होकर भी जीवन से ओतप्रोत हैं। उनमें शक्ति और वजन है। 'दि अर्थली पैराडाइज' में उसने लम्बी कविता को चासर की भाति कथालेखन का आधार बनाया परन्तु उसमें न तो चासर की सचेष्ट मानवता है, न उसका भाषाधिकार और न शक्तिशाली चरित्र-चित्रण। धीरे-धीरे समसामयिक जीवन की परुषता ने उसे कल्पना के अकृत्रिम क्षेत्र को छोडने पर बाध्य किया। उसकी कृतियों में विशेषत 'सिगुर्ड दि वोलसग', 'ए ड्रीम आफ जान बाल', 'न्यूज फ्राम नोह्वेयर', 'दि वेल एट दि वर्ल्ड्स एण्ड' विशेष प्रसिद्ध हुई।

क्रिस्टिना रोसेटी कावेन्ट्री पैटमूर . फ्रान्सिस टामसन

क्रिस्टिना रोसेटी (१८३०-९४) यद्यपि प्रसिद्ध रोसेटी की ही बहिन थी, परन्तु

उसका जीवन भाई के जीवन के बिल्कुल विपरीत था, नितान्त धार्मिक। 'गॉबलिन मार्केट' में उसने सुन्दर काव्य-चित्रण किया। कावेन्ट्री पैटमूर (१८२३-६६) ने इसी काल 'दि एँजिल इन दि हाउस' नाम के काव्य मे एक उपन्यास ही रच डाला, जिसमे उसने कविता को रोजमर्रा के जीवन का वाना पहिनाया। उसने 'दअननोन इरोस' द्वारा पेचीदा विचारो को काव्य के रूप में प्रस्तुत किया और कैथलिक कवि के रूप मे इसी अपनी जटिल रहस्यमय विचारधारा के कारण विशेप प्रसिद्ध हुआ। फान्सिस टामसन (१८५६-१६०७) भी कैथोलिक कवि ही था और उसने भी काफी लोकप्रियता हासिल की। गरीवी और कष्ट के जीवन को उसने अपनी कविता मे प्रतिविम्बित किया। 'दि हाउण्ड आफ हेवेन' उसकी जानी हुई कृति है।

जार्ज मेरेडिथ (१८२८-१६०६)

१६वी सदी के पिछले दशको में उपन्यास-साहित्य काव्य-साहित्य के उपर उठ गया। कई साहित्यकारो ने पहले काव्य के माध्यम से साहित्य-क्षेत्र मे जीवन आरम्भ किया परन्तु शीघ्र वे उपन्यासकार हो गये और उपन्यासकार के रूप में ही वे विशेप प्रसिद्ध हुए। इनमे टामस हार्डी (१८४०-१६२८) और जार्ज मेरेडिथ (१८२८-१६०६) विशेष उल्लेखनीय हैं। जार्ज मेरेडिथ ने अपनी प्रारम्भिक काव्य-कृति 'लव इन दि वैली' द्वारा अच्छा नाम कमाया। उसकी कविताओ और उपन्यासो में स्वभावत. ही अनेक वार एकरूपता का दर्शन होता है। उसने उपन्यासो की ही भाँति कविताओ में भी दर्शन की चेतना मूर्त की। सदाचार और वनस्पति-शास्त्र के आँकडो को एकत्रकर उसने 'पोयम्स एण्ड लिरिक्स आफ दि जोय आफ अर्थ' लिखा, जिसमें उसने दिखाया कि पृथ्वी मनुष्य को अपनी वन्य प्रकृति दवा रखने में उसकी सहायता नही करती। पशुता और भावावेग दोनो मनुष्य को दवाये रखने में एकत्र प्रयत्न करते हैं। मेरेडिथ की कविताओ में मनुष्य की कमजोरियो का वार-वार चित्रण हुआ है। काव्य-रूप में उसकी कृतियाँ कठिन हैं यद्यपि उनकी भाव-चेतना स्वस्थ और सवल है।

टामस हार्डी (१८४०-१६२८)

टामस हार्डी प्रारव्धवादी था। नर-नारी के कारुणिक प्रसग उसके उपन्यासो और कविताओ, दोनो में क्रूर प्रारव्ध-चालित रूप में उपस्थित होते हैं, जिनका निराकरण वह कभी नही करता। अपनी लघु लिरिको में वह परिस्थितियो से मजबूर क्रूरता की चपेटो से विह्वल नर-नारियो को प्रारव्ध-द्वारा नीयमान् अन्धो की भाति खिंचे जाते चित्रित करता है। जिस सक्षिप्तता और शव्द-लाघव द्वारा हार्डी इन चित्रो को उपस्थित करता है, वह वैयक्तिक काव्य-कला की एक विजय है। अपनी उपन्यास-श्रृखला के वाद उसने नेपोलियन के युद्धो के आधार पर 'दि डाइनेस्ट्स (१६०४-८) नाम का एक वीर-काव्यात्मक नाटक भी लिखा। उसका नाटक रगमच के योग्य तो न हुआ परन्तु चित्त के रगमच पर अनेक आलोचको को वह विशेप मफल जँचा।

टी० ई० लारेंस

टी० ई० लारेन्स ने १६०६ ई० में 'दि डान इन ब्रिटेन' नामक लम्बी कविता के कुछ भाग प्रकाशित किये। यह कविता उस काल की काव्यधारा के नितान्त विपरीत थी। निस्सन्देह रोमान्टिक कवियो की रूमानी चेतना उसमें नही परन्तु उसकी इस कृति में सभ्यता के प्रारम्भिक दिनो के मानव-प्रयास के जो चित्र प्रस्तुत हुए हैं, अपनी नग्न सामर्थ्य में वे निश्चय असाधारण हैं। इस प्रकार की दूसरी कविता 'दि टेस्टामेन्ट आफ ब्यूटी' (१६२६) रावर्ट ब्रिचेज ने लिखी, जो प्रारम्भ में बडी लोकप्रिय हुई। इस दार्शनिक कविता में ब्रिचेज ने बुद्धि और सौन्दर्य की परिभाषा की।

आस्कर वाइल्ड अर्नेस्ट डाउसन लायोनल जान्सन हाउसमन

२०वी सदी का आरम्भ अंग्रेजी-साहित्य में एक नये युग के रूप में आया। यह सही है कि १६वी सदी के पिछले युगो के अनेक कवियो ने अपनी पुरानी निष्ठा किसी न किसी रूप में जीवित रखी परन्तु निस्सन्देह उनका युग अब समाप्त हो चुका था। रोमान्टिक परम्परा को समाप्त कर उसके स्थान पर कवियो के एक नये दल ने नये लिरिको की रचना की, जिनका स्वर विषाद और करुणा का था और उनकी गेयता में आकर्षक सौन्दर्य था। उन्होने अपनी कविताओ से सदाचार और दर्शन की विक्टोरिया-कालीन समस्याओ को बाहर कर दिया और हल्की-फुल्की पक्तियों में अपने चित्त और प्रणय की अनुभूतियो को मूर्त किया। आस्कर वाइल्ड, जिसका नाम काफी बदनाम हो गया है, इन्ही में था। यद्यपि काव्य के क्षेत्र में वह अपेक्षाकृत प्राय अनजाना है, परतु नाटक-क्षेत्र मे निश्चय ही वह विशेष विख्यात हुआ। अर्नेस्ट डाउसन आस्कर वाइल्ड से अपनी कविता के गेय तत्व में कही अधिक ऋद्ध है। काव्य के प्राचीन प्रतीको का वह नये सिरे से प्रयोग करता है। जान्सन के लिरिको में एक प्रकार के गम्भीर सौन्दर्य का मूर्तन हुआ है। कैम्ब्रिज में लेटिन का प्रोफेसर ए० ई० हाउसमन इन कवियों से जीवन में भिन्न होकर भी चित्त से बहुत कुछ इन्ही का-सा है। 'श्रोपशायर लैंड' (१८६६) और 'लास्ट पोयम्स' (१६२२) द्वारा उसे इस दिशा में प्रचुर ख्याति मिली है। उसने पुराने शब्दो के नये प्रयोग किये और आवेगो के मूर्तन तथा उनकी अभिव्यक्ति में प्रयुक्त भाषा तो निश्चय शब्द-रूप में स्वीकार्य है। प्रकृति के प्रति उसकी भावनाएँ भी सबल-सहज तीव्रता प्रस्तुत करती हैं। हाउसमन आवेगो का कवि है।

जार्जियन पोयट्स

जार्ज पचम के नाम से जिस काव्यधारा का बोध होता है, वह उस राजा की समसामयिकता मात्र से सम्बन्ध रखता है, कुछ उसके कृतित्व से नही। उसके राज्यकाल के लिरिक कवियों के एक दल को 'जार्जियन पोयट्स' कहते हैं। इधर के आलोचना-क्षेत्र में उन पर गहरा आघात हुआ है। उनको आलोचको ने गाम्भीर्य-हीन, अति समसाम-

यिक मान है। आलोचको का कहना है कि उन्होने घने से घने आवेगो का सुन्दर पद्य-रचना के लिए प्रयोग कर उनके साथ अन्याय किया है। रूपंट ब्रूक, जिसने १९१४ में स्वदेश-प्रियता, कर्तव्यनिष्ठा और आदर्शवाद पर कुछ सानेट प्रकाशित किये, इन आलोचको के रोष का केन्द्र बन गया। ब्रूक ने युद्ध में मृत्यु वीर-दर्प का आधार माना। वाल्टर डिलामेयर शब्द का जादूगर माना जाता है, जिसने शब्दो की चेतना में एक नयी रहस्य-मयी ससृष्टि की। उस काल के प्रधान कवियो मे जेम्स एलराय फ्लेकर का नाम उल्लेख-नीय है। वह फ्रेंच और फारसी पढा हुआ था, जिससे उसने अपनी लिरिको की ध्वनि में उन भाषाओ के मधुर पद्य का योग दिया। इन कवियो के विरुद्ध जो विशेष आलो-चना हुई, उसका स्वर यह था कि कविता में आज के जीवन का योग होना चाहिए। जान मेसफील्ड ने इसी विचारधारा से प्रभावित होकर अपने प्रारम्भिक सागर-सम्बन्धी लिरिको को छोड मानव कहानियो की कष्ट-चेतना को अपनाया। 'दि एवरलास्टिंग मर्सी' और 'दि डेफोडिल फील्ड्स' इस प्रवृत्ति के प्रमाण हैं। मेसफील्ड ने उन यथार्थ-वादी प्रसगो को फिर से ग्रहण किया जो उपेक्षित हो गये थे। इस काल के अन्य कवियो ने तो अपने इस विद्रोह को और भी जटिल रूप से प्रकट किया। जेरार्ड मैनली हाप-किन्स उन्ही में से है और यद्यपि वह १८८९ में मर चुका था, १९१८ मे उसकी रचना प्रकाशित हुई। वह जेसुइट कवि था और उसने धार्मिक धाराओ का मूर्तन किया परन्तु पद्य-रचना और विचार दोनो से उसकी मौलिकता प्रमाणित है। उसने कविता की ध्वनि में शब्द और व्याकरण दोनो को दबा दिया है। उसकी काव्य-शैली का अनेक वाद के कवियो ने अनुकरण किया। विलफ्रिड ओवेन की युद्ध-सम्बन्धी कविताओ पर हापकिन्स का काफी प्रभाव पडा, यद्यपि वह एक पीढी पहले मर चुका था।

टी० एस० एलियट

वीसवी सदी के विशिष्ट अंग्रेज़ी कवियो में एलियट और यीट्स हैं। एलियट ने पद्य और गद्य दोनो लिखा है और दोनो में उसने प्रभूत ख्याति पाई है। उसकी प्रारम्भिक कविताओ का सग्रह १९१७ में 'फ्रूफ राक' के नाम से निकला था। ये कविताएँ व्यग्य-पूर्ण और नाटकीय थी, जिन्होने तत्कालीन सभ्यता पर गहरी व्यग्यात्मक चोटें की। एलि-यट की साधना बुद्धि और प्रतीकवादी है। उसकी कृति 'दि वेस्ट लैण्ड' का काफी आदर हुआ है। इसमें उसने प्रथम महासमर के बाद के यूरोप का जीवन प्रतिबिम्बित किया है। 'दि वेस्ट लैण्ड' द्वारा उसने यह प्रकट किया है कि आज की सभ्यता का एक अनन्त अतीत तो अवश्य है परन्तु न कोई उसका भविष्य है, और न विश्वास, न आदर्श, न निष्ठा। विश्वास तो वह अनिवार्य आवश्यकता मानता है। अपने 'मर्डर इन दि कैथेड्रल' नामक पद्य-नाटक में उसने इसका विशेष निरूपण किया है। इसकी पद्य-रचना भी सरल है और इसका तथ्य आधुनिक जीवन का स्पर्श करता है। एलियट का प्रभाव देश-विदेश के

नवोदित कवियो पर काफी पडा, यद्यपि आज की सघर्षमयी परिस्थितिया उन्हे उसकी ओर से विमुख कर चली हैं।

यीट्स (१८६५-१९३९)

यीट्स एलियट का समीपवर्ती होकर भी उम्र में काफी बडा था और १९३९ मे उसका देहान्त हो गया। उसके जीवन में दो पीढियो का काव्य सिरजा गया। स्वय उसने उन दोनो काल की प्रवृत्तियो का अनुसरण किया। यीट्स की शुरू की कविताओ में अलकार और माधुर्य अधिक है और वह उनकी पृष्ठभूमि अपने देश आयरलैंड की प्रकृति से प्रस्तुत करता है। उस काल की रचनाओ में वह सर्वथा 'रोमान्टिक' है। 'दि लेक आइल आफ इनिसफ्री' उसकी काफी ताजी रचना है। बदलते हुए जमाने और काव्य के रूप को उसने पकडा और इसी कारण वह जमाने की दौड मे पीछे न छूट सका। उसने अपनी बाद की रचनाओ में यद्यपि अतीत के विश्वासो और प्रतिमाओ को निखारा फिर भी उसकी कल्पना ने कुछ सुन्दर रचनाए प्रस्तुत की, जिनका सग्रह चार खडो में प्रकाशित हुआ—'दि वाइल्ड स्वान्स एट कूल', 'माइकेल राबर्टीज एण्ड दि डान्सर', 'दि टावर' और 'दि वाइन्डिग स्टेयर'। यीट्स ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'गीताजलि' का अनुवाद कर उन्हे पाश्चात्य पाठको और आलोचको के सम्मुख पहली बार रखा।

: ६ :

अंग्रेज़ी के अमरीकन कवि

यहाँ अमरीकी साहित्य पर भी एक नज़र डाल लेना अनुचित न होगा। वहाँ भी अट्ठारहवी सदी से पूर्व ही साहित्य-निर्माण शुरू हो गया था। प्रारम्भिक काल में ऐन ब्रैडस्ट्रीट, बेन्जेमिन टाम्सन, एडवर्ड टेलर आदि ने अच्छी कविताएँ लिखी। इनमें टेलर ने तो काफी ख्याति भी पाई। फिलिप-फ्रेनू पहला अमेरिकन कवि था जिसे शुद्ध साहित्यिक कहा जा सकता है। विलियम कलेन ब्रिया ने उस साहित्य में प्राण फूंके और एडगर एलेन पो (१८०९-४९) ने उस परम्परा को अपनी कविताओ से आगे बढाया। वह कला का सूक्ष्म समीक्षक था।

जेम्स रसेल लावेल (१८१९-१९०१) उस काल के समर्थ कवियो में था और लागफेलो (१८०७-१८८२) तो पूर्वात्य दर्शन से प्रभावित, अपनी ख्याति में शीघ्र अमेरिका की परिधि से बाहर पहुँच गया। वाशिगटन इरविन की भाँति उसने भी अपनी यूरोपीय यात्राओ द्वारा अनेक रोमांटिक ख्यातों की स्वदेश में बेल लगाई। इमर्सन (१८०३-८२) निबन्धकार तो महान् था ही, कवि भी असामान्य था और अपने सम-

कालीन तथा उत्तरकालीनो पर उसकी कृतियो ने बडा प्रभाव डाला। हेनरी थोरो भी इमर्सन की ही भाति कवि और निबन्धकार दोनो था। उसके सत्याग्रही दृष्टिकोण का महात्मा गाधी के विचारो पर बडा असर पडा। उसका जीवन-काल १८१७ से १८६२ है।

एमिली डिकिन्सन (१८३०-८६) ने अमरीकी काव्य-क्षेत्र में 'लिरिक' का प्रारम्भ किया। वाल्ट ह्विटमन (१८१६-६१) का नाम उस साहित्य में अमर हो गया है। मानवता के प्रति जितनी सहानुभूति उसकी है, उतनी किसी और की नही। उसने मनुष्य के लिए लिखा। वह महान् अन्तर्राष्ट्रीय चेतना का पुजारी था। जिसने ससार के पारस्परिक द्वन्द्वो से ऊपर उठकर उसकी एकता मे विश्वास किया। हरमान मेलविल भी गद्यकार और कवि दोनो था। 'मोबी डिक' से हटकर वह सर्वथा काव्य-क्षेत्र मे उतर आया। सिल, मूडी और क्रेन उसके समकालीन कवि थे।

कार्ल सैन्डवर्ग (१८७८-) आज भी जीवित है। उसने जीवन की अनेक स्थितियो का सामना किया और ह्विटमन की भाति 'सम्पादकीय' भी लिखे। उसकी कविताओ मे विविध दृश्यो, स्थितियो और प्रसगो का सगम है। राबिन्सन जेफर्स (१८८७-) ह्विटमन की परम्परा का कवि है। मास्टर्स (एडगर ली) अमेरिका के असामान्य भौतिक-औद्योगिक-नागरिक जीवन से वेहाल है। राबर्ट फ्रास्ट (१८७५-) अमरीकी साहित्य का शायद सबसे पुराना सेवी है, आज प्राय. ७७ वर्ष का। अनेक लोग उसे वर्डस्वर्थ से ऊँचा कवि मानते हैं। एडविन अर्लिंग्टन राबिन्सन (१८६६-१६३५) ने एक बार अपने आर्थर-सम्बन्धी काव्य द्वारा कविता-पाठको को आकृष्ट कर लिया था। ह्विटमन की भावुकता सैन्डवर्ग और मास्टर्स तक ही सीमित न रह लिन्डसे (१८७६-१६३१) और वेनेट (१८८६-) तक पहुँची, केनेथ फियरिंग (१६०२-) और मुरिएल रुकेसर तक। पिछले दोनो जन-कवि हैं, रुकेसर तो वर्ग-सघर्ष का कवि है। डाल्टन ट्रबो इस दिशा में इन सारे कवियो से अधिक प्रगतिशील है पर आज वह शान्ति का नाम लेने के कारण कठघरे के पीछे है।

एज्रा पाउण्ड (१८८५-), एलियट (१८८८-), स्टाइन (१८७४-१६४६), वालेस स्टीवेन्स (१८७६-) और ई० ई० कमिंग्स (१८६४-) के साथ अमरीकी काव्य क्षेत्र मे एक नये युग का आरम्भ होता है। पाउण्ड शक्तिम शैलीकार कवि है परन्तु प्रतिक्रियावादी और जब तब अन्तर्मुख भी। उसकी शैली दुरूह है। उसका सम्पर्क इटली के फासिज्म से माना गया था। एलियट का उल्लेख अन्यत्र किया जा चुका है। अब वह इग्लैंड में बस-सा गया है। एलियट की कविता का प्रभाव अमेरिका और इग्लैंड दोनो के कवियो पर पडा है। नारी कवियो में गर्ट्रूड स्टाइन, एडना मिले, एलिनर विली और लुइज़ी बोगन ने इधर काफी ख्याति पाई है। मिस मिले ने फासिस्त-विरोधी कविताए काफी लिखी। मिसेज विली और बोगन अपार्थिव का अनुसन्धान करती हैं।

मिसेज़ डोरोथी नारमन की कविता में रहस्य का पुट है और वैसे ही मिसेज़ रूथ स्टेफान की कविता में भी।

कमिंग्स अमेरिका के प्रधान कवियो में से है परन्तु पादरी की शिक्षा पाने तथा एजरा पाउण्ड के प्रारम्भिक सम्बन्ध ने उसे भी प्रगतिशीलता का विरोधी बना दिया है। पर कवि वह समर्थ है। कविता की सूक्ष्मता और शैली की दुरूहता में रैन्जम और स्टिवेन्स पाउण्ड की भाँति ही प्रसिद्ध हैं। मैकलीश और क्रेन ने कुछ सुन्दर लिरिक लिखे हैं। क्रेन की ही परम्परा में आज के जेम्स अगी, शैपिरो, रोएयके, विशप, एवरहार्ट आदि हैं।

आज का अमरीकी साहित्य कुछ आलोचको की राय मे या तो रुग्ण है या अन्तर्मुख। जो भी हो, वहाँ अनेक साहित्यकार आज हैं जो पेन और ह्विटमन की परम्परा में हैं। इन प्रगतिशीलो में अग्रणी हैं एल्बर्ट माल्ट्ज, जान हावर्ड लासन, सैमुएल ओर्नित्स, रिंग लार्डनर, अल्वा बेसी और हावर्ड फास्ट।

: ७ :

नाट्य-साहित्य

इग्लैंड में रगमचीय खेलो का आरम्भ जूलियस सीजर की विजय के बाद रोमनो ने किया था। परन्तु उनके इग्लैंड छोडने के साथ ही उन खेलों का अन्त भी हो गया। आरम्भ में विदूषक, भाड, गायक आदि घूम-घूम कर, स्थान-स्थान, गाँव-गाँव जा-जा कर कुछ ऐसे प्रदर्शन करते रहे, जिनमें विविध चेष्टाओं, भाव-भगियो, गायन आदि में नाटक का बीज होता था। इन गायको में जो अभिनय के बीजतत्व के भी धनी थे, वे 'मिन्स्ट्रल' कहलाते थे। उनके प्रदर्शनो में भीड काफी इकट्ठी होती थी और यद्यपि चर्च बराबर इस प्रकार के प्रदर्शनों का विरोध करता था, उसके पादरियों को व्यक्तिगत रूप से इनमें दिलचस्पी थी। लुक-छिपकर वे बराबर इन प्रदर्शनो को देखते थे।

धर्म ने आरम्भ में निश्चय इस प्रकार के नाट्य-प्रदर्शनो का विरोध किया। परन्तु कालान्तर में वही रगमचीय अभिनयो का कुछ काल के लिए आधार बन गया। ईसा के जीवन की अनेक घटनाएँ धीरे-धीरे चर्च की इमारत में अभिनीत होने लगी जहाँ रगमच पर अथवा फैले मैदान में अभिनेता और दर्शक मिले-जुले रहते थे। यह अभिनय बहुत कुछ आज की हमारी 'रामलील' की भाँति होते थे। शीघ्र ही चर्च को पता चल गया कि धीरे-धीरे इन नाटको का अभिनय अथवा नाट्य तत्व धार्मिक प्रदर्शनो से बढ गया था। उसने उनका रुख फिर बदलना चाहा पर अब स्थिति उनके हाथ से बाहर निकल गई थी और तेरहवी-चौदहवी सदियो में अभिनय ने सर्वथा धर्मेतर लौकिक रूप धारण कर लिया। चर्च ने रगमच अपनी इमारतो से अलग कर दिया।

धार्मिक नाटको में पहले लेटिन भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करते थे। अब नाटक के लौकिक हो जाने से उसकी भाषा अंग्रेज़ी हो गयी। मध्यकालीन श्रेणियो और नागरिक सस्थाओ का नाटको के प्रदर्शन में विशेष हाथ हुआ। नाटको का अभिनय-क्षेत्र अब नितान्त विस्तृत हो गया। इन लौकिक नाटको में भी कथानक विशेषत धार्मिक ही हुआ करते थे यद्यपि उनके अन्तरग अनेक पारिवारिक दृश्यो से भरे होते थे। इन धार्मिक प्रदर्शनो के बाद उन नाटको की बारी आई जिन्हे 'मोरेलिटी प्लेज' कहते हैं। पन्द्रहवी सदी के पिछले दर्शको के इन नाटको में सदाचार का अभिनय होता था और आचार सम्बन्धी ही पाप-पुण्यात्मक पात्र-नाम इनकी रीढ थे। ये नाटक स्वाभाविक ही उद्देश्यपरक थे और आचारादर्श उनका लक्ष्य था। फिर भी उनमें यथार्थ और करुणा का प्रचुर समावेश था।

'मोरेलिटी' नाटको के अतिरिक्त कुछ ऐसी सक्षिप्त नाटिकाएँ भी थी जिन्हे 'इन्टरलूड' कहते थे। वे न तो मोरेलिटी नाटको की भाँति रूपक थी और न धार्मिक कथाएँ ही थी। उनका अभिनय अधिकतर ट्यूडर-काल के सामन्त परिवारो में होता था। उस काल की एक विशेष कृति, हेनरी मेडवाल की लिखी, 'फुलगिन्स ऐण्ड लुकरी' है। इस प्रकार की नाटिकाओ मे पहली बार सामयिक जनता का भाव-कोण प्रदर्शित हुआ। १५३३ ईस्वी में प्रकाशित हेउड का 'दि प्ले आव् दि वेदर' एक मनोरजक डायलाग प्रस्तुत करता है। इन इन्टरलूडो ने जनता का विशेष मनोरजन किया। प्रहसन और विनोद अधिकतर ग्राम्य होते थे और अभिनय प्रायः भोडे, फिर भी इन इन्टरलूडो का नाट्य-साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। इसके बाद ही प्राय एकाएक—कम मे कम मध्य की मजिलो को प्रत्यक्ष करना कठिन है—अग्रेजी के प्रसिद्ध नाटको का आविर्भाव हुआ और मार्लो तथा शेक्सपियर अपनी कृतियाँ लेकर साहित्य में उतरे।

कीड, मार्लो

मार्लो और शेक्सपियर के आविर्भाव के पहले क्लासिकल ड्रामा (ग्रीक और लेटिन) के अग्रेज़ी में कुछ प्रयोग हुए। जार्ज गैसक्वाइडनी, निकोलस उदाल आदि ने कामेडी और ट्रेजेडी में कुछ सराहनीय प्रयत्न किये। ग्रीक और लेटिन साहित्य का अध्ययन इग्लैड में विशेषत रिनेसान्स (पुनरुज्जीवन-काल) से ही आरम्भ हो गया था और इस दिशा में ग्रीक और पौराणिक कथाओ ने प्रचुर नाट्य-सामग्री माडल के रूप में अंग्रेज़ी नाट्यकारो के लिए प्रस्तुत कर दी। सेनेका के लेटिन व्याख्यानो ने भी इस दिशा में प्रशस्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। इस क्षेत्र में सेनेका के भावतत्व से अनुप्राणित १५६२ में सैकविल और टामस नार्टन की अग्रेज़ी कृति 'गोरबोडक' खेली गयी। उसका रूप चाहे लेटिन टामस हो परन्तु कथानक अग्रेज़ी था। 'गोरबोडक' वस्तुतः साधारण जनता के लिए नही दरबारियो, वकीलों और अन्य बुद्धिवादी पढ़ी-लिखी जनता के लिए लिखा गया

था और स्वाभाविक ही लोकप्रिय न हो सका। इस काल कुछ ऐतिहासिक नाटक लिखे गये जिनको आधार बनाकर शेक्सपियर ने भी अपने अनेक नाटक प्रस्तुत किये। यह सिद्ध हो गया कि स्थानीय और स्वदेशी कथानको से ही विशेषत नाटक जनसाधारण के हृदय में स्थान पा सकते हैं। इस दिशा में कीड और मार्लो ने विशेष प्रयत्न किये। टामस कीड (१५५७-९५) ने पहली बार अंग्रेजी जनता के लिए उचित नाटक और रगमच की रचना की। उसकी 'स्पेनिश ट्रेजेडी' मे सेनेका की पृष्ठभूमि किसी न किसी रूप में वर्तमान थी परन्तु फिर भी उसने उसे उस ट्रेजेडी का रूप दिया जो जनता की समझ से दूर न थी। दिन-रात षड्यन्त्रो के जगत् में रहने वाले लोगो का कीड के इस नाटक ने काफी मनोरजन किया। स्वय शेक्सपियर कीड की इस 'स्पेनिश ट्रैजेडी' से प्रभावित हुआ। क्रिस्टोफर मार्लो (१५६४-९३) केम्ब्रिज का तरुण नाटककार था। प्राय ३० वर्ष की आयु में नाटक के क्षेत्र में बहुत कुछ करके वह मर भी गया। परन्तु उसकी कृतियो ने अंग्रेजी नाट्य-साहित्य में एक विप्लव उपस्थित कर दिया। मार्लो का जीवन स्वय विद्रोहात्मक था और उस काल के राजनीतिक षड्यन्त्रों में भी, कहते हैं, उसका हाथ रहा था। उसकी चार महत्त्व की रचनाएँ ट्रेजेडी के रूप में १५८७ और १५९३ के बीच प्रस्तुत हुई। वे थी 'तेम्बरलेन दि ग्रेट' (दो भागो में), 'डाक्टर फास्ट्स,' 'दि ज्यू आफ माल्टा' और 'एडवर्ड द्वितीय'।

इनमें पहली रचना में तातार सरदार, तैमूर की क्रूरता और विजयो का निदर्शन है। डाक्टर फास्ट्स में मार्लो ने एक धार्मिक दार्शनिक भावना का व्यक्तिगत प्रकाशन किया जिसमें अन्तर्वृत्तियो का सघर्ष मुख्य था। 'दि ज्यू आफ माल्टा' में बाराबास नाम के एक यहूदी का चित्रण है जिसने ईसाइयो के अत्याचार का बदला अनाचार से दिया। एडवर्ड द्वितीय में उसी नाम के राजा के भावावेगों और कमजोरियो का वर्णन है। मार्लो ने मुक्त छन्द में एक नयी साहित्यिक चेतना अपने नाटको में रखी, जो न केवल साहित्य के दृष्टिकोण से क्रान्तिकारी थी बल्कि धार्मिक दृष्टिकोण से भी, क्योंकि उसने तेम्बरलेन के माध्यम से सारी अपार्थिव धार्मिकता को चुनौती देदी। पार्थिव जीवन, जैसे भौतिक को सत्य मान, अनिश्चित के अपने बन्ध तोड स्वतन्त्र हो गया। 'दि ज्यू आफ माल्टा' जरूर कुछ कमजोर है परन्तु 'एडवर्ड द्वितीय' 'तेम्बरलेन' और 'फास्ट्स' की ही भाँति सफल है। मार्लो ने अंग्रेजी ट्रैजेडी को मुक्त छन्द की शालीनता दी जो नाट्याकन में चिरप्रतिष्ठित हुई।

लिली (१५५४-१६०६)

कीड और मार्लो ने जिस प्रकार ट्रैजेडी को सुघडता दी उसी प्रकार जान लिली (१५५४-१६०६) और रावर्ट ग्रीक (१५६०-९२) ने कामेडी की रूपरेखा सँवारी। लिली के दर्शक दरबारी थे और उसके अभिनेता अधिकतर बच्चे। लिली की

अनेक नाट्य-रचनाएँ आज हमें उपलब्ध हैं, 'कैम्पसपी' 'सैफो एण्ड फाओ', 'गैलेफिया', 'एन्डिमिनियन', 'मिडास', 'मदर वौम्वी', 'लव्ज मेटामोरफोसिस' और 'दि वोमन इन दि मून'। इनमें अन्तिम नारी के ऊपर एक सुन्दर व्यंग्यात्मक पद्य-नाटक है। शेक्सपियर के शीघ्र ही अद्भुत कामेडी कृतियाँ रचने के कारण लिली अन्धकार में पड गया नही तो स्वय उसकी रचनाओ का कुछ कम महत्त्व न था।

रावर्ट ग्रीन

रावर्ट ग्रीन कवि, नाटककार, गद्य-लेखक आदि सभी कुछ था। उसने अपने कथानको में विविध सामाजिक दलो और भिन्न वौद्धिक मात्राओ के चरित्र एकत्र कर प्रस्तुत किये। वह भी प्रहसनकार (कामेडीकार) ही था और उसने काल्पनिक जगत् को समसामयिक ससार में ओतप्रोत कर अपनी कामेडियो में प्रदर्शित किया। उसकी विशिष्ट कृतियाँ 'फ्रायर वेकन एण्ड फ्रायर वन्के' और 'जेम्स चतुर्थ' हैं।

सोलहवी सदी के अन्त तक अंग्रेजी नाटक का रूप स्पष्टत. प्रतिष्ठित हो गया। अव उनका प्रदर्शन केवल राजकीय दरवार में ही न होकर जनता में भी होने लगा। यद्यपि नगरो के प्यूरिटन शासको का दृष्टिकोण उनके प्रति कठोर होने से उन्हे नगर के वाहर सरायों में ही खेलना पडता था। अभिनेताओ को भी उस काल वडी कठिनाइयाँ सहनी पडती थी क्योकि कानून उनके काम को जायज न मानता था और समाज भी उन्हे अधिकतर धूर्त्त और वदमाश ही समझता था। इसी कारण उन्हे रानी अथवा विशिष्ट सामन्तो के सरक्षण में उनके 'जनो' के रूप में रहना पडता था। रगमच भी आज के रगमच से भिन्न था, उसकी छत न थी, मच एक ऊँचा प्लेटफार्म था। पीछे की छत में एक अट्ट था जहाँ से विगुल वजाकर खेल का आरम्भ सूचित कर दिया जाता था। मच पर पर्दे न थे और उसे श्रोतागण तीन ओर से घेरे रहते थे। कीमती वस्त्र पात्रो के रूप और स्थिति को व्यक्त करते थे। मच के पीछे दोनो ओर एक-एक दरवाजा होता, जिससे पात्र आते-जाते थे।

: ८ :

शेक्सपियर से शेरिडन तक

शेक्सपियर (१५६४-१६१६)

जिस अंग्रेजी नाट्य-साहित्य ने ससार के साहित्य-क्षेत्र में अपना असाधारण स्थान वनाया उसका अनुपम स्रष्टा विलियम शेक्सपियर (१५६४-१६१६) था। शेक्सपियर स्ट्रेटफोर्ड का रहनेवाला अभिनेता और नाटककार दोनो था। उसके पहले भी इंग्लैंड में नाटककार हुए थे, परन्तु जिस रूप और मात्रा में उसने अपनी समकालीन जनता को आकृष्ट किया वैसा न कभी किसीने पहले किया था न पीछे किया। ससार के

नाटक-क्षेत्र पर उसने असाधारण प्रभाव डाला।

शेक्सपियर ने अपनी जनता के लिए लिखा, अंग्रेज नागरिको और अंग्रेजी राज-दरबार के लिए। भाषा, भाव-व्यजना, नाटकीय प्रभाव और चरित्र-चित्रण में वह लासानी है। उसने लिखा भी अमित मात्रा में, प्राय ३७ नाटक अपनी कविताओं के अतिरिक्त। इनमें कुछ ऐतिहासिक हैं, कुछ अनैतिहासिक, कुछ कामेडी (सुखान्त अथवा विनोद व्यग्य-युक्त नाटक), कुछ ट्रैजेडी (दुखान्त नाटक), कुछ रोमाटिक कामेडी और कुछ रोमाटिक ट्रैजेडी। अपने ऐतिहासिक नाटको के लिए उसने सामग्री इग्लैड और विदेशो के इतिहास से ली, रफाएल होलिशेड के 'क्रानिकल्स' और प्लूटार्च की 'जीवनियो' से।

शेक्सपियर के ऐतिहासिक नाटक हैं—'हेनरी दि सिक्स्थ' (तीन भाग का नाटक) 'रिचर्ड दि सेकण्ड और थर्ड', 'हेनरी दि फोर्थ' (दो भाग) और 'हेनरी दि फिफ्थ'। इनमें से अधिकतर उस महाकवि की प्रारम्भिक कृतियाँ हैं। इनमें रिचर्ड-सम्बन्धी नाटक ट्रैजेडी हैं। उसकी अनैतिहासिक कमेडियों की सख्या भी काफी है और उन्होंने नाटकीय सफलता असाधारण मात्रा में अर्जित की। 'लव्ज लेवर्स लास्ट', 'दि टू जेन्टिलमेन आव वेरोना,' 'दि कामेडी आव एरर्स,' 'दि टेमिग आव दि श्रू', 'ए मिडसमर नाइट्स ड्रीम', 'मच अडो एबाउट नार्थिग', 'ऐज यू लाइक इट,' 'ट्वेल्फ्थ नाइट,' 'दि मर्चेन्ट आव वेनिस', 'आल्ज वेल दैट एन्ड्स वेल,' 'ट्रायलस एण्ड क्रेसिडा'—सब नाटकीय जगत में विख्यात हैं और आज भी ससार के अभिनय-क्षेत्र पर छाए हुए हैं। इनमें 'ए मिडसमर नाइट्स ड्रीम' कामेडी के क्षेत्र में अपना सानी नही रखता। इन कामेडियो में 'प्लाट' का महत्व विशेष नही है। वस्तु के रूप में शेक्सपियर साधारण से साधारण स्थिति या घटना चुनता है परन्तु अपनी लेखनी के जादू से, शब्दावली से, चरित्र-चित्रण से, व्यग्यात्मक चोट से, उन्हे असामान्य, सर्वथा अपना बना देता है—एक नई दुनियाँ, पर जानी-देखी हुई दुनियाँ, जिसमें प्रणय और घृणा, क्रोध और दया, मिलन और विरह, ईर्ष्या और जलन, चाटुकारिता सभी अपने आवश्यक आवेशो के साथ अभिसृष्ट होते हैं और असाधारण शक्ति से हमें वशीभूत कर लेते हैं। समसामयिक ससार पर तो शेक्सपियर ने चोटें कीं ही, विगत ग्रीक जगत को भी, जो 'क्लासिकल' रूप में उस काल स्तुत्य हो गया था, उसने न छोडा—'ट्रायलस एड क्रेसिडा' में उसे भी व्यग्यात्मक बाणो से जर्जर कर दिया।

शेक्सपियर की महान् ट्रैजेडी-रचनाएँ 'हैमलेट,' 'ओथेलो,' 'मैकबेथ', 'किंग लियर', 'ऐण्टनी एण्ड क्लियोपेट्रा,' और 'कोरियोलेनस' हैं। ये सारे सत्रहवी सदी के पहले छ सालो में लिखे जा चुके थे। परन्तु केवल इन्ही तक उस महाकवि के दुखात्मक आवेगो का अकन सीमित नही है। वस्तुत 'रिचर्ड दि सेकण्ड' और 'थर्ड' के रूप में ही वह अशत ट्रैजेडी प्रस्तुत कर चुका था। जिस प्रकार उसने रोमाटिक कामेडियो की रचना की थी,

रोमाटिक ट्रैजेडियो का भी सृजन किया। उनका एक सुघड नमूना 'रोमियो एण्ड जूलियट' है। 'जूलियस सीज़र' में शेक्सपियर ने विगत रोमन इतिहास का ससार फिर से सिरजा और वह इतना सजीव कि उस प्रकार का कोई नाटक न पहले कभी लिखा जा सका था, न पीछे लिखा जा सका। इन ट्रैजेडियो में शेक्सपियर की कला ने अद्भुत शक्ति धारण कर ली है। 'हैमलेट' खून, आत्महत्या, विक्षेप की कहानी है परन्तु उसके पात्रो का चित्रण अद्भुत है और छन्द का व्यवहार असाधारण निपुण। 'हैमलेट' पुनर्जागरणकाल का प्लाट लेकर रगमच पर अवतरित होता है। पुनर्जागरणकाल की कला, ज्ञान, पापाचरण, शालीन वातावरण सभी कुछ उसके अन्तर्मुख, सयाने, करुण राजा के चतुर्दिक घूमते हैं। इसमें दृश्य जगत् की सक्रियता अन्तर्मेधा के चिन्तन से होड करती है। 'ओथेलो' प्रणय-सकट, ईर्ष्या और भावावरोध की करुण कहानी है। 'मैक्वेथ' भग्न महत्वाकाक्षा का विमूर्तन है, जिसमें भापा और भाव सम्मिलित चोट करते हैं, जीवन की नि सारता को अभिव्यक्त करते हैं। 'किग लियर' दु खान्तक नाटको में जैसे वीर काव्य है, महाकाव्य की शालीनता लिए हुए, प्राय वन्य, शक्तिम। 'ऐन्टनी एण्ड क्लियोपेट्रा' में जो मर्यादा प्रणय और नारी को दी है महाकवि ने उन्हे अपनी अन्य कृतियो में और कही न दी। इसके दोनो चरित्र शेक्सपियर के सबसे कुशल, सफल और सर्वथा अकृत्रिम चरित्रो मे हैं, प्राय अनुपम। 'कोरियोलेनस' इसके विपरीत राजनैतिक ट्रैजेडी है जिसमें राजनैतिक गाभीर्य वातावरण को कठोर बनाए हुए है।

'दि विन्टर्स टेल' और 'दि टेम्पेस्ट' शेक्सपियर की पिछली रोमाटिक रचनाएँ हैं। इनमें वह अपनी कुशल ट्रैजेडियो से हट आया है। इनमें से पहली में पशुपालन (पैस्टोरल) ससार जी उठा है, परन्तु ससार जो अनजाना नही है, पहचाना जा सकता है। 'दि टेम्पेस्ट' में पार्थिव-अपार्थिव दोनो शक्तियो का प्रदर्शन है और इसमे कवि की जाग्रत मेधा का विकास है।

महाकवि शेक्सपियर नाटक के ससार में प्राय अकेला है, काव्य-कुशलता मे, नाटकीय प्रभाव में, चरित्र-चित्रण में, वस्तु के सघटन में, भापा और भाव में। वह अपनी जनता की आवश्यकताएँ-कामनाएँ, गुण-दोप जानता है, साथ ही अपने रगमच की सीमाओ को भी। उनके अनुकूल ही वह अपने नाटको के स्थल प्रस्तुत करता है और असामान्य रूप में सफल होता है।

वेन जान्सन (१५७३-१६३७)

शेक्सपियर अँग्रेजी साहित्य में इतना असाधारण है कि उसके सूर्यवर तेज से और नक्षत्रो का मलिन हो जाना स्वाभाविक है। परन्तु इसमें सन्देह नही कि यद्यपि उसकी महानता को उसके समकालीन नाटककार न प्राप्तकर सके, निस्सन्देह अनेक ऐसे थे जिनका अँग्रेज़ी साहित्य में अपना स्थान है। वेनजान्सन (१५७३-१६३७) इसी प्रकार

का एक यशस्वी व्यक्तित्व था जो शेक्सपियर का अनेकार्थ में एक प्रकार से जवाब है। जान्सन 'क्लासिकवादी' है, ग्रीक और लेटिन में नाटकों का पोषक और नाटक के क्षेत्र में सुधारवादी। रोमाचक शैली से मुंह फेर उसने यथार्थवाद को अपनाया और कामेडी के क्षेत्र में उसने काल, स्थान तथा 'प्लाट' की एकता स्थापित करने का प्रयास किया। उसकी प्रारम्भिक कृतियो में 'एवरी मैन इन हिज ह्यूमर' अमर हो गया है। उसके पात्र विनोदी हैं और उसने उनके रुग्ण आचार की अच्छी खिल्ली उडाई है। उसे कुछ लोगो ने सत्य ही १७वीं सदी का डिकेन्स कहा है। समसामयिक व्यापार और धन ने म य-वर्गीय जनता को जो नितान्त भ्रष्ट कर दिया था तो जान्सन अपने नाटको में उसका भण्डाफोड करने से न चूका। बेनजान्सन अत्यन्त मौलिक है और उसके नाटको ने काफी ख्याति भी पाई है, यद्यपि जितनी ख्याति उसे उनके द्वारा मिलनी चाहिए थी उतनी मिली नही। 'वोल पोन', 'डिसाइडेड वोमन', 'दि अलकेमिस्ट' और 'बार्थोलोमो फेयर' अँग्रेजी साहित्य की कामेडी के क्षेत्र में अनूठी रचनाएं हैं।

बेन जान्सन ट्रैजेडी के क्षेत्र में इतना सफल न हुआ। 'सेजेनस' और 'कैटिलीन' ट्रैजेडी के क्षेत्र में उसकी कृतियां हैं जिनमें जीवन का अभाव है और जिनके पात्र मूर्छित से हैं। शेक्सपियर की समकालीनता जान्सन की ख्याति में विशेष घातक सिद्ध हुई।

जार्ज चैपमैन (१५५९-१६३४)

इस काल का दूसरा नाटककार जार्ज चैपमैन (१५५९-१६३४) है जो विशेषत होमर के अपने अनुवाद के लिए प्रसिद्ध है। उसने तीन ऐतिहासिक ट्रैजेडी लिखी—'बस्सी डि एम्ब्वा', 'दि रवेंज आफ बस्सी डि एम्ब्वा' और 'दि ट्रैजेडी आफ बायरन'। इनकी ऐतिहासिकता फ्रास के दरबार से सम्बद्ध है और मार्लो से काफी प्रभावित उसकी शब्दावली शालीन है। यद्यपि नाटकीय क्षेत्र में उसको महान् कहना शायद उचित न होगा।

डेकर, हेउड

१७वी सदी के कुछ यथार्थवादी नाटककार डेकर, फ्लेचर, ट्यूरनर आदि हैं। टामस डेकर (१५७०-१६३२) यथार्थवादी होता हुआ भी रोमान्टिक था। श्रमिको का वह हिमायती था और अपने 'शू मेकर्स हालीडे' में उसने उनका प्रशसनीय वर्णन किया है। उसकी रचना 'दि आनेस्ट होर' बडी करुण कृति है जिसमें उसने यथार्थवादी ढग से समसामयिक समाज का चित्रण किया है। डेकर जहां श्रमिको और साधारण नागरिको को अपना पात्र बनाता है टामस हेउड (१५७५-१६४१) नए उठते हुए मध्यवर्ग को चित्रित करता है जैसा उसके 'ए वोमन किल्ड विद काइण्डनेस' से प्रकट है। इस कृति में साधारण जनता का दिग्दर्शन निस्सदेह उचित नही कहा जा सकता। फिर भी इतना सही है कि अब इग्लैंड में ऐसे नाटककार उत्पन्न हो गये थे जिन्होने

अपने कृतित्व का क्षेत्र दरबार से हटाकर विस्तृत जनसाधारण पर रखा। ब्योमोन्ट और फ्लेचर, दोनो ने नागरिको को अपने नाटको का केन्द्र बनाया।

फ्लेचर, ब्योमोन्ट

जान फ्लेचर (१५७९-१६२५) और फ्रान्सिस ब्योमोन्ट (१५८४-१६१६) दोनो ने पहले कुछ काल सम्मिलित रूप से लिखा। 'दि नाइट आफ दि बर्निंग पेस्टल' उनकी सम्मिलित रचना है जिसमें उन्होने नागरिको के विश्वासो की आलोचनापूर्ण अभिव्यजना की। उनकी तीन कृतियाँ 'फिलेस्टर', 'दि मेड्स ट्रैजेडी', और 'ए किंग एण्ड नो किंग' विशेष जानी हुई हैं। इन ट्रैजेडियो का क्षेत्र यथार्थता से काफी दूर है और नाटक-शैली भी यथार्थवादी नही कही जा सकती। कृत्रिम आवेगो का उनमें बरबस योग है। अपनी कृत्रिमता के ही कारण वे शेक्सपियर की स्वाभाविकता अपनी कृतियो में प्रस्तुत न कर सके।

जान वेब्स्टर, टूरनर

१७ वी सदी के पूर्वार्ध में अपार्थिव प्रसगो की भी काफी रचना हुई। वेब्स्टर (लगभग १५८०-१६२५) ऐसे नाटककारो में काफी प्रसिद्ध हो गया है। उसकी दोनो रचनाओ—'दि ह्वाइट डेविल' और 'दि डचेज़ आफ मालफी'— में कथानक प्रतिशोध-प्रधान हैं। शेक्सपियर के 'हैमलेट' की भाँति उसकी शैली में षड्यन्त्र ललित कला का रूप धारण कर लेते हैं। उसकी रचना में नाट्य तत्त्व प्रभूत है जिसका प्राण कथानक की भयकरता है। जीवन को जान वेब्स्टर अपनी कृतियो मे भ्रष्ट, भयानक और क्रूर प्रकाशित करता है। सीरिल टूरनर (१५७५-१६२६) की ट्रेजेडी 'दि रिवेंजर्स ट्रैजेडी' और 'दि एथीस्ट्स् ट्रैजेडी' मे वेब्स्टर की शैली असाधारण रूप धारण कर लेती है। उसके पात्र नितान्त क्रूर और प्रतिशोधवादी हो जाते हैं, चरित्र नितान्त भ्रष्ट। दरबार का चित्र ही इन कृतियो का क्षेत्र भी है। अस्वाभाविक पुतलियो की भाँति उसके पात्र चलते-फिरते हैं। वेब्स्टर की ही भाँति टूरनर भी अपने नाटको में प्रधानतः कवि है।

मिडिलटन, मासिंगर

ब्योमोन्ट और फ्लेचर की ही भाँति अनेक तत्कालीन नाटककारो ने सम्मिलित रचना की जिससे उनका व्यक्तिगत मूल्याकन और स्वतन्त्र कृतिमत्ता की व्याख्या कठिन है। उनमें कुछ की कृतियो का हवाला दिया जा सकता है। टामस मिडिलटन (१५७०-१६२७) का नाम दो कामेडियो से सम्बद्ध है—'ए चेस्ट मेडेन इन चीप साइड' उनमे विशेषत प्रसिद्ध है। उसकी ट्रैजेडियो में विख्यात है 'दि चेन्ज लिंग' जिसमें शेक्सपियर और वेब्स्टर दोनो की शैलियो का योग है। यह कृति भी भयानक घटनावादी है। फिलिप मासिंगर (१५८३-१६४०) कामेडी का सफल नाटककार माना जाता है और उसने अपनी 'ए न्यू वे टु पे ओल्ड डेट्स' नामक रचना में जान्सन की ही भाँति मानव

स्वभाव की रुग्णता पर भयकर व्यग्य प्रस्तुत किया है। उठते हुए वणिक्-वर्ग की हृदयहीनता का इतना भण्डाफोड १७वी सदी की रचनाओ मे कम हुआ है।

फोर्ड, शर्ले

१६४२ ईस्वी में प्यूरिटनो ने इगलैड में थ्येटर वन्द कर दिये। स्वाभाविक ही था कि नाटको की रचना की गति यदि सर्वथा वन्द नही हो जाय तो कम-से-कम रुक जाय। हुआ भी ऐसा ही। जो कुछ नाटक उस काल या उसके वाद लिखे भी गये, वे नितान्त नगण्य और अस्वाभाविक हैं। जान फोर्ड (१५८६-१६३६) और जेम्स शर्ले (१५९६-१६६६) ने अपने नाटको में भ्रष्टाचार, क्रूरता और भयानकता का चित्रण करते हुए अधिकाधिक करुणाव्यञ्जित काव्यकारिता प्रस्तुत की। गृह-युद्ध के आरम्भ के साथ-साथ अग्रेजी ड्रामा का सर्वोन्नत युग समाप्त हो गया।

चार्ल्स द्वितीय के राज्यारोहण के वाद १६६० में इग्लैड में थ्येटर फिर खुले। जान्सन, शेक्सपियर फिर रगमच पर अवतरित हुए, यद्यपि नाटक के क्षेत्र में यह नया जीवन अधिकतर राज-दरबार तक ही सीमित रहा। चार्ल्स-द्वितीय और उसकी वहन हेनरीएटा (जिसकी शादी लुई चतुर्दश के अनुज ओरलीन्स से हुई थी) दोनों फ्रेंच दरवार में रह चुके थे और उसके उपासक थे। उन्होने स्वदेश लौटकर जो कामुकता की धारा वहा दी वह इग्लैड के इतिहास में वेजोड थी। थ्येटर भी उन्ही के प्रयास और सरक्षा में फिर खुले।

इथरेज, वाइकर ली, काग्रीफ

उस काल की नाटक-परम्परा में कामेडी का विशेप प्रभाव वढ़ा। इथरेज, वाइकर ली और कांग्रीफ ने कामेडी का अग्रेजी में नये रूप से निर्माण किया। तीनो दरवारवादी थे और तीनों ने अभिजात-कुलीय जीवन के ही प्रसगो का खुले तौर से चित्रण किया। सर जार्ज इथरेज (१६३५-९१) ने अपनी रचना 'दि मैन आफ मोड' में इस शैली का विशेष प्रयोग किया जिसमें शालीन नर-नारियो का विनोदपूर्ण अकन हुआ। विलियम वाइकर ली (१६४०-१७१६) की नाट्य शैली इथरेज से कही प्रखर थी और उसे उसने विनोद और भ्रष्टाचार के दृश्यो तक ही सीमित न रखा बल्कि उसमें व्यग्य की तीव्रता भी पूर्ण रूप से जोड दी। अग्रेजी रगमच पर उसकी चार रचनाओ ने सदा के लिए अपना स्थान बना लिया है। ये हैं—'लव इन ए वुड' (१८७१), 'दि जेन्टिलमैन डान्सिग मास्टर' (१६७३), 'दि कट्री वाइफ' (१६७५) और 'दि प्लेन डोलर' (१६७६)। इनमें पिछली दोनो कृतियाँ वाइकर ली की शैली और शक्ति को पूर्णत प्रकट करती हैं। विलियम काग्रीफ (१६७०-१७२९) तीनो में सबसे अधिक सयत है। उमके डायलाग वेजोड हैं, उसकी ख्याति २५ वर्ष की ही आयु में देशभर में फैल गयी। उस ख्याति को अर्जित करने का श्रेय उसके नाटक 'दि ओल्ड वैचेलर'

(१६६३) को है। इसके अतिरिक्त उसने तीन कामेडी और लिखी—'दि डवल डीलर' (१६६४), 'लव फार लव' (१६६५), 'दि वे आफ दि वर्ल्ड' (१७००)। उसने एक ट्रैजेडी भी लिखी, 'दि मोर्निंग ब्राइड'। नाटककार के रूप में उसकी महत्ता उसके अकन की सर्वागीणता में है। उसका दृष्टिपथ विस्तृत है और उसका अकन समुचित। उसने नेक और वद का अपने नाटको में चित्रण नही किया, वल्कि शिष्ट और अशिष्ट का, प्रखर और मन्द चित्रण किया है। विलियम कांग्रीफ का नाम भी अंग्रेज़ी साहित्य के कामेडीकारो में अमर हो गया है।

ड्राइडन, टामस ओटवे

१७वी सदी के अन्त में सर जान वैन ब्रू ने अपनी रचना 'दि रिलैप्स' (१६६६) और जार्ज फर्कुहर ने 'दि वोज़ स्ट्रैटेजम' १८वी सदी के आरम्भ में (१७०७) में लिखी। पिछली कृति १८वी सदी के विस्तृत आलोक के रूप में उस काल के उपन्यास-ससार की भूमिका है। नाटक की पृष्ठभूमि दरवारी वैठको से हटकर गाँव और नगरो को ढक लेती है। उस काल का अंग्रेज़ी साहित्य वस्तुत अपनी कामेडियो के लिए प्रसिद्ध है परन्तु तव कुछ 'हिरोइक' (वीरपरक) ड्रामा भी लिखे गये। इस क्षेत्र में ड्राइडन ने सराहनीय प्रयत्न किया। उसका सुन्दरतम नाटक 'औरगजेव' (१६७५) है। अपनी रचना 'आल फार लव' में उसने शेक्सपियर द्वारा प्रस्तुत ऐन्टनी और क्लियोपेट्रा की कहानी फिर से कही और उसमें उसने मुक्त छन्द का प्रयोग किया। टामस ओटवे इस दिशा में ड्राइडन से अधिक समर्थ हुआ और उसने १६८२ ईस्वी में 'वेनिस प्रिज़र्वड' लिखकर एलिजावेथ-कालीन शैली का पुनरुद्धार किया।

१७३७ ईस्वी के 'लाइसेन्सिग ऐक्ट' ने नाटककारो की दु शीलता से ऊबकर भाषा और चित्रण की कुछ सीमाए वाँध दी जिससे अनेक नाटककार नाटक के क्षेत्र से अलग हो गये। हेनरी फील्डिंग इसी प्रकार का एक साहित्यिक था, जिसने नाटक का क्षेत्र छोडकर उपन्यास का क्षेत्र अपनाया। नाटको के सेन्सर की जो परम्परा तव प्रतिष्ठित हुई वह आज भी प्रतिष्ठित है। उस काल के अभिनय क्षेत्र में दो नाम अमर हो गये—गेरिक और मिसेज सिडोन्स। इसी मिसेज़ सिडोन्स का चित्र लिखकर सर जोशुवा रेनाल्ड्स ने अपने को धन्य माना।

जान ग्रे, रिचर्ड स्टील, जार्ज लिली, केली, कम्बरलैंड

१८वी सदी की प्रारम्भिक कृतियो में जान ग्रे की 'दि वेगर्स ओपरा' (१७२८) काफी प्रसिद्ध है। अनेक आलोचको ने वालपोल पर इसे एक व्यग्य माना है। इस कृति ने अनेक परवर्ती नाटककारो को प्रभावित किया यद्यपि वे इसकी प्रखरता प्राप्त न कर सके। सामाजिक क्षेत्र में एक नया जीवन मूर्तिमान हो रहा था, एक नयी दुनिया इग्लैंड की जमीन पर खडी हो रही थी और साहित्य में भी तदनुकूल परिवर्तन स्वाभा-

विक था। भावो और आवेशो की पृष्ठभूमि पर एक नयी अनुभूति की चेतना जगी और १८वी सदी के नाटककारो ने उसकी प्रतिष्ठा में विशेष योग दिया। उसके प्रारम्भिक प्रवर्तको में एक रिचर्ड स्टील है जिसने १७०५ में 'दि टेन्डर हसबेन्ड' लिखकर गार्हस्थ्य जीवन के सौन्दर्य का निरूपण किया। जार्ज लिली (१६९३-१७३९) और भी नीचे उतरकर साधारण की परम्परा में खडा हुआ और अपने 'लन्डन मर्चेन्ट आर दि हिस्ट्री आफ दि जार्ज बार्न वेल' में जो उसने अप्रेन्टिस के जीवन का सही, गम्भीर और अकृत्रिम खाका खीचा। वह ड्रामा के क्षेत्र में एक नया भाव लेकर उतरा। ह्यू केली और रिचर्ड कम्बरलैण्ड ने भावों के जगत् में अपनी लेखनी चमत्कृत की। कम्बरलैण्ड की कृति 'दि वेस्ट इण्डियन' (१७७१) ने तो भावनाओ के ससार में मानव-प्रश्नो को सर्वथा डुबो दिया। उसका आकार उसकी शैली में सर्वथा नगण्य हो गया। और तब प्रख्यातनामा गोल्डस्मिथ और शेरिडन ने अकृत्रिम, स्पष्ट, मानवेंगित नाटक की केली और कम्बरलैड की परम्परा से रक्षा की।

गोल्डस्मिथ

ओलिवर गोल्डस्मिथ (१७३०-७४) अंग्रेज़ी साहित्य के महान् व्यक्तित्वो में है। १७६८ ईस्वी में उसने 'दि गुड नेचर्ड मैन' लिखा और पॉच वर्ष बाद 'शी स्टूप्स टु काकर'। इनमें दूसरी कृति तो आज भी रगमचो का (विशेषकर गैर पेशेवाले) आकर्षण है। अकृत्रिम मानवता जैसे इसमें सजीव हो उठी है। यद्यपि उसमें असम्भाविता की मात्रा कुछ कम नही, पात्रो का अकन अद्भुत शक्ति के साथ हुआ है। हार्ड-केसल और टोनी लम्पकिन अपना व्यक्तित्व रखते हुए भी उस काल के जीते-जागते विनोदी जीव हैं।

शेरिडन (१७५१-१८१६)

परन्तु १८वी सदी के उस उत्तरार्ध में जिसमें गोल्डस्मिथ ने अपनी रचाए की, रिचार्ड शेरिडन अनुपम हुआ। वह कभी परराष्ट्र-विभाग का उपमन्त्री और ट्रेज़री का मन्त्री था। उस काल के रगमच के प्रमुख निर्माताओ में शेरिडन अग्रणी था। उसकी ख्याति उसकी तीन 'कामेडी-कृतियों' पर अवलम्बित है—'दि राइवल्स' (१७७५), 'दि स्कूल फार स्कैन्डल' (१७७७), दि क्रिटिक' (१७७९)। शेरिडन नितान्त प्रखर-बुद्धि और असाधारण मौलिक था और कामेडी के क्षेत्र में उसने पुनरारोहण काल की सजीवता फिर से प्रस्तुत की। उसकी प्रवृति निश्चय रोमाचक है। चरित्र-चित्रण के क्षेत्र में तो वह नितान्त अनूठा है और उसने बेन जान्सन की कृतिमत्ता पुन. स्थापित कर दी। हा, यह मानना होगा कि शेरिडन की दुनिया में न कोई गहराई है, न मानव स्वभाव की कोई पहचान या व्याख्या। फिर भी अपने अल्पकालीन साहित्यिक जीवन में उसने जो कुछ रचा वह प्रतीक बन गया। जिस प्रसाद और सरलता से वह अपने

पात्र उपस्थित करता है और दृश्य रँगता है, वह साधारण नही। 'दि स्कूल फार स्केन्डल' में उसकी शैली प्रखर और अधिक सक्रिय हो उठती है और दृश्य नितान्त अकृत्रिम हो जाते हैं। विनोद और हास्य की अभिसृष्टि जितनी उसकी कामेडियो में हुई है, उतनी अन्यत्र उपलब्ध नही। १८वी सदी के उत्तरार्ध का जो चित्रण उसने किया है उतना कोई अन्य नाटककार न कर सका।

: ६ :

शेरिडन से शा तक

शेरिडन के वाद अग्रेज़ी नाट्य साहित्य पर जैसे तुषारपात हो गया। जहा कहानी, उपन्यास और कविता की साहित्य में भरमार हो गई, वहा नाटक का क्षेत्र जैसे सर्वथा अनुर्वर सिद्ध हुआ। उन्नीसवी सदी रोमैन्टिक कवियो का सृजन-काल है। ऐसा नही कि नाटक लिखने के प्रयत्नो से वह काल सर्वथा रहित हो। नाटक लिखे गये और रोमैन्टिक कवियो ने स्वय अनेक रचनाएँ उस दिशा में प्रस्तुत की। परन्तु वस्तुत. वे असफल रही। शेली की 'चेंची' को छोडकर और कोई रोमैन्टिक कृति सफल न हुई और वह 'चेंची' भी सर्वथा 'यौन' होने के कारण रगमच पर अभिनीत नही हो सका, अथवा कम-से-कम इ ग्लेंड के तत्कालीन सेन्सर के अनुकूल नही हो सका।

उस काल, एलिजावेथ-काल के अर्थ में नाटक तो नही, परन्तु प्रहसन और 'मेलोड्रामा' (सगीत प्रधान नाटक) ज़रूर लिखे गये। नाटक के प्रति इस उदासीनता का कारण न केवल अभिनय के प्रति रोमान्टिको की उदासीनता थी वरन् राजदरवार की उपेक्षा भी उसका एक कारण था। विक्टोरिया को राजनीति, साहित्य से अधिक प्रिय थी और इस दिशा में एलिजावेथ से वह सर्वथा भिन्न थी। इस प्रकार उन्नीसवी सदी के नाटक को दरवार की सरक्षा न प्राप्त हो सकी, यद्यपि दरवार की सरक्षा प्राप्त न होना नाटक की सृष्टि में विशेप कारण नही माना जा सकता क्योकि आखिर शेक्स-पियर या शा के नाटको को भी तो वह सरक्षा आज उपलब्ध नही और अपनी नाटकीय कुशलता के कारण ही तो आखिर वे लोकप्रिय हो सके हैं। नाटक के ह्रास का विशेप कारण हमें अन्यत्र खोजना होगा—जनता की उदासीनता में। औद्योगिक क्रान्ति ने एक नये मध्यवर्ग और उससे भी समृद्ध धनी वर्ग की अभिसृष्टि कर दी थी और ये दोनो साहित्य के प्रति उदासीन थे। एक धन की सीमाओ के वाहर देखता तक न था, दूसरा उसका गुलाम था और कलाकार उनके साथ अपनी आत्मीयता स्थापित न कर सका। सामन्तवाद की हमदर्द सरक्षा उठ चुकी थी और पूजीवर्ग की सरक्षा उपलब्ध न थी और कलाकार भी रोमान्टिक होने के कारण यथार्थवादी न हो सका, नये जीवन के नये रूप को अपनी कृतियो में वह मूर्तिमान न कर सका। इसके अतिरिक्त उस काल लन्दन में केवल दो अभिनय-गृह—'कोवेन्ट गार्डन' और 'ड्रूरी लेन'—जिनको नाटक खेलने का

एकाधिकार प्राप्त था, सीमित सख्या में ही नाटको का प्रदर्शन कर सकते थे। हाँ, १९वी सदी के तीसरे चरण के अन्त में निश्चय अधिकाधिक नाट्यगृह सवत्र बन चले।

रावर्टसन, इब्सन, जोन्स, पिनेरो, वाइल्ड, गिल्वर्ट, सलीवन

ऊपर नाटककार की समसामयिक प्रवृत्तियो से आत्मीयता स्थापित न कर सकना उस काल के नाटक-ह्रास का जो एक कारण माना गया है, वह विशेपत स्मरण रखने की वात है। १८वी सदी में लिली ने वदलती हुई जन-प्रवृत्ति का एक अश में अकन किया था। १९ वी सदी में नाटक में समसामयिक जीवन को यदि किसी भाषा में किसी ने अभिव्यक्त किया तो वह टी०डब्ल्यु० रावर्टसन था। उसकी कृति 'कास्ट' मानी हुई रचना है। वह नाटक सगीतप्रधान है और लोग उसे फूहड कहने से भी न चूके, परन्तु अभिनीत होकर वह जीवन को खोलकर रख देता है। उन्ही दिनो नार्वे में नाटक के असाधारण आचार्य इब्सन का प्रादुर्भाव हुआ। इब्सन ने अपने काल के और परिवर्ती कलाकारो को क्या स्वदेश क्या विदेश में सर्वत्र प्रभावित किया है। अग्रेजी ड्रामा पर भी उसका गहरा प्रभाव पडा और असाधारण मेघा वाले वर्नाड शा ने स्वय इब्सन की कृतियो से वहुत कुछ सीखा। उसके नाटक 'वेंड' और 'पियर गिन्ट' के वरावर अँग्रेजी में शायद कुछ नही है। उसके अन्य नाटको—'दि डाल्स हाउस', 'दि घोस्ट्स', 'ऐन एनिमी आफ दि पीपुल', "कैन दी डैड अवेकन", का जोड भी आधुनिक नाटक-साहित्य में मिलना सम्भव नही। उसके वाद हेनरी आर्थर जोन्स और सर ए० डब्ल्यु० पिनेरो का घरातल सहसा वहुत नीचे उतर आता है। इनमें पहले ने 'दि सिल्वर किंग' नाम का सगीत-प्रधान नाटक लिखा और 'सेन्ट्स ऐण्ड सिनर्स' तथा 'मिसेज डेन्स डिफेन्स' नामक समस्या-नाटक रचे और दूसरे ने 'दि सेकेण्ड मिसेज टेंकरे' रचा। परन्तु जोन्स और पिनेरो दोनो इब्सन के मुकावले नितान्त लघु थे, नगण्य। आस्कर वाइल्ड का उल्लेख करने के पहले गिल्वर्ट और सलीवन की ओर सकेत कर देना उचित होगा। दोनो ने ओपेरा (सगीत नाटक) प्रहसन लिखे। वस्तुत दोनो वाइल्ड और शा के पूर्ववर्ती थे, जिन्होने उनके लिए क्षेत्र प्रस्तुत कर दिया। वाइल्ड (१८५४-१९००) वडी प्रतिभा का नाट्यकार था। और उसका जेल चला जाना नाटक-साहित्य के लिये वडा घातक हुआ, फिर भी उसकी अनेक कामेडी कृतियों में 'लेडी विंडरमियर्स फैन', 'ए वोमन आफ नो इम्पोर्टे स', 'ऐन आइडियल हसवेंड' और 'दि इम्पोर्टेंस आफ वीग अर्नेस्ट', प्रधान हैं जो उसकी मेधा प्रचुर मात्रा में प्रकट करती हैं।

वार्कर, वेड्रेन

२०वी सदी नये सम्भार के साथ नाटक के क्षेत्र में अवतरित हुई। उसके साथ १९वी सदी की किसी प्रकार भी तुलना नही की जा सकती। नाटक-सम्वन्धी २०वी सदी की यह सम्पदा समृद्धि में एलिजावेथ-काल के समान थी। वार्कर और वेड्रेन

ने अपनी कृतियो द्वारा एक नये प्रकार की नाट्य-कुशलता प्रस्तुत की। वार्कर समस्या-सजीव और असाधारण यथार्थवादी था। उसके नाटक 'दि वायसे इनहेरिटेन्स' (१९०५) और 'वेस्ट' (१९०७) इस दिशा में प्रमाण हैं। 'दि मैरिग आफ एनलीट' तथा 'प्रूनेला' में उसने रोमैन्टिक तत्त्व भी अंकित किये। 'प्रूनेला' की रचना उसने लारेन्स हाउसमन के सहयोग से की थी।

गाल्जवर्दी, इरविन, मेजफील्ड

यथार्थवादी और समसामयिक जीवन की पृष्ठभूमि बनाकर नाट्य रचना करने वाले इस काल के कलाकारो में जान गार्ल्जवर्दी (१८६७-१९३३) अग्रणी हैं। "स्ट्राइफ" (१९०९), 'जस्टिस' (१९१०) और 'लायलटीज़' (१९२२) नाम की उसकी रचनाओ ने ड्रामा क्षेत्र में काफी ख्याति पाई। सेन्ट जार्ज इरविन ने अपने 'जैन क्लेग' (१९११) और 'जान फर्गुसन' (१९१५) में समसामयिक यथार्थवादिता की परम्परा रखी। जान मेज़फील्ड ने १९०८ में 'दि ट्रैजेडी आफ मैन' की रचना की और गार्हस्थ्य पृष्ठभूमि में काव्यगुण का योग दिया।

लेडी ग्रेगरी, यीट्स, सिन्ज, ओकेसी

इरविन के साथ कुछ आइरिश कवियो का भी नाम लिया जाता है, जिन्होंने नाटक के क्षेत्र में कुछ प्रयोग किये। लेडी ग्रेगरी, यीट्स, सिन्ज, ओकेसी आदि उसी परम्परा के हैं। यीट्स नाटककार से कवि अधिक सफल माना जाता है। यद्यपि उसकी 'काउन्टेज कैथलीन' और 'दि लैंड आफ हार्ट्स डिजायर' आइरिश कल्पना के प्रकट नमूने हैं। नाटककार के रूप में जान मिलिंगटन सिंज (१८७९-१९०९) उससे कही कुशल कलाकार था। उसका 'प्लेब्वाय आफ दि वेस्टर्न वर्ल्ड' आइरिश चरित्र की सुन्दर व्याख्या है। सीन ओकेसी ने 'जोनो ऐण्ड दि पेकाक' और 'दि शैडो आफ ए गन मैन' में डबलिन का जीवन प्रतिबिम्बित किया।

सर जेम्स बेरी की बडी प्रतिकूल आलोचना हुई है परन्तु उसका 'पीटरमैन' कल्पना और भावना का सम्मिलित क्षेत्र होकर भी नाटक के दृष्टिकोण से कुछ कम श्लाघ्य नही। उसकी दो और रचनाए—'दि ऐडमिरेबुल क्रिचेन' (१९०२) और 'डियर ब्रूटर्स' (१९१७) विशेष प्रसिद्ध हुई।

शा

परन्तु सावधि साहित्य का शेक्सपियर तो जार्ज बर्नार्ड शा है। अनेक आलोचको का कथन है कि अंग्रेजी नाटक-साहित्य मे यदि केवल दो व्यक्तियो का नाम लिया जाय तो उनमें एक शा निश्चय होगा। इस राय से कोई सहमत हो या नही, इसमें शायद दो मत नही हो सकते कि शा शेक्सपियर के बाद के नाटक-साहित्य का सबसे बडा प्रतिनिधि है। उसका जीवन-काल भी सुदीर्घ था। १८५६ से १९५० तक, ९४

वर्ष । अंग्रेज़ी साहित्य के क्षेत्र में सम्भवत कोई कलाकार इतना दीर्घायु न हुआ । अंग्रेज़ी ड्रामा के इतिहास में शा का सृजनकाल काफी दीर्घ था । १८६२ में ही उसने अपना नाट्यकार जीवन 'विडोअर्स-हाउसेज' से आरम्भ किया और १६३६ तक 'इन गुड किंगचार्ल्ज़ गोल्डन डेज' तक निरन्तर जारी रखा । शा की मेधा असामान्य थी, नितान्त प्रखर । इब्सन की भाँति उसने भी अपने नाटको को अपने विचारों का समर्थ वाहक बनाया । उसके व्यग्य चुभने की शक्ति में बेजोड है, कान्ग्रीफ और वाइल्ड दोनो का वह सम्मिलित उदाहरण है । वह सोशलिस्ट था, फेबियन सोसायटी के निर्माताओ में से, और सेक्स, धर्म, आचार सभी कुछ उसके अभिप्रेत विषय थे । नाट्य-कुशलता उसमें असाधारण थी ।

'मिसेज़ वारेन्स प्रोफेशन' में उसने गणिका के जीवन को अपने दूषित वातावरण का अनिवार्य परिणाम प्रदर्शित किया है जिसमे नारी वारागना के दूषित पेशे को लाभकर रूप में वाध्य होकर स्वीकार करती है और इस प्रकार केवल रूमानी वेश्या नही रह जाती । आचार और आचरण के परम्परागत क्रम को विपरीत कर अकित करना शा की सहज कला है । उसकी कामेडी के व्यग्य की यही सार्थकता है । यही रूप निरन्तर 'सीज़र ऐण्ड क्लियोपैट्रा' से लेकर उसकी 'सेन्ट जोन' तक की कृतियो में विघटित है ।

उसकी रचनायें समस्या-प्रधान और प्रश्न-प्रधान होने के कारण चरित्रो को प्राधान्य नही देती । इसका अपवाद उसकी नाट्य-शृखला में बस एक है, 'कैन्डिडा' (१८६४) । वस्तु का चुनाव वह अपनी समस्याओ के अनुकूल करता है । इसीसे उसके नाटको की वस्तुभूमि निरन्तर समस्याओ की विविधता के अनूकूल बदलती जाती है । कही तो 'दि डेविल्स डिसाइपल' की भाति उसका प्लाट साधारण कथानक के रूप में खुलता है और कही (अधिकतर) जैसे 'गेटिंग मेरिड' में कहानी सूक्ष्मतम हो जाती है । फिर भी उसके कुछ नाटको में इन दोनो तत्वो का सुन्दर सम्मिश्रण है । जैसे— 'मेजर बरबरा', 'दि शोइग अप आफ ब्लैंको पौसनेट' अथवा 'जानबुल्स अदर आइलैंड' में । इन नाटको की विशेषता इनके कलेवर से अधिक, अनेक बार इनकी प्रशस्त भूमिकाओ में होती है । इन्ही भूमिकाओ में वह अपने विचारो को व्यग्यपूर्ण शक्तिम चुने शब्दों में रखता है । 'ऐंड्रोक्लीज एण्ड दि लायन' की भूमिका में ईसाई धर्म पर उसने प्रबल प्रहार किया है । समस्याओ की प्रधानता पहले महासमर के बाद के उसके नाटको में विशेष रूप धारण करती है । जैसा 'हार्ट ब्रेक हाउस', 'दि ऐपुल कार्ट', टू ट्रू टु बी गुड', 'दि मिलियोनेयरेस', और 'जिनीवा' नाम की उसकी रचनाओ से प्रकट है । उसके 'मैन एण्ड सुपरमैन' और 'बैक टु मैथुसेला' ने कभी नाट्य-ससार पर सम्मोहन डाल दिया था, यद्यपि आज उनके जादू की शक्ति उतनी नही रही । 'पिगमेलियन' का प्रभाव भी दर्शकों पर कुछ कम न पडा । फिर भी यह कहना कठिन है कि शा का प्रभाव साहित्यिक जगत् पर कब तक रहेगा । इतना निश्चय कहा जा सकता है कि आगे कुछ

काल तक उस महान् कलाकार का प्रभावाकार छोटा नही होगा। राजनीति, समाज, अर्थ, दर्शन सब पर वह अपने व्यंग्य का चुटीला प्रहार करता है और समस्याप्रधान होकर भी उसके नाटक अभिनय के क्षेत्र में आज वेजोड हैं। उसके नाटको की रगमचीय सफलता अर्थार्जन में भी उसकी असाधारण रूप से सहायक हुई है। साहित्य के क्षेत्र में अपने जीवन-काल में शायद किसी अन्य कलाकार ने अपनी रचनाओ से इतना धन नही कमाया जितना वर्नाड शा ने।

आधुनिक काल के अंग्रेजी नाटक का विवरण वस्तुत शा के साथ समाप्त हो जाता है फिर भी उसके कुछ समकालीनो का उल्लेख यहा अनुचित न होगा। टी० एस० एलियट का उल्लेख कवि-परम्परा में हो चुका है। उसका 'मर्डर इन दि कैथेड्रल' (१९३५) पद्यात्मक ट्रैजेडी का एक सुन्दर नमूना है। ओडन और क्रिस्टोफर इशरक ने भी कुछ प्रयोग किये हैं जो दिलचस्प हैं। इन्होने पद्य और नृत्य के समावेश से नाटक को गद्य के चगुल से मुक्त करना चाहा है। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य उदीय-मान नाटककार भी साहित्य-निर्माण में प्रयत्नशील हैं, जिनका विवरण यहा समाचीन नही।

: १० :

उपन्यास

(आरम्भ से डिफो तक)

कहानी-लेखन की उस परम्परा का प्रादुर्भाव जिसे हम उपन्यास कहते है, साहित्य में अपेक्षाकृत काफी पीछे हुआ। कुछ ने तो अंग्रेजी में उसका आरम्भ रिचर्डसन की 'पामेला' से माना है। जो भी हो, उपन्यास का आरम्भ १६ वी सदी के पहले नही रखा जा सकता। १६ वी सदी मे भी उपन्यास के रूप में सर फिलिप सिडनी की जिस कृति 'आर्केडिया' का उल्लेख किया जाता है वह वस्तुत उपन्यास के माने हुए रूप को अभिव्यक्त नही करती।

उपन्यास की परिभाषा तो आसान नही पर साधारणत. उसकी व्याख्या में कहा जा सकता है कि वह गद्य की शैली में लिखा वह साहित्य है जो कहानी पर अवलम्बित है, जिसमें चरित्र का वर्णन है और युग-विशेष का जीवन प्रतिबिम्बित है। जिसमें भाव-नाओ और आवेगो की क्रिया और प्रतिक्रिया अकित है और जिससे नर-नारियो का अपने वातावरण के प्रति सक्रिय दृष्टिकोण निर्दशित होता है। इस प्रकार के उपन्यास का आरम्भ वस्तुत १६वी सदी में सभव न था। फिर भी पृष्ठभूमि के रूप में सर फिलिप की 'आर्केडिया' की ओर हम सकेत कर सकते है।

सिडनी (१५५६-८६), जान लिली, ग्रीक, लाज, डिलोनी, डेकर,नैश

जान लिली ने भी १६ वी सदी में अपने 'यूफियस' और 'यूफियस एण्ड हिज इग्लैंड' नाम के मनोरजक 'रोमान्स' लिखे। एलिजावेथ युग में ही रावर्ट ग्रीन (१५६०-६२) ने भी अपना 'पेन्डोस्टो' लिखा जिसे शेक्सपियर ने अपने 'विन्टर्स टेल'का आधार वनाया। उस तथाकथित उपन्यास में लन्दन के उपेक्षित ससार का अकन हुआ। टामस लाज (१५५८-१६२५) ने भी अपनी 'रोजेलिन्ड' तभी लिखी। परन्तु सही मनोरजन की सामग्री टामस डिलोनी (१५४३-१६००) ने प्रस्तुत की। उसके 'जैक आफ न्यूवरी' में जुलाहो का जीवन प्रतिविम्बित हुआ और 'दि जेन्टल क्रैफ्ट' में चमारो का। टामस डेकर ने भी समसामयिक घृणित जीवन के चित्र अपनी कृति 'गुल्स हार्नवूक' में प्रस्तुत किये। टामस नैश (१५६७-१६००) ने उपन्यास-लेखन की कला में कुछ प्रगति कर १६ वीं सदी समाप्त की।

जान बन्यन

१६ वी सदी का उत्तरार्ध उपन्यास-लेखन की दिशा में पिछली सदी से कुछ अधिक जाग्रत हुआ। जान बन्यन (१६२८-८८) का नाम अग्रेजी साहित्य में काफी वडा है। वह सैनिक और पादरी बारी-बारी रह चुका था और उसने साहित्य-प्रसिद्ध अपनी रचना 'दि पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस' १६७८ में प्रकाशित की। दो साल वाद उसकी दूसरी रचना 'दि लाइफ एण्ड डेथ आफ मिस्टर वैड मैन' भी लिखी गयी और अन्त में 'होली वार' (१६८२) प्रकाशित हुआ। 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' रूपक है और उसका कथानक कल्पना पर अवलम्वित है, यद्यपि उसमें कहानी का यथार्थ कुछ कम नही है।

डिफो

परन्तु उपन्यास का वस्तुत आरम्भ १८ वी सदी में डेनियल डिफो (१६६०-१७३६) से हुआ। डिफो ह्विग और टोरी दोनो दलो का एजेन्ट था। वह सट्टाबाज और दिवालिया भी था और उसने कुछ वैज्ञानिक अन्वेषण भी किये। उसने इधर-उधर की यात्राएँ भी की थी और वह उस जमाने का जाना हुआ पत्रकार था। अनेक बार उसे कैद भुगतनी पडी। 'दि रिव्यू', जिसका उसने १७०४ से १३ तक प्रकाशन किया, अग्रेजी पत्रकारिता की एक मजिल है। उसकी उपन्यास की दिशा में प्रबल कृति 'राविन्सन क्रूसो' (१७१६) है। यद्यपि ,'कैप्टन सिंगिलटन', 'मोल फ्लेन्डर्स', 'कर्नल जैक', 'ए जर्नल आफ दि प्लेग इयर', 'रोक्साना', आदि भी कुछ कम जानी हुई कृतिया नही हैं। डिफो अपने पाठको की अभिरुचि के अनुकूल रचना करता था। यही कारण था कि उसकी कृतियो ने प्यूरिटन मध्यवर्ग को शीघ्र अपनी ओर आकृष्ट किया। उसकी कल्पना, यथार्थ और यात्रानुभूति ने अग्रेजी साहित्य को 'राविन्सन क्रूसो' के रूप में जो दिया वह असाधारण देन सिद्ध हुआ। इस कृति का उस साहित्य पर काफी प्रभाव

पडा और अनेक भाषाओ में आज उसके अनुवाद प्रस्तुत है।

'राविन्सन क्रूसो' की पृष्ठ-भूमि काल्पनिक होती हुई भी यथार्थ का आभास प्रस्तुत करती है और उसकी सफलता विशेषत उसके इसी गुण पर अवलम्बित है, यद्यपि रोक्साना और 'मोलफ्लैन्डर्स' के चरित्र भी पाठक को बरबस अपनी ओर खींचते हैं।

: ११ :

रिचर्डसन, सर वाल्टर स्काट

सेमुएल रिचर्डसन (१६८९-१७६१)

डिफो के बाद उपन्यास का क्षेत्र फिर अनुर्वर होगया। उसके 'राविन्सन क्रूसो' के प्रकाशन के प्राय पच्चीस वर्ष बाद रिचर्डसन की 'पामेला' प्रकाशित हुई। सेमुएल रिचर्डसन अंग्रेजी साहित्य के प्रधान निर्माताओ मे हो गया है। वह मुद्रक था और जीवन भर मुद्रक ही बना रहा। १७४० में उसने अपनी 'पामेला' प्रकाशित की। १७४७-४८ में 'क्लारिसा' और १७५३-५४ में 'सर चार्ल्स ग्रेंडिसन'।

तीनो उपन्यासो की कहानी साधारण है। 'पामेला' बांदी है जो अपनी मालकिन के पुत्र के दुराचरण के प्रयत्नो मे निरन्तर अपनी रक्षा करती है और अन्त मे उसके विवाह-प्रस्ताव को गम्भीरता से स्वीकार करती है। सर चार्ल्स ग्रेंडिसन भी अपने कुशल व्यवहार और सयम से सदाचरण करता है। रिचर्डसन प्यूरिटन था परन्तु उसकी रचना में कला का प्रचुर निरूपण हुआ।

हेनरी फील्डिग (१७०७-५४)

रिचर्डसन मध्यवर्ग का था और उसने उसी वर्ग के पात्रो के गुण-दोषो का विवेचन किया। उसका यह अभाग्य था कि हेनरी फील्डिग, उसके जीवन-काल में ही प्रादुर्भूत हुआ। फील्डिग अभिजात कुलीय था, अभिजात कुलीयो के स्कूल ईटन मे शिक्षा पा चुका था। 'क्लासिक्स' का प्रेमी था और सर राबर्ट वालपोल के लाइसेंसिग एक्ट के बनने से पहले तक नाटककार भी था। पेशे मे वह जर्नलिस्ट, वकील और जज भी रहा।

१७४२ में उसने रिचर्डसन की 'पामेला' का मज़ाक बनाने के लिए 'जोजेफ एन्ड्रूज़' प्रकाशित किया। यह 'पामेला' की एक प्रकार से व्यग्यपूर्ण पैरोडी था। इसमें पामेला की स्थिति में बदलकर एक नौकर रखा गया है, जिसे बिगाडने का प्रयत्न उसकी मालकिन करती है। बाद में जब वह भाग जाता है तब फील्डिग की दृष्टि में रिचर्डसन की दुनिया ओझल हो जाती है और उपन्यास अपने स्वाभाविक पथ पर चल

पड़ता है। उसकी 'हिस्ट्री आव जोनाथान वाइल्ड दि ग्रेट' नामक कृति 'जोजेफ एन्ड्रूज़' से भी अधिक व्यंग्यपूर्ण है। फील्डिंग जीवन के आवेशों का खुला पोषक था और इसी विचार की अभिपुष्टि में उसने टाम जोन्स (१७४९) की रचना की, जो उसकी कृतियों में सबसे सुन्दर है। उसकी 'अमेलिया' १७५१ में प्रकाशित हुई। इसकी करुणा इसे अस्वाभाविक बना देती है। जो भी हो, फील्डिंग सहज कलाकार था।

स्मोलेट

तोबियास स्मोलेट (१७२१-७१) फील्डिंग का समकालीन था। स्काटलैंड का निवासी और पेशे का डाक्टर। उसकी अनेक कृतियाँ उपलब्ध हैं, 'रोडरिक रेन्डस' (१७४८), 'पेरेग्रिन-पिकिल' (१७५१), 'फर्डिनेन्ड काउन्ट फैदम' (१७५३), 'सर लेस्लाट ग्रीव्ज़' (१७६२), 'हम्फ्रे विलकर' (१७७१)। इनमें और तो घटिया किस्म की हैं परन्तु 'पेरेग्रिन पिकिल्स' सुन्दर है। इसके पात्र सजीव हैं, उपपात्र तो नायक से भी अधिक। इसमें और स्मोलेट की अन्य कृतियों में भी अशान्त और अधीर सामुद्रिक और जहाज़ जीवन का सुन्दर और स्वाभाविक चित्र खींचा गया है। उस चित्र में क्रूरता और कामुकता का भी खासा चित्रण है।

लारेंस स्टर्न (१७१३-६८) अठारहवीं सदी का एक अनूठा उपन्यासकार है। वह सिपाही का लड़का और पादरी का पोता था। उसने केम्ब्रिज से एम० ए० की डिग्री ली और पादरी बन गया। उसका 'लाइफ, एण्ड ओपीनियन्स आव ट्रिस्ट्रम शैन्डी, जेन्ट' (१७५९-६७) अनोखा उपन्यास है, सर्वथा मौलिक, जो प्रकाशित होते ही लोकप्रिय हो गया था। वैसे कहानी भयानक है, और तीसरे खण्ड में नायक का जन्म होता है। अपूर्ण वाक्य, अपूर्ण सादे पृष्ठ, अनोखा विनोद, सभी कुछ इसमें अजीब हैं, फिर भी भावों का विचित्र निर्वाह हुआ है। इस प्रकार वह मानव जीवन की विचित्रता का रूप अंकित करता है और मानवता की विषादमयी अनुभूति से सहानुभूति प्रकट करता है। उसके 'सेन्टिमेन्टल जर्नी' (१७६१) में फ्रांस की यात्रा का अंकन है।

जानसन, गोल्डस्मिथ, फैनीबर्नी

अठारहवीं सदी के मध्य में ही उपन्यासों की धारा जो मोटी हो चलती है, वह उसके अन्त तक बाढ़ बन जाती है और तब साधारण रूप से भी इन उपन्यासों का विवरण कठिन हो जाता है। फिर भी कुछ महत्वपूर्ण कृतियों का उल्लेख समीचीन है। इन्हीं में सेमुअल जानसन का 'रैसेलास' (१७५९) है, जो अबीसीनिया की कहानी के रूप में अठारहवीं सदी के आशावाद पर एक प्रकार का प्रहार है। इस प्रकार आलिवर गोल्डस्मिथ का 'विकार आव वेकफील्ड' भी रूप और शैली में प्राय अकेला है। इसका आज भी साहित्यिकों में बड़ा आदर है। गोल्डस्मिथ असाधारण कलाकार है। उसमें हास्य और चित्रण दोनों सम्पन्न करने की अद्‌भुत क्षमता है। उसमें गजब की कारुणिकता है, जिससे

वह कगालो और आपद्ग्रस्तो के प्रति असाधारण तौर पर अनुरक्त हो जाता है। इसी काल क्वीन कैरोलिन की अनुचरी फैनीबर्नी (१७५२-१८४०) नाम की नारी ने भी उपन्यास-रचना की। अपने सुन्दरतम उपन्यास 'इवेलिना' (१७७८) में उसने गाँव की एक लडकी का लन्दन के कृत्रिम भडकीले जीवन में प्रवेश बडी खूबी से कराया है। उसकी इस कृति की जानसन, बर्क, रेनाल्डस आदि ने भूरि-भूरि प्रशसा की थी। उसने 'सेरवीलिया' 'कैमिला', और 'वान्डरर' नाम के तीन उपन्यास और रचे। पर तीनो ही एक से एक गए-बीते थे।

मैकेन्जी, टामस डे

भावावेगवादी उपन्यासो का आरम्भ स्टर्न ने किया था। उनकी परिपाटी चल पडी। हेनरी मैकेन्ज़ी ने अपने 'दि मैन आफ फीलिंग' में उस परम्परा को और जाग्रत किया। इसका हीरो स्थल-स्थल पर रो पडता है, जिससे उपन्यास पैरोडी का रूप धारण कर लेता है। इन्ही दिनो टामस डे ने अपना 'सैन्डफोर्ड एड मर्टन' (१७८३-८९) नामक उपन्यास लिखा, जिससे नीतिपरक उपन्यासो की परम्परा चली। उसका 'फूल आव क्वालिटी' (१७६६-७०) भी उसी शैली का वाद-प्रतिवाद युक्त उपन्यास है।

हारेस वालपोल

उसके बाद ही उस प्रकार के उपन्यास लिखे गये, जिन्हे 'गोथिक' कहते हैं। यह भयपरक हैं। अपराध, पाप, भय, खून, बदला आदि इस प्रकार के उपन्यासो के चित्रण-आधार हैं और इनका प्रणयन विशेषत मध्यकालीन 'वस्तु' के पुनरुज्जीवन से आरम्भ हुआ। इस परम्परा का पहला उपन्यासकार प्रसिद्ध सर राबर्ट वालपोल का पुत्र होरेस वालपोल (१७१७-९७) था। अपनी अभिजातकुलीय समृद्धि के वातावरण में उसने महत्वाकाक्षा के लब्ध्यर्थ उन व्यक्तियो को प्रयत्नशील देखा, जिन्हे स्वार्थ साधने मे आचारोपचार का मोह न था। उसी वातावरण का होरेस वालपोल ने अकन किया। भेद केवल इतना था कि उसने पृष्ठभूमि मध्यकालीन इटली के पापाचारयुक्त वातावरण से चुनी। वह स्वय पुराविद् था। पुरातत्व से अनेक लोगो को उस काल कुछ प्रेम हो गया था। बात यह थी कि व्यापार, उद्योग आदि से जो समृद्धि हुई तो उसने आखिर ऐसे निठल्ले लोग भी उत्पन्न किये, जो अपना अवकाश—जिसकी कुछ सीमा न थी—भरना चाहते थे। उनकी जागीरदारियो मे खडे मध्ययुगीय गिरजो आदि द्वारा उनकी रोमैन्टिक तुष्टि भी हो जाती थी और इस प्रकार एक पृष्ठभूमि भी उनकी कृतियो के लिये मिल जाया करती थी। होरेस वालपोल इसी रूप मे अपने उपन्यासो में पुरावर्ती पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर 'गोथिक' उपन्यास-परम्परा की नीव डाल सका। 'दि कैसिल आफ ओट्रैन्टो' (१७६४) इसी परम्परा की कहानी लेकर साहित्य-क्षेत्र में अवतरित होता है।

वेकफोर्ड (१७५६-१८४४), मिमेज ऐन रैडक्लिफ, ग्रेगरी लेविस, मैटू-रिन, मिसेज शेली

विलियम ब्रेकफोर्ड का 'वाथेक' (१७८२) वालपोल की कृति से भी अधिक मध्यकालीन क्रूर घटनापरक है, जिसमें खलीफा की क्रूरता का वर्णन है। इस लोमहर्षक पद्धति के उपन्यासकारो में सबसे जनप्रिय मिसेज ऐन रैडक्लिफ (१७६४-१८२३) हुई। उसके पाच उपन्यासो में सबसे प्रसिद्ध 'दि मिस्ट्रीज़ आफ उडोल्फो' (१७९४) और 'दि इटैलियन' (१७९७) थे। उसने मनोवेगो को कायम रखते अपने दृश्यो को प्राकृतिक पृष्ठभूमि दी और इस प्रकार १८वी सदी की निसर्गप्रिय काव्य-परम्परा का उपन्यास में भी निर्वाह किया। उस नारी ने अपनी कृतियों द्वारा लार्ड वायरन और शेली तक को प्रभावित किया। उपन्यासकारो की इसी लोकरजन परम्परा में मैथ्यूग्रेगरी लेविस (१७७५-१८१८), चार्ल्स रावर्ट मैटूरिन (१७८२-१८२४), मिसेज शेली आदि थे। इन्होने 'दि माक' (१७९६), 'टेल्स आफ टेरर', 'टेल्स् आफ वडर' (लेविस)'मेलमोथ दि वाडरर' (मैटूरिन) और 'फ्रैकेन्स्टाइन' लिखकर लोमहर्षक उपन्यन्यासो का भडार भरा इनमें मिसेज़ शेली का लिखा 'फ्रैकेन्स्टाइन' इस प्रकार के उपन्यासो में वडा सफल हुआ

जेन आस्टिन (१७७५-१८१७)

उन्नीसवी सदी में सही उपन्यास-कला का जन्म हुआ। ऐसा नही कि लोमहर्षक उपन्यासो का अन्त हो गया हो क्योकि पाठको के मनोरजन के साधन-स्वरूप इस प्रकार के उपन्यासो का सृजन होना स्वाभाविक ही था, जब ऐसे पाठको की कमी न थी। परन्तु उन्नीसवीं सदी अपने नये वातावरण के साथ आई। उपन्यास अब केवल मनोरजन की सामग्री न थी। वरन् स्पष्ट कला के रूप में सिरजा जाने लगा। इस परम्परा का आरम्भ स्टिवेन्सन केरेक्टर की कन्या जेन आस्टिन (१७७५-१८१७)ने किया साहित्य में उसकी सूझ सर्वथा नई थी। न तो उसे उसके पूर्ववर्तियो ने प्रभावित किया और न यूरोपिय उथल-पुथल ने। उसने लोमहर्षक उपन्यासो पर अपनी कृतियो से भरपूर चोट भी की (देखिये उसका—'नार्थेंगर अबे')। उसने वर्णन और यथार्थवादी सूक्ष्मता को वडा महत्व दिया और उसकी लेखनी से पहली बार कला प्रसूत होकर 'प्राइड एड प्रेजुडिस' (१८१३) के रूप में आई। उसके चरित्रो में अनूठापन कुछ न था। समाज में घर-घर चलते-फिरते हाड-मास के जीव थे। जेन आस्टिन के सक्षिप्त डायलाग भी वडे चुटीले हैं। उनकी शक्ति लम्बे वक्तव्यो में जब-तब नष्ट हो जाती है इसमें विशेषत दो परस्पर विरोधी पात्रों का चित्रण है। यही रूप हमें उसके दूसरे उपन्यास 'सेन्स एड सेन्सिविलिटी' (१८११) में भी मिलता है। जेन आस्टिन ने 'मैन्सफील्ड पार्क' (१८१४), 'एम्मा' (१८१६) और 'परसुएशन' (१८१७) नामक तीन और उपन्यास लिखे परन्तु कोई उसके 'प्राइड एड प्रेजुडिस' के स्तर तक न उठ सका

सर वाल्टर स्काट

इसी काल-प्रसार मे सर वाल्टर स्काट ने भी अपने प्रसिद्ध उपन्यास लिखे, परन्तु जेन आस्टिन के उपन्यासो से सर्वथा भिन्न। ऐतिहासिक उपन्यास-परम्परा का प्रारम्भ सर वाल्टर (१७७१-१८३२) ने किया। ज्ञान और सुरुचि मे शायद सर वाल्टर का जोड नही। घटनाओ की खोज और अध्ययन मे उसने असाधारण परिश्रम किया। आलोचना में भी उसने बडी उदारता दिखाई। जेन आस्टिन की कला को अपनी अपेक्षा अत्यधिक ऊँचा घोषित किया। वह स्काच था, एडिनबरा के एक वकील का पुत्र, और साहित्य में, विशेषत स्काटलैंड की ख्यातो में, उसे बडी दिलचस्पी थी। उसने तत्सम्बन्धी कुछ कविताएँ भी लिखी, परन्तु यशस्वी वह अपने उपन्यासो के कारण ही हुआ। अभिजातकुलीयता के स्वाद ने उसे घृणा के भार से दबा दिया था। फिर भी उसका हाथ निरन्तर खुला रहा और धन की आवश्यकता बराबर बनी रही। उसके 'जर्नल' में धन-सम्बन्धी उसकी व्यग्रता का बडा करुण सकेत मिलता है। धन की आवश्यकता ने उसे उपन्यास लिखने को और भी बाध्य किया। मेरिया एजवर्थ ने अपना 'कैसिल रैक्रन्ट' (१८००) लिखकर ऐतिहासिक उपन्यास का रूप रखा था। परन्तु वस्तुत वह परम्परा स्काट के हाथो सँवारी गई। उसमें उसने पृष्ठभूमि, वातावरण आदि प्रकृति के स्पर्श और पिछले युगो के सयोग से चित्रित किए जो न फील्डिंग ने किया था न आस्टिन ने। सहीमे, उसमे मध्यकालीन हीरो की असाधारणता हमें विशेष प्रभावित करती है परन्तु उस युग के समाज और सामान्य जनता की जितनी प्राजल झलक हमें उसके दृश्यो से मिलती है और कही नहीं।

उसका पहला उपन्यास 'वेवरली' (१८१४) १७४५ के जैकोबिन विद्रोह के चित्र उपस्थित करता है। उसी परम्परा में उसके उपन्यास 'गाई मैनरिंग' (१८१५), 'दि ऐन्टीक्वेरी' (१८१६), 'ओल्ड मार्टेलिटी' (१८१६), 'दि हार्ट आव मिडलोथियन' (१८१८) और 'राबराय' (१८१८) भी लिखे गये। इनमें स्मृति और कल्पना दोनो एकत्र मिलते हैं। दोनो उसे सम्मिलित रूप से विधायिनी प्रतिभा प्रदान करते हैं। क्रूसेडो-सम्बन्धी उपन्यास 'आइवान्हो' (१८२०) और 'दि टेलिस्मान' (१८२५) अत्यन्त लोकप्रिय हुए। 'कैनिलवर्थ' (१८२१) और 'दि फार्चुन्स आव निगेल' (१८२२) में अत्यन्त आकर्षक रूप में एलिजाबेथ और जेम्स प्रथम के सम्बन्ध की घटनायें वर्णित हैं। उसने केवल स्काटलैंड और इग्लैंड के इतिहास से ही घटनायें चुनकर नही अनुप्राणित की, अपने 'क्वेन्टिन डरवर्ड' (१८२३) मे तो फ्रास के राजदरबार को भी अपनी लेखनी का आधार बनाया। परन्तु इस प्रकार उसका इधर-उधर भटक जाना ही मात्र या क्योंकि वह स्काटलैंड की स्थिति को वस्तुत. न भूल सका। 'सेन्ट रोमन्स वेल' (१८२४) और 'रेड गान्टलेट' (१८२४) की कथाओ के लिए वह फिर स्काटलैंड की ओर अभिमुख हुआ।

स्काट आज भी ऐतिहासिक उपन्यासो में रुचि रखनेवाले पाठको का मनोरजन करता है। अपने परवर्ती ऐतिहासिक उपन्यासकारो को भी उसने कम प्रभावित न किया। बुलवर लिटन, थैकरे, रीड, जार्ज एलियट तक उसके ऋणी हैं। उसका प्रभाव कालान्तर में फ्रांस से रूस तक और अतलातिक सागर पार अमेरिका तक व्यापक बना।

उन्नीसवी सदी की उपन्यास-परम्परा में अन्त मे लव पीकाक (१७८५-१८६६) का उल्लेख कर देना आवश्यक होगा। शैली में भिन्न होकर भी पीकाक 'रोमैंटिक साहित्य' का शत्रु था। उसने रोमैंटिक साहित्य का मखौल उडानेवाले व्यग्यात्मक उपन्यासों की एक परिपाटी ही खडी कर दी। उसके उपन्यासो में मनोरजन की सामग्री प्रचुर है, जिसके प्रमाण हैं उसके 'मेड मोरियन' (१८२२), 'मिस फार्चुन्स आव एल्फिन' (१८२६), और 'क्रोचेट कैंसिल' (१८३१)। उसने भी अपने परवर्ती उपन्यासकारो पर अपना प्रभाव डाला। जार्ज मेरेडिथ और आल्डस हक्स्ले दोनो को उपन्यास के क्षेत्र में अपने प्रयोग करने मे पीकाक से प्रभूत प्रेरणा मिली।

: १२ :

डिकेन्स से आज तक

चार्लस डिकेन्स उन्नीसवी सदी का सबसे बडा उपन्यासकार है। अनेक लोगो के विचार से तो वह अनेकार्थ में इग्लैंड का सबसे प्रधान उपन्यासकार है। इस पिछले मत का चाहे कोई न माने परन्तु इसे स्वीकार करने में सभवत किसी को आपत्ति न होगी कि डिकेन्स चोटी का उपन्यासकार है। अपनी विनोदात्मक उपन्यास-शैली में तो नि सन्देह वह बेजोड है। उसका विनोद कभी साहित्य पर बोझ बन कर नही आता, उसमें घुलामिला प्राण बन कर आता है। स्वाभाविकता उसका प्राण है। डिकेंस को जीवन साध्य है, प्रिय, परन्तु वह अपने वातावरण से क्षुब्ध है, अपने समाज से घृणा करता है। उसकी प्रवृत्ति विद्रोहात्मक थी और उसके उपन्यासो में भी उसका विद्रोह झलक आता है पर उसे परिस्थितियो से मजबूर होकर मध्यवर्गीय आचार से समझौता कर लेना पडा। 'पिकविक पेपर्स' (१८३६-३७) इसका प्रमाण है। 'आलिवर ट्विस्ट' (१८३८) में हास्य के ऊपर कारुणिकता की छाया स्पष्ट है। वह समसामयिक समाज की हृदयहीनता के विरुद्ध अपनी आवाज उठाता है। 'निकोलस निकल्बी' (१८३८-३९) में प्लाट महत्त्व धारण कर लेता है और चरित्र-चित्रण शक्तिम हो उठता है। बेन जानसन की भाति 'दि ओल्ड क्युरियासिटी शाप' (१८४१) में मध्यवर्ग के आचार पर प्रखर व्यग्य है। 'बार्नेबी रज' (१८४१) डिकेन्स का पहला ऐतिहासिक उपन्यास है। उसके 'मार्टिन चुजलविट' (१८४४) मे अमेरिका के दृश्य भरे हैं, क्योकि यह कृति

उसकी अमेरिका-यात्रा के बाद सम्पन्न हुई। १८४३ और ४८ के बीच उसने 'क्रिस्मस बुक्स' लिखी। यह कृति जिसमें मानव-दया में उसकी निष्ठा प्रदर्शित है, बडी लोकप्रिय हुई। करुण रस उसके 'डम्बे एण्ड सन' (१८४८) में जैसे फूट पडा है। 'डैविड कापरफील्ड' (१८५०) में उसकी उपन्यास-कला आत्म कथानक का रूप धर लेती है। चरित्र-चित्रण भी इसमें गजब का हुआ है।

डिकेन्स के प्रधान उपन्यास 'ब्लीक हाउस' (१८५३) के साथ उसके कृतित्व का दूसरा युग आरम्भ होता है। 'हार्ड टाइम्स' (१८५४) उसने कारलाइल को समर्पित किया है और 'लेसेज्-फेयर' (अनिरुद्ध व्यापार) पर वह प्रखर प्रहार है। 'लिटिल डोरिट' (१८५७) मे वह आफिसो की दीर्घ-सूत्रता पर चुटीला व्यग्य करता है। 'दी टेल आफ टू सिटीज़' (१८५९) फ्रेंच राज्य-क्रान्ति सम्बन्धी सुन्दर उपन्यास है, जो उसकी प्रतिभा को नई दिशा की ओर ले जाता है, स्काट से सर्वथा भिन्न। 'ग्रेट एक्स्पेक्टेशन्स' (१८६१) और 'आवर मुचुअल फ्रेंड' (१८६४) नामक दो उपन्यास उसने और लिखे। कभी जब वह 'दि मिस्ट्री आव एडविन ड्रूड' लिख ही रहा था कि मृत्यु के क्रूर कर ने उसकी जीवन-गति बन्द कर दी।

डिकेन्स निरन्तर लिखता रहा, साथ ही निरन्तर भ्रमण भी करता रहा। उसने अमेरिका के श्रोताओ को अपने उपन्यास, कविता की भाति पढ-पढ कर सुनाये। इससे उसे लाभ प्रचुर हुआ पर जीवन शिथिल हो गया, यद्यपि श्रोताओ की उपस्थिति उसके लिये मादक शराब का काम करती थी। १८७० मे जब वह मरा, इग्लैड के जीवन से जैसे प्रधान सार चला गया। वह अपने समाज के अगाग मे समा चुका था। शा के पहले फिर कोई ऐसा न हुआ जो डिकेन्स की भाति अग्रेज़ जनता को खिलखिला कर हँसा सकता।

थैकरे

विलियम मेकपीस थैकरे (१८११-६३) डिकेन्स का समकालीन था। पर दोनो दो स्तरो के व्यक्ति थे। डिकेन्स को सही शिक्षा नही मिली थी। उसके पिता को ऋणी होकर अनेक बार जेल का मुंह देखना पडा था। स्वय उसे पहले कारखानो में काम करना पडा। थैकरे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अफसर का, कलकत्ते में जन्मा बेटा था, चार्टर हाउस और कैम्ब्रिज की हवा खाया हुआ। थैकरे जीवन भर जर्नलिस्ट रहा और लगातार 'पच' मे लिखता था। उसने 'कार्नहिल' मैगेज़िन का सम्पादन भी किया। 'वैनिटी फेयर' (१८४७-४८) उसकी पहली कृति थी, जिसने उसे उपन्यासकार के रूप में अमर कर दिया। दस वर्ष बाद उसने 'दि वर्जीनियन्स' (१८५७-५९) लिखा। इसी बीच उसने 'पेन्डेनीज़' (१८४८-५०), हेनरी एस्मड' (१८५२) और 'दि न्यूकम्स' (१८५३ ५५) भी लिखे। वह बावन साल की आयु में मरा, डिकेन्स से भी छोटी उम्र

में। वह अच्छे प्रकार के रहन-सहन का आदी था, इससे अपनी आय बढाने के लिये उसने भी लन्दन और अमेरिका में अपनी कृतिया सुना कर धन कमाना शुरू किया। उसकी आय प्राय डेढ लाख रुपये प्रति वर्ष तक हो गई थी पर उसे उससे सन्तोष न होता था।

थैकरे को अपना समाज प्रतिकूल न पडा और उसने उसकी खिल्ली भी नही उडाई। वह अपनी कृतियो में उसका प्रतिविम्ब मात्र उतारता गया। नि सन्देह इसके लिये उसमें असाधारण प्रतिभा थी। न कृतघ्नता के प्रति उसका आक्रोश तीव्र था। उसकी दृष्टि यथार्थ के प्रति गहरी थी और चरित्र-चित्रण उसका डिकेन्स से कहीं सूक्ष्म होता था। 'वैनिटी फेयर' इस दिशा में बडा मार्मिक उपन्यास है।

लिटन

बुलवर लिटन (१८०३-७३) की प्रतिभा सर्वतोमुखी है। स्काट की ही भाँति उसने भी ऐतिहासिक उपन्यास लिखे और 'दि लास्ट डेज आव पाम्पेयाई' (१८३४) में कला की दृष्टि से उससे ऊपर उठ गया। वह कला उसके 'रिएन्जी' (१३८५) मे शायद और भी निखरी। 'जनोनी' (१८४४) उसका लोमहर्षक उपन्यास है, जिसकी लोमहर्षकता में वह अपने 'पाल क्लिफर्ड' (१८३०) में सामाजिक आक्रोश का भी पुट देता है। लिटन ने कुछ और भी उपन्यास लिखे—'युजीन अराम', 'दि कैक्स्टन्स', 'माई नावेल', 'पेल्हम', 'दि कमिंग रेस'। इनमे अन्तिम में उसने 'यूरोपियन' (काल्पनिक—भावी सामाजिक) उपन्यास की बुनियाद डाली।

किंग्स्ले, किंगलेक, बर्टन, बरो हडसन, जेफ्रीज

चार्ल्स किंग्स्ले (१८१९-७५) ने पहले तो अपने उद्देश्यपरक उपन्यास 'यीस्ट' (१८४८) और 'आल्टन लाक' (१८५०) लिखे, फिर ऐतिहासिक 'हाइपैटिया' (१८५३) और 'वेस्टवर्ड हो' (१८५५)। 'दि वाटर बेबीज' नामक उसने एक फैन्टेसी भी लिखी। ए० डब्लू किंगलेक (१८०९-९१) अपने 'इयोथेन' (१८४४) में पूर्वात्य पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। सर रिचर्ड बर्टन ने 'अरेबियन नाइट्स' अनुवाद प्रस्तुत किया, और जार्ज बरो ने अपनी भ्रमक प्रवृत्तियुक्त उपन्यास—'लार्वेग्रो' (१८५१) 'दि रोमानी राई' (१८५७) और 'वाइल्ड वेल्स' (१८६२) लिखे। हडसन और रिचर्ड जेफ्रीज भी बरो की परम्परा के ही साहित्यिक थे।

रीड, डिजरेली, मिसेज गैस्केल, कालिन्स

चार्ल्स रीड डिकेन्स के सामाजिक आक्रोश की परम्परा का उपन्यासकार था, जिसमें सामग्री की यथार्थता अधिक प्रामाणिक थी। 'इट इज नेवर टू लेट टु मेन्ड' (१८५६) कारागार के जीवन का भडाफोड करता है। मध्यकालीन पृष्ठभूमि पर 'दि क्लायस्टर एण्ड दि हर्थ' (१८६१) नाम का एक सजीव ऐतिहासिक उपन्याम भी रीड

ने लिखा। बेन्जेमिन डिज़रेली (१८०४-८१) का व्यक्तित्व राजनीति मे बड़ा था और उसके उपन्यास 'कोनिंग्सबी (१८४४), 'सिबिल' (१८४५) और 'टेंक्रेड' (१८४७) उसकी राजनीति 'आइडियालोजी' (सिद्धान्त) प्रस्तुत करते हैं। डिज़रेली उन्नीसवी सदी की राजनीति मे सबसे महान् व्यक्ति (प्रधान मन्त्री) था। इससे अधिकतर उसका साहित्य उसके राजनीतिक व्यक्तित्व में खो जाता है। पर हैं उसके उपन्यास सुन्दर, जिनमें वह 'टोरी' नीति से सँवारे नये इंग्लैंड का स्वप्न देखता है। मिसेज़ गैस्केल (१८१०-६५) ने अपने उपन्यासो 'मेरी बार्टन' (१८४८) और 'नार्थ एण्ड साउथ' (१८५५) में व्यावसायिक क्रूरता का भंडाफोड किया। उसने 'केन्फोर्ड' नामक एक और सामाजिक उपन्यास लिखा। विल्की कालिन्स (१८२४-८९) ने 'दि ऊमन इन ह्वाइट' (१८६०) और 'दि मूनस्टोन' (१८६८) लिखकर होरेस वालपोल और मिसेज़ रैडक्लिफ की लोमहर्षक उपन्यास-परम्परा पुनरुज्जीवित की। उसकी कला उनसे कही प्रखर और प्रौढ थी।

एमिल और चारलोटी ब्रोन्टी, जार्ज एलियट

मौलिक उपन्यासो के सृजन में दो बहनो—एमिल ब्रोन्टी (१८१८-४८) और चारलोटी ब्रोन्टी (१८१६-५५) को बडी सफलता मिली। इनमे से पहली ने अपने 'वुदरिंग-हाइट्स' (१८४७) द्वारा प्रभूत ख्याति कमाई है, दूसरी के अनेक उपन्यास 'जेन आयर' (१८४७), 'शर्ले' (१८४९), 'विलेट' (१८५३), 'दि प्रोफेसर' (१८५७) हैं। उसके दृश्य घरेलू हैं, यथार्थवादी। जार्ज एलियट (१८१९-८०) का नाम भी इनके साथ ही लिया जाता है। सो केवल इसलिए नही कि वह भी नारी थी। उन्नीसवी सदी के नारी उपन्यासकारो में वह सबसे अधिक विदुषी थी। वह नारी थी परन्तु उसने पुरुप के नाम से लिखा। वह दार्शनिक मेधा की नारी थी और उसकी उत्कट दार्शनिकता ही हर्बर्ट-स्पेन्सर से विवाह में घातक हुई। अपने पति विख्यात लेखक लेवेस के कहने से उसने उपन्यास लिखना शुरू किया। 'सीन्स आव क्लारिकल लाइफ़' (१८५७) को तत्काल सफलता मिली और 'ऐडम बीड' (१८५९) ने उसका यश प्रतिष्ठित कर दिया। 'दि मिल आन दि फ्लोस' (१८६०) भी उसकी एक ऊंची कृति है। जिसमे 'ऐडम बीड' की ही भांति हृदय और मेधा का संघर्ष है। 'सिलास मारनर' (१८६१) में वह संघर्ष प्राय एक समष्टि का रूप धर लेता है। 'रोमोला' (१८६३) इटैलियन पुनर्जागरण-काल का ऐतिहासिक उपन्यास है और 'फेलिक्स होल्ट' (१८६६) रिफार्म बिल का अनुवर्ती। उसका 'मिडिलमार्च' (१८७१-७२) उन्नीसवी सदी के प्रधान उपन्यासो में गिना जाता। ऐतिहासिक युगो और दार्शनिक चिन्तन से वह यथार्थ की चतुर्वर्ती भूमि पर इसमे उतर आती है और समाज सहसा इसमें प्रतिबिम्बित हो आता है। बाल्ज़क जैसे उसकी इस कृति में उतर आया हो।

टोलोप, जार्ज मेरेडिथ (१८२८-१९०९)

ऐन्थनी ट्रोलोप (१८१५-८२) एक दूसरी कोटि का उपन्यासकार है, सहज वर्णन-प्रवाह का। उसकी प्रखर कल्पना निरन्तर दृश्यो और चरित्रो का एकत्र सृजन करती जाती है। वह पुरुष रूप में जेन आस्टेन है, पर साथ ही अपनी सीमाओ को पूर्णत जानने वाला। इसीसे वह अनाधिकार चेष्टा नही करता। उसकी कृतियाँ 'दि वार्डेन' (१८५५) और 'वारचेस्टर टावर्स' (१८५७) सुघड हैं। ट्रोलोप से कही मौलिक जार्ज मेरेडिथ (१८२८-१९०९) है। इधर के सालो में मेरेडिथ का यश घट गया है क्योंकि उसके उपन्यासो की कठिनता आशुगम्य नही। परन्तु उसकी मेधा अस्वीकार नही की जा सकती। यह सत्य है कि अपने 'हीरो' की ही भाँति, जिस पर वह हँसता है, वह स्वय गर्वीला है। उसके लिए उपन्यास केवल कहानी का आधार नही है। उसके विचार में जीवन का आदर्श रूप उसकी सहज स्वाभाविकता मे है, जिसके मस्तिष्क, हृदय, शरीर सभी नकारात्मक निर्देश हैं। इसी व्याख्या के लिए वह विशुद्ध और सूक्ष्म भावनाओ का विश्लेषण करता है। इसी मनोयोग से वह अपने दूसरे उपन्यासो 'रिचर्ड फेवरेल' 'ईवान हैरिंग्टन' और 'हैरी रिचमाड'—की सृष्टि करता है। भावो के विश्लेषण के अर्थ में ही वह अपने कथानको में नारी को केन्द्रीय स्थान प्रदान करता है। 'रोडा फ्लेमिंग' (१८६५) 'विट्टोरिया' (१८६७) और 'डायना आव दि क्रासवेज' (१८८५) भी उसी प्रेरणा से प्रस्तुत हुए। उसकी सबसे प्रख्यात कृति 'दि इगोइस्ट' (१८७७) है। उसके डायलोग बडे सजीव हैं। उसके 'वन आव आवर काकर्स' (१८९१) में उसका दृषिकोण और भी जटिल हो गया है। जटिलता उसकी लोकप्रियता में बाधक हुई है।

जेम्स

मेरेडिथ की ही सूक्ष्म चेतना हेनरी जेम्स (१८४३-१९१६) को भी मिली थी। जेम्स अमेरिका में जन्मा और शिक्षित हुआ था परन्तु इग्लेड में वस गया था। उसे नागरिकता का अधिकार उसकी मृत्यु से केवल एक वर्ष पहले मिला। 'डेजी मिलर' (१८७९)में उसने यूरोपीय जीवन के प्रति अमरीकी प्रतिक्रिया का चित्रण किया और 'दि ट्रैजिक म्यूज' (१८९०) तथा अन्य उपन्यासो में अग्रेज-जीवन का अध्ययन। जैसे-जैसे उसकी साहित्यिक सक्रियता बढ़ती गई, वैसे ही वह शैली में जटिल होता गया। उस जटिलता का दर्शन हमें 'दि विग्स आव दि डव' (१९०२) 'दि ऐम्बैसेडर' (१९०३) और विशेषत. 'दि गोल्डन बोल' (१९०४) में होता है। जेम्स यूरोप, विशेषकर उसकी अभिजात कुलीनता के प्रति बडी कमजोरियाँ लेकर, यूरोप गया था। उसके जो आदर्श थे, वे उसे वहा न मिले, फिर भी उसने अपनी कल्पना को साहित्य में सार्थक कर दिया, यद्यपि चित्र अयथार्थ फलत जटिल होते गए। उसकी शैली बडी सूक्ष्म है और अपनी कल्पना के प्रति उसकी निष्ठा इतनी प्रबल है कि अपने आपके साहित्यिक विस्तार में वह चित्रण की एकरूपता के कारण यथार्थ लगने लगता है, मिथ्या भी निरन्तर के अकन मे नित्य सिद्ध होने लगता है।

टामस हार्डी

टामस हार्डी इंग्लैंड के सबसे महान् उपन्यासकारो में से है। टामस हार्डी (१८४०-१९२८) और हेनरी जेम्स समसामयिक हैं, पर दोनो की दुनिया अलग-अलग है। हार्डी का पहला उपन्यास १८७१ में 'डेस्परेट रेमेडीज़' निकला और तब और 'जूड दि अब्स्क्योर' के १८९५ में प्रकाशन के बीच वह निरन्तर उपन्यास लिखता गया। उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण निम्नलिखित हैं—'दि रिटर्न आव दि नेटिव' (१८७८), 'दि ट्रम्पेट मेजर' (१८८०), 'दि मेयर आव कैस्टर-ब्रिज' (१८८६), 'दि उडलैंडर्स' (१८८७) और 'टेस आव दि डुर्बविल्स (१८९१)'। हार्डी पेशे से शिल्पी था और अपनी कला को भी उसने शिल्प का महत्व दिया। इमारत की एक-एक ईट उसने प्लान के मुताबिक बिठाई। परन्तु वह प्रारब्धवादी था। प्रारब्ध मनुष्यो को निरन्तर उनके अन्त की ओर खीचता जाता है, सदा उनके सुख की सम्भावनाओ से दूर, दुःख की ओर। उसका जीवन के प्रति यह दृष्टिकोण प्राय दर्शन का रूप धारण कर लेता है। उन्नीसवी सदी का भौतिक आशावाद और ईसाई धर्म की सान्त्वनाएं, दोनो में उसका अविश्वास था जो निरन्तर बढता गया और जीवन का अर्थ उसके लिए प्राय कुछ नही रहा। जीवन को उसने निरुद्देश्य माना। फिर भी प्रारब्ध के शिकार मानवो के प्रति उसकी गहरी सहानुभूति है और उसकी यह सहानुभूति उन्ही तक सीमित नही, कीडे-मकोडो तक को छू लेती है। हार्डी कथानक का भी असाधारण शिल्पी है और घटनाचक्र निरन्तर सहज रीति से उसके उपन्यासो मे घूमता है। देहात का जीवन उसके उपन्यासो में मूर्तिमान हो उठता है। 'टेस' और 'जूड दि आब्स्क्योर' में तो उसकी कला ग्रीक ट्रैजेडी का रूप धारण कर लेती है। वर्डस्वर्थ की सम्मोहक करुण प्रकृति उसके हाथ में नितान्त क्रूर बन जाती है। उसके सुन्दरतम चरित्र वे हैं जो नगर के जीवन से दूर गाँवो के अकृत्रिम वातावरण में रहते हैं और नगर की सत्ता स्वीकार नही करते। हार्डी को एक ओर तो 'दूसरे दर्जे का रोमैंटिक', दूसरी ओर साहित्य के महानतम व्यक्तियो में से एक होने का श्रेय मिला है। इसमें सन्देह नही कि उसका स्थान अंग्रेजी साहित्य में बहुत ऊँचा है परन्तु उसका साहित्य आगे भी पाठको को आकृष्ट करेगा, इसमें सन्देह है।

सैमुएल बटलर

डारविन के वानस्पतिक विज्ञान ने जिन अनेक अंग्रेज साहित्यिकों को प्रभावित किया था, सैमुएल बटलर (१८३५-१९०२) भी उन्ही में था। अपने उपन्यास 'दि वे आव आल फ्लेश' (१९०३) मे उसने स्विफ्ट की व्यंग्यात्मक शैली का सहारा लिया और विक्टोरियाकालीन समाज के तथाकथित समन्वित दृष्टिकोण पर गहरा प्रहार किया। उसकी कृतियाँ 'अरबोन' (१८७२) और 'अरबोन रिविजिटेड' (१९०१) उस

दिशा में और चुटीली सिद्ध हुई । समसामयिक मूल्यो पर उनकी व्यग्यात्मक चोटें दिलचस्प हैं। बटलर बौद्धिक क्रान्तिकारी है और उसकी कृतियाँ नितान्त मौलिक हैं।

स्टिवेन्सन

१८७०-८० की दशाब्दी में उपन्यासो के आकार में विशेष परिवर्तन हुआ। भारी-भरकम उपन्यास लोगों की रुचि से गिर गए और प्रकाशको ने भी देखा कि छोटे उपन्यास छापने में ही अधिक लाभ है। राबर्ट लुई स्टिवेन्सन (१८५०-६४) इस परिवर्तन के स्रष्टाओ में प्रथम था। उसका 'ट्रेजर आइलैंड' प्रकाशित होते ही लोकप्रिय हो गया। छोटे उपन्यासो के साथ ही उन छोटी कहानियों का भी प्रादुर्भाव हुआ, जिनका आरम्भ एडगर एलेन पो ने अमेरिका मे पहले ही कर दिया था। स्टिवेन्सन की 'न्यू अरेबियन नाइट्स' (१८८२) के बाद उसके और भी रोमैंटिक उपन्यास निकले—'किडनैप्ड' (१८८६), 'दि ब्लैक एरो' (१८८८), 'दि मास्टर आव बैलेन्ट्री' (१८८९), 'दि रांग बाक्स' (१८८९)। 'डाक्टर जेकेल और मिस्टर हाइड' में स्टिवेन्सन ने नेक-बद का एक रूपक प्रस्तुत किया जो आज भी काफी जनप्रिय है। स्टिवेन्सन कलाकार था और उसकी कला क्या उपन्यास, क्या कहानियाँ, क्या निबन्ध, क्या पत्र-लेखन सभी सहज और असामान्य हैं। उसके निबन्ध तो शैली के प्रतीक हैं—जैसे उसका पाठक सामने हो और उससे वह सीधा बात कर रहा हो। उसके भ्रमण-वृत्तान्त तो सर्वथा अनूठे हैं।

वीडा, हैगर्ड, डायल, वार्ड, केन, कारेली, एलेन, वालेस, उडहाउस

उसी काल कुछ ऐसे उपन्यासकारो का प्रादुर्भाव हुआ जो बडे सफल हुए, परन्तु जो कहानी कहने मात्र में निपुण थे और जिन्होने पाठक जनता को देखकर लिखा और लोकप्रिय हो गए। सही उपन्यासकारों की श्रेणी में उन्हें नही रखा जा सकता, यद्यपि उनमें से कई उनके स्तर को छू लेते हैं। ये हैं–वीडा, राइडर, हैगर्ड, ए. कानन डायल, मिसेज हम्फ्री वार्ड, हाल केन, मारी कारेली, ग्राट एलेन, एडगर वालेस और पी. जी. उडहाउस। ये प्लाट की खूबी और कथानक की रोचकता से पाठको का मन हर लेते हैं। इन्होने धन भी अपनी कृतियो से काफी कमाया। इनमें हाल केन और उडहाउस विशेष उल्लेखनीय हैं। उडहाउस ने तो अग्रेजी साहित्य को अत्यन्त मुहावरेदार भाषा भेंट की।

गिसिंग और किपलिंग

जार्ज गिसिंग और रुडयार्ड किपलिंग ने भी इसी काल लिखा। दोनो ऊपर लिखे उपन्यासकारों से अपनी कला और मर्यादा में भिन्न थे। गिसिंग (१८५७-१९०३) लोकप्रिय नही हो सका, यद्यपि उसमें मेधा अथवा साहस की कमी न थी। अपने 'वर्कर्स इन दि डान' (१८८०) 'डिमोस' (१८८६), 'दि नेदर वर्ल्ड' (१८८९) और 'न्यू ग्रब

स्ट्रीट' (१८९१) में उसने अपने समाज के भ्रष्टाचार का भयानक भंडाफोड किया। उसकी अवहेलना शायद उसकी अप्रिय सत्य के प्रति व्यग्रता और प्रहार के कारण हुई। उसकी कृतियो में रजन का अभाव था। 'दि प्राइवेट पेपर्स आव हेनरी राईक्राफ्ट' (१९०३) में वह अपेक्षाकृत अधिक सफल हुआ। किपलिंग (१८६५-१९३६) बडा लोकप्रिय हुआ। वह साम्राज्यवादी था और उसका दृष्टिकोण तब के इग्लैंड को अधिक प्रिय था, जब वह साहित्य के क्षेत्र में उतरा। स्टिवेन्सन की ही भाँति कहानी और छोटे उपन्यास लिखने में उस्ताद था। उसकी यह सक्षिप्त शैली भी उसकी लोकप्रियता में सहायक हुई। उसकी सफलता का एक और कारण उसके कथानको की भारतीय पृष्ठभूमि भी था। उसकी कहानियो—'प्लेन टेल्स फ्राम दि हिल्स' (१८८८)—और उपन्यासो—'दि लाइट दैट फेल्ड' (१८९१) और 'किम' (१९०१) से उसे प्रभूत ख्याति मिली। इनके अतिरिक्त उसकी और कृतियाँ—'स्टाकी एण्ड को' (स्कूल जीवन की कहानियाँ) (१८९९), 'दि जगल बुक्स', (१८९४-१८९५) 'पक आव पूक्स हिल' (१९०६) भी जानी हुई हैं। शैली में किपलिंग सरल है वाइबिल की तरह और कल्पना में चित्रमय, परन्तु विचारो में सर्वथा प्रतिक्रियावादी है। 'कालो के प्रति गोरो के दायित्व' वाले सिद्धान्त का वह प्रबल पोषक है, यद्यपि उसकी कविता 'रेसेशनल' में इग्लैंड के खतरो की ओर सकेत है।

गाल्जवर्दी

जान गाल्जवर्दी (१८६७-१९३३) इस दृष्टिकोण का विरोधी आत्मालोचन का उपन्यासकार है। 'दि आइलेंड फारीसीज़' (१९०४) में उसने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया। उसका 'दि मैन आव प्रापर्टी' उच्च मध्यवर्ग के जीवन का चित्रण है। उसने अपने सिद्धान्त की परिभाषा 'सम्पत्ति के विरुद्ध सौन्दर्य का सघर्ष' दी है। उसकी लेखनी के स्पर्श से वर्णन मूर्ति धारण करता जाता है। उसने आधी सदी के इग्लैंड के उच्च मध्यवर्गीय जीवन का जैसा यथार्थ और सफल चित्रण किया है, वैसा दूसरा कोई न कर सका। वह शीघ्र इग्लैंड और यूरोप के अन्य देशो में लोकप्रिय हो भी गया, यद्यपि आज उसकी लोकप्रियता उतनी नही जितनी कभी पहले थी। उसका अध्यवसाय उद्देश्य-परक है। आर्नाल्ड बेनेट (१८६७-१९३१) ने 'दि कार्ड' में व्यक्तिगत महत्वाकाक्षा की सफलता का अकन किया जो प्राय आत्म-परक था। उसकी 'दि ओल्ड वाइव्ज टेल' (१९०८) पर मोपासाँ का स्पष्ट प्रभाव है। उसकी तीन और कृतियाँ जानी हुई हैं—'क्लेहैंगर' (१९१०) 'हिल्डा लेसवेज़' (१९११) और 'दीज ट्वेन' (१९१६)।

वेल्स

एच० जी० वेल्स (१८६६-१९४६) ने इस काल उपन्यास और कहानी-लेखन में एक नया संसार रचा—वैज्ञानिक आधार पर निर्मित उसकी प्रतिभा सर्वतोमुखी

थी। चोटी का वैज्ञानिक तो वह था ही, साथ ही वह इतिहासकार, निबन्धकार और उपन्यासकार भी था। उसने अपने युग को अपनी प्रतिमा से अनेक प्रकार से विविध मात्रा में प्रभावित किया। उपन्याम के क्षेत्र में वह 'दि टाइम मशीन' (१८९५) लेकर उतरा। फिर एक के बाद एक उसके 'दि इन्विजिबुलमैन' (१८९७) 'दि वार आव दि वर्ल्ड्स' (१८९८), 'ह्वेन दि स्लीपर वेक्स' (१८९९), और 'दि फर्स्ट मेन इन दि मून' (१९०१) आते गए। इनमें केवल वैज्ञानिक स्थितियो का उपन्यासगत विवरण था, परन्तु शीघ्र ऐसे उपन्यासो की सृष्टि में वेल्स लगा जिनमें दृष्टिकोण और सिद्धान्त झलकने लगे। 'दि फुड आव दि गाड्स' (१९०४) और 'इन दि डेज़ आव दि कामेट' (१९०६) इसी प्रकार की कृतियाँ हैं। वेल्स विश्वासो से सोशलिस्ट था और उसने प्लेटो की ही भाति १९०५ में एक काल्पनिक शब्द-ससार रचा—'ए माडर्न युटोपिया'। उसने कुछ विनोदी, हास्यप्रधान उपन्यास—'दि ह्वील्स आव चान्स' (१८९९) 'लव एण्ड मिस्टर लेविशम' (१९००) 'क्रिप्स' और (१९०६) भी लिखे। इनमें अन्तिम सुघड़ कृति है। वेल्स कलाकार से अधिक विचारप्रधान है और यद्यपि अनेकत वह सुन्दर है, उसकी शैली 'जर्नलीज' भी हो गई है। 'ऐन वेरोनिका' (१९०९) और 'दि न्यू मेकियावेली' (१९११) फिर भी सुन्दर हैं। उसका 'टोनो वगे' (१९०९) असाधारण व्यग्यकृति है, प्रचुर टिकाऊ। 'दि हिस्ट्री आव मिस्टर पोली' (१९१०) में वह एक वार फिर 'किप्स' की परम्परा की ओर मुडा और 'मिस्टर ब्रिटलिंग सीज़ इट थ्रू' (१९१६) में उसने महासमर के प्रति अपनी प्रतिक्रिया मूर्त की। उसका दृष्टिकोण दिन-दिन विश्ववादी होता जा रहा था और वैज्ञानिक होने के कारण विशेपत वह मानव-जाति को एक इकाई के रूप में देखने लगा। इमी विचार का परिणाम 'दि आउटलाइन आव हिस्ट्री' (१९२०) नामक उसका इतिहास हुआ। 'दि वर्ल्ड आव विलियम क्लिसोल्ड' (१९२६) और 'जोन एण्ड पीटर' (१९१८) में उसकी विचार-सरणी और भी गद्यपरक हो गई। परन्तु निश्चय वेल्स अद्भुत प्रतिभा का व्यक्ति था और उसके 'किप्स' तथा 'टोनो वगे' बने रहेगे।

कानरड, मूर, माम, फोरेस्टर, पाविज, मिस मेकाले, वालपोल, प्रीस्टले

सामाजिक उपन्यासो की परम्परा बीसवी सदी में स्वाभाविक ही चल रही है, परन्तु अन्य प्रकार के उपन्यास भी बराबर लिखे जाते रहे हैं। जोजफ कोरजेनियोम्की नामक पोल (१८५७-१९२४) ने भी कुछ दिलचस्प उपन्यास लिखे। वह जोजेफ कानरड नाम से प्रसिद्ध है। उसके उपन्यासो में जहाजी-समुद्री जीवन का अच्छा खाका बन पडा है। उसकी प्रसिद्ध कृतिया हैं—'अलमेयर्स फाली' (१८९५), 'दि निगर आव नरकिसर' (१८९८), 'यूथ' (१९०२) 'टाइफून' (१९०३) 'नोस्ट्रोमो' (१९०४), 'लार्डजिम' (१९०६), 'दि ऐरो आव गोल्ड' (१९१९)। कानरड अग्रेजी के विदेशी निर्माताओ मे

से है। जर्ज मूर (१८५२-१९३३) ने फ्रेंच साहित्य से प्रभावित होकर कुछ उपन्यास और आत्मपरिचायक ग्रंथ रचे। इनमे मुख्य हैं 'कन्फेशन्स आव ए यगमैन' (१८८८), 'हेल एण्ड फेयरवेल अवे' (१९११), 'साल्वे' (१९१२), 'वेल' (१९१४), 'ईस्थर वाटर्स' (१८९४), 'दि ब्रूक केरिथ' (१९१६), 'हेलाइज एण्ड अवेलार्ड' (१९२१)। इनमें अन्तिम धार्मिक उपन्यास है। सामरसेट माम (१८७४) ने अपने उपन्यासो में वडी सफलता पाई है और आज सतहत्तर वर्ष की आयु में भी लिखता जा रहा है। 'लिज़ा आव लैंवेथ' (१८९७) के लन्दन-जगत को छोड अपने पिछले उपन्यासो में उसने चीन, मलाया आदि पूर्वात्य देशो का जीवन व्यक्त किया है। उसकी 'दि ट्रैम्वलिंग आव ए लीफ' (१९-२१), 'दि पेन्टेड वेल' आदि सुघड कृतिया हैं। आलोचकों ने उसकी उपेक्षा की है परन्तु यथार्थ के निरूपण में वह निपुण और साहसी है। यह सत्य है, उसके उपन्यास अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

माम के विपरीत ई० एम० फोरेस्टर को आलोचको का भी साधुवाद प्राप्त है। वह इधर के काल में सुन्दर कलाकार माना जाता है। १९११ मे ही प्राय. वत्तीस वर्ष की आयु में (जन्म १८७९) 'हावर्ड्स एण्ड' (१९२२) द्वारा उसे सफलता मिली परन्तु उसकी ख्याति 'ए पैसेज़ टु इण्डिया' (१९२४) द्वारा प्रतिष्ठित हुई। यह उपन्यास किपलिंग के उपन्यासो का जवाव था। फोरेस्टर चित्रो का धनी है यद्यपि वह कम से कम शब्द-वर्णों का प्रयोग करता है। उसकी यह स्तुत्य कृति व्यग्यात्मक है। टी० एफ० पाविज़ का उपन्यास 'मिस्टर वेस्टन्स गुड वाइन' (१९२८) भी व्यग्य की ही यद्यपि रहस्यवादी पृष्ठभूमि पर वना है। उसी काल मिस रोज़ मेकाले ने भी अपने 'अरफन आइलेंड' (१९२४) के साथ साहित्य-क्षेत्र में पदार्पण किया। इस काल के दो लोकप्रिय उपन्यासाकार ह्यू वालपोल (१८८४-१९४१) और जे० वी० प्रीस्टले (जन्म १८९४) हैं। वालपोल ने अपने 'दि उडेन हार्स', 'दि कैथेड्रल' (१९२२) में लन्दन के दृश्य प्रतिविवित किए। उसका ऐतिहासिक उपन्यास 'रोग हेरिस' (१९३०) सुघड कृति है। 'दि गुड कम्पेनियन' ने प्रीस्टले को सम्मान दिया और 'ऐंजिल पेवमेन्ट' (१९३०) आदि द्वारा वह निरन्तर ख्याति कमाता गया। समसामयिक इग्लैंड उसके उपन्यासो में खुल पडा है। इग्लैंड के प्रति उसका प्रेम भी उसकी ख्याति का कुछ मात्रा में कारण है।

लारेन्स

इधर के उपन्यासकारो में से कुछ ने उपन्यास को आत्मानुभूति और अपने विचारो के प्रकाशन का माध्यम भी वनाया है। डी० एच० लारेन्स (१८८५-१९३०) असामान्य उपन्यासकार हो गया है, जाने हुए उपन्यासकारो मे सर्वथा भिन्न। यह उसके कटु जीवन के अनुभवो का परिणाम था। उसका पिता खान का मजूर था और लारेन्स ने मजूरो की सर्वहारा, घृणित, कठिन, दैन्य, क्रूर, भयानक दुनिया आखो देखी थी और आज की

सभ्यता उसे नितान्त घृणास्पद लगी। उसके विचार से इसने मानव-भावावेगो को नष्ट कर दिया था जिनका निवर्तन ही अपेक्ष्य है। अपनी सफल कृति 'सन्स एण्ड लवर्स' (१९१३) में उसने इस दिशा की ओर अस्पष्ट सकेतमात्र किया। फिर उसका अदम्य भावस्रोत 'दि रेनबो' (१९१५), 'विमेन इन लव' (१९२१) और 'आरोज़ राड' (१९२२) में जैसे फूट पडा। अपने 'कगारू' (१९२३) और 'दि प्लूम्ड सर्पेन्ट' (१९२६) में जैसे वह सभ्य दुनिया छोड मेक्सिको की ओर भाग चला। जीवन की उसकी खुली व्याख्या और चित्रो के कारण उसकी कुछ कृतियाँ जब्त कर ली गई थी, जिसकी प्रतिक्रिया में उसने जीवन की नग्नता को और खोलते हुए चुनौती के रूप में 'लेडी चैटरलीज लवर' (१९२८) लिखी—यौन, निरावृत्त अकन। परम्परा के शत्रु लारेन्स ने साप्रत के प्रति विद्रोह किया परन्तु वह स्वय यौन की परिधि से बाहर न जा सका। काश अपनी अनुभूति और 'दृष्टि' का उपयोग उसने सभ्यता के पुनर्निर्माण में किया होता।

आल्डस हक्स्ले (१८९४)

लारेन्स के साहस का लाभ कुछ तरुण कलाकारो को भी हुआ। उनमें आल्डस हक्स्ले प्रधान है यद्यपि वह लारेन्स के साध्य से, उसके दर्शन से, नितान्त दूर है। इतनी सूक्ष्म मेधा इस शताब्दी के उपन्यास-निर्माण में, उस साहित्य के दार्शनिक विश्लेपण में किसी और को न मिली। यद्यपि यह वक्तव्य दर्शन और निरूपण के पक्ष में ही सत्य है। पिता की दिशा में उस मेधावी को चार्ल्स डारविन के सहायक टामस हक्स्ले का सुदूर पैत्रिक प्राप्त है और माता के पक्ष में मैथ्यू आर्नल्ड का योग, फिर वह आज के ससार के एक असाधारण प्रतिभाशील परिवार का व्यक्ति है। उसका बौद्धिक स्तर इग्लैंड के पिछले उपन्यासकारो से सर्वथा भिन्न है। किसी साहित्यकार ने प्रथम महासमर के बाद के इग्लेंड के बौद्धिक जीवन का विश्लेपण ऐसा समर्थ और सही नही किया जैसा हक्स्ले ने। अपने उपन्यास 'क्रोमयेलो' (१९२१) और 'एण्टिक हे' (१९२३) में उसने वचक जीवन का व्यग्यात्मक निदर्शन किया है। 'दोज़ बैरेन लीव्ज़' (१९२५) में एक प्रकार की गवेषणा है—अनुसन्धान और प्राप्ति। यौनानुभूति उसके लिए लारेन्स की भाँति आनन्दानुभूति नही है। वह उससे दूर है। मानव को वह बौद्धिक स्तर पर सर्वथा खोलकर देख लेता है, निर्लिप्त, यद्यपि कष्टकर उद्रेक से अशक्य हो जाता है। उसकी सुन्दरतम, सर्वथा मौलिक कृति 'प्वाइ ट काउन्टर प्वाइ ट' (१९२८) है। जिस यान्त्रिक ससार में वेल्स प्रेम-विह्वल हो सकता था, उससे हक्स्ले को किचित भी सन्तोष नही होता। इस यान्त्रिक दुनिया को वह अपने 'ब्रेव न्यू वर्ल्ड' (१९३२) में और भी फटकारता है। धीरे-धीरे मानव-पशु के इस विवेचक की प्रवृत्ति और भी अन्तर्मुख हो जाती है और उसके 'आइलेस इन गाज़ा' (१९३६) से लगता है जैसे उपन्यास अब उसके विचारो का वहन नही कर सकते। 'एन्ड्स एण्ड मीन्स' (१९३७) में तो वह

कथानक तक को छोड देता है और उसका चिन्तन कला से दूर दर्शन का रूप धारण कर लेता है। कुछ अजब नही जो, जैसा उसने लेखक से कहा था, 'टाइम मस्ट हैव ए स्टाप' उसे अपनी कृतियो में सबसे सुन्दर और महान् लगता हो। और कुछ अजब नही कि उसकी प्रेरणा साप्रति जगत को भूलकर 'अलख' को खोजने लगे। आल्डस हक्स्ले ने अभी हाल रामकृष्ण-मिशन के लास ऐन्जिलिस मठ के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द से कान फुकाकर शिष्यत्व ग्रहण कर लिया है।

डोरोथी रिचार्डसन, वर्जीनिया उल्फ

कुछ उपन्यासकारो ने इधर मनोवैज्ञानिक ढग से भी अन्तर्जीवन को व्यक्त करना शुरू किया है। इनमें डोरोथी रिचार्डसन पहली है। उसने अपने 'प्वाइन्टेड रूफ्स' (१९१५) में अकेले एक चरित्र की चेतना का अध्ययन किया है। इस दिशा में मिसेज वर्जीनिया उल्फ (१८८२-१९४१) को विशेष सफलता मिली। उसके उपन्यासो मे प्रधान हैं—'दि वाएज आउट' (१९१५), 'नाइट एण्ड डे' (१९१९), 'जैकाब्स रूम' (१९२२), 'मिसेज डैलोवे' (१९२५), 'टु दि लाइटहाउस' (१९२७), 'आर्लैंडो' (१९२८), 'दि वेव्ज़' (१९३१) और 'दि इयर्स' (१९३७)। वर्जीनिया उल्फ की उपन्यासकला में चित्रकला का 'इम्प्रेशनिज़म' उतर आया है। इस प्रकार उसके उपन्यास एक प्रकार का आन्तरिक एकान्त-चित्रण हो गए हैं। परन्तु उसके वर्णन में माधुर्य और प्रवाह है, विनोद है। विनोदनात्मरजन उसके 'आर्लैन्डो' का प्राण है।

जेम्स ज्वायस (१८८२-१९४१)

इस अध्याय का अन्त जेम्स ज्वायस की कृतियो के उल्लेख बिना नही किया जा सकता। जेम्स ज्वायस को नितान्त सराहा भी गया है, खुली गाली भी मिली है। अच्छा-बुरा वह जैसा भी हो, शताब्दी का वह शायद सबसे मौलिक उपन्यासकार है। लघु कहानियो के जगत् में अपने सग्रह 'डब्लिनर्स' द्वारा नाम कमा वह उपन्यासो के क्षेत्र में उतरा। 'ए पोर्ट्रेट आव दि आर्टिस्ट ऐज ए यंगमैन' (१९१६) के आधार से उठकर उसकी सर्वथा वैयक्तिक कला 'उलिसेज़' (१९२२) में प्रौढ़ हो गई। उसके बाद 'फिनेगन्स वेक' (१९३९) प्रकाशित हुआ। उसने सचेतक-अचेतक दोनो जीवनों का सर्वांगीण रूप में चित्रण किया। उसके दर्शन में देश और काल की सज्ञा कृत्रिम है, सब कुछ सापेक्ष्य है, कला उसी सापेक्ष्यता का निरूपण है। 'उलिसेज' का जगत यौन चित्रण का अनगीकृत निरावृत्त अतरग है। उसकी कला धर्म और चर्च के प्रति उसके विद्रोह मे निखरी। ज्वायस विश्लिष्ट जगत् में समष्टि ढूढता है। उसकी कृतियां इसी 'एकायनता' (एकता) के अन्वेषण का परिणाम हैं। ज्वायस के उपन्यासो का प्रभाव युग सृजको पर गहरा पडा।

आनन्द

भारतीय मुल्कराज आनन्द ने मूल अंग्रेजी मे अपने उपन्यासो की रचना कर उस भाषा में एक नया पूर्वीय स्वाद डाला। उसने अपने उपन्यासो को प्रगतिशील विचारो का वाहक बनाया। मुल्कराज सुन्दर गठा गद्य लिखता है। 'कूली' 'टू लीव्ज़ एण्ड ए बड' तथा 'दि अनटचेबुल' उसकी उज्वल कृतियाँ हैं।

: १३ :

अंग्रेजी गद्य-साहित्य

(अट्ठारहवी सदी तक)

यहा हम केवल उस गद्य का इतिहास लिखेगे जो अधिकतर निबन्धगत है, कहानी-उपन्यास और नाटक सम्बन्धी गद्य से भिन्न।

कैक्स्टन, मेलारी, बर्नर्स, टिन्डेल, कवरडेल, फाक्स, हुकर

अंग्रेजी गद्य का आरभ दसवी सदी से होता है। उसके पहले और काफी बाद तक लेटिन का बोलबाला था। जब उसका स्थान अंग्रेजी ने लिया तब भी उसकी परम्परा जीवित रही। लोग लेटिन में बोलते-लिखते थे और शिष्टता तथा शिक्षित की तो पहचान ही उसके प्रयोग से होती थी। लेटिन का जब बोलबाला या साधारण प्रयोग उठ गया तब भी उसकी परम्परा बनी रही और इसी से उस काल अंग्रेजी के दो रूप हो गए, एक तो लेटिन-बोझिल, दूसरी सहज अंग्रेजी। लेटिन भाषा के रूप में तो उठ गई पर गद्य की कृत्रिमता में अपनापा छोडती गई। इसी बोझिल भाषा में ईल्फ्रिक ने लिखा। अल्फ्रेड का 'क्रानिकल' सरल शैलीवाली अंग्रेजी में लिखा गया। नार्मन-विजय (१०६६) के बाद लेटिन शैली का अंग्रेजी गद्य मिट गया, अल्फ्रेड (मृत्यु ६०१) प्राय सौ वर्ष बाद तक चलता रहा। इस प्रकार प्राजल सरल अंग्रेजी अपनी स्वाभाविक धारा में वह चली यद्यपि नार्मनो के साथ आई फ्रेंच भाषा का दबदबा उस धारा पर कुछ काल के लिए हावी हो गया। उस प्राचीन गद्य की परम्परा का आरम्भ विशेषत तेरहवीं सदी में हुआ। सेन्ट मार्गरेट, सैन्ट कैथरीन सेन्ट जुलियाना के चरित आदि उसके स्मारक हैं। १४७६ में इग्लेंड में विलियम कैक्स्टन का छापाखाना खुला। कैक्स्टन के प्रेस और स्वय उसके प्रयास ने इगलड को स्टैन्डर्ड भाषा दी। टामस मेलारी ने १४७० में 'मार्टी डी आर्थर' लिखी जो उसी प्रेस में छपी। लार्ड बर्नर्स ने फिर १५२० में 'क्रानिकल' प्रस्तुत किया जो अनुवाद मात्र था, परन्तु जो चौदहवी सदी का जीवित चित्र प्रतिबिंबित करता था। इसी अनुवाद के साथ कुछ लोगो के विचार से आधुनिक अंग्रेजी गद्य का आरम्भ होता है। इसके बाद ही अंग्रेजी बाइबिल प्रस्तुत हुई जो अंग्रेजी गद्य का सहज

अकृत्रिम अथच सशक्त रूप है। विलियम टिन्डेन (१४९०-१५३६) और माइल्स कवरडेल (१४८८-१५६८) उसके विधायक थे। जान वाइक्लिफ की १४ वी सदी वाली शैली मे नया अनुवाद कल्पनातीत सुन्दर उतरा। टिन्डेल ने जो काम शुरू किया था, उसके प्राणदण्ड के बाद कवरडेल ने उसे पूरा किया। बाइबिल के अनुवाद के साथ ही तद्वर्ती धार्मिक साहित्य का भी उदय हुआ। उनमे जान फाक्स (१५१६-८७) का 'बुक आफ मार्टीर्स' सबसे अधिक विख्यात है। उसमे प्रोटेस्टैन्ट शहीदो का बडा भावुक वर्णन है। इसका प्रोटेस्टैन्ट धर्म में प्राय १०० वर्ष बाद तक बोलबाला बना रहा। रिचर्ड हुकर (१५५४-१६००) ने १६ वी सदी के अन्त में अपनी 'लाज़ आफ एकलेज़िएस्टिकल पालिसी' सुन्दर सहज भाषा में लिखी, यद्यपि उसकी शैली अग्रेजी और लेटिन के बीच की थी, जिसमें स्पष्टता, शालीनता तथा देशीयता का समान पुट था।

ऐशम, नार्थ

लेडी जेन ग्रे के शिक्षक रोजर ऐशम ने 'टोक्सोफिलस' (१४५५) और 'दि स्कूल मास्टर' (१५७०) में तत्कालीन गद्य शैली उद्घाटित की। १६वी सदी के तीसरे चरण के आरम्भ में सर टामस नार्थ ने प्लूटार्च के 'जीवन चरितो' का अनुवाद किया, जो शेक्सपियर आदि के तत्सम्बन्धी ऐतिहासिक नाटको का आधार बना। वैसे ही फिलेमन हालैण्ड द्वारा अनुदित प्लिनी की 'नेचुरल हिस्ट्री' भी शेक्सपियर के बडे काम आई।

हालिन्शेड

रफैल होलिन्शेड ने 'क्रानिकल' के रूप में अग्रेजी जीवन को प्रतिबिंबित किया था। वह भी शेक्सपियर की लेखनी के जादू से १६ वी सदी के अन्त में मूर्तिमान् हुआ। उसी सदी के अन्त में रिचर्ड हक्लुइट (१५५३-१६१६) ने 'दि प्रिन्सिपल वायज़ेज' नामक यात्रा-ग्रन्थ प्रस्तुत किया और १७ वी सदी में राबर्ट बर्टन (१५७७-१६४०) ने 'अनाटमी आफ मलेंकली' (१६२१) लिखकर मानव-मस्तिष्क की क्रियाओ पर प्रकाश डाला।

बेकन

अग्रेजी गद्य का पहला वास्तविक महान् व्यक्ति फ्रासिस बेकन (१५६१-१६२६) था। वस्तुत वह काल अग्रेजी गद्य के विकास में बडा महत्व रखता है। उसी काल बाइबिल का 'सम्मत पाठ' भी प्रस्तुत हुआ। बेकन की विचार-धारा ने तत्कालीन धार्मिकता को अपनी वैज्ञानिकता से चुनौती दी। बेकन स्वय तो रूढिवादी ही था परन्तु जिस मन स्थिति को उसने उत्साहित किया, वह धर्म-विरोधिनी सिद्ध हुई। बेकन की अधिकतर कृतियां लेटिन में हैं और यह कुछ कम आश्चर्य की बात नही कि इग्लैंड का तत्कालीन महत्तम गद्यकार अग्रेजी से उदासीन रहा हो। १५९७ में उसके 'एसेज़' प्रकाशित हुए। इन निबन्धो की शैली अत्यन्त कसी हुई, सूत्रवत है। एक शब्द का व्यवहार

भी वह आवश्यकता से अधिक नही करता ।

ब्राउन, टेलर, मिल्टन

१७वी सदी का पूर्वार्द्ध गृहयुद्ध और प्युरिटन-विजय का था। उस काल का गद्य गम्भीर और शालीन है, जिसका प्रभाव आज के पाठकों पर गहरा पडता है। सर टामस ब्राउन (१६०५-८२), जेरमी टेलर (१६१३-६७) और जान मिल्टन ने तव अपनी शक्तिम शैली से अग्रेजी गद्य को सनाथ किया। ब्राउन पडित था, राजनीति से सर्वथा दूर। जादू और अमानुषिक घटनाओ में उसका विश्वास था, यद्यपि वैद्य होने के कारण विज्ञान से उसका सीधा सम्बन्ध था। उसकी शैली में दोनो का समावेश है और वह नितान्त सुन्दर वन पडी है। अपने 'हाड्रियोटेफिया' और 'अर्न वरियल' (१६५८) और 'रेलिजिओ मेडिसी' में जिस शैली का ब्राउन ने उद्घाटन किया, वह आश्चर्यजनक है। जेरेमी टेलर ब्राउन का समकालीन था और उसकी कृतियाँ 'होली लिविंग' (१६५०) तथा 'होली डाइग' (१६५१)—प्रवचन के क्षेत्र में भापा की शालीनता में अपना जोड नही रखती। टेलर पादरी था। मिल्टन वाएँ हाथ से लिखा करता था और अधिकतर उसने लिखा भी लेटिन में ही। व्याख्यान और लेखन की स्वतन्त्रता के पक्ष में १६४४ में जो उसने अपनी 'एरियोपेजेटिका' लिखी, वह शक्ति तथा शालीनता में लासानी है, यद्यपि उसके वाक्यो की पेचीदगी कुछ सरल नहीं। अनेक वार तो उसने अग्रेजी और लेटिन की खिचडी तक कर दी है।

वाल्टन, ड्राइडन

१७वी सदी के आइज़क वाल्टन (१५९३-१६८३) का 'कम्प्लीट ऐंगलर' (१६५३) सदियों पार आज भी पाठकों को आकृष्ट करता है। उसने अनेक जीवन-चरित लिखे और यह 'ऐंगलर' तो गृहयुद्ध के समय ही लिखा गया, जिसमें मछली मारने के व्यसन के साथ ही अग्रेजी देहात का जीवन भी प्रतिविम्बित हुआ। १६६० के पुनरारोहण के साथ अग्रेजी गद्य का एक नया रूप शुरू हुआ। चार्ल्स द्वितीय लुई के फ्रासीसी दरवार में प्रवासी के रूप में एक जमाने तक रह चुका था। वह जव स्वदेश लौटा तो लुई के दरबार की अनेक विशेषताएँ साथ लेता आया। उनमें से एक विशेषता फ्रेंच भाषा की चपलता, सरलता और उसका सहज प्रवाह था। अग्रेजी पर फ्रेन्च भाषा की इस रीति की छाया पडी। रायल सोसाइटी की नींव ने न केवल वैज्ञानिक विषयो की छानवीन शुरू की। वरन् उसका प्रभाव साहित्य और दर्शन पर भी पडा। कवि और नाटककार जान ड्राइडन ने साहित्य-सम्वन्धी निवन्ध तभी लिखे। उनमें 'ऐसे आफ ड्रामेटिक पोएज़ी' (१६६८) सवसे पहले प्रकाशित हुआ और 'प्रिफेस टु दि फेबुल्स' (१७००) सवसे पीछे। ड्राइडन की शैली बडी सहज और सरल थी।

इसी काल टामस होव्स (जन्म १५८८) और जान लाक (१६३२-१७०४)

ने भी अपने राजनीतिक ग्रन्थ लिखे—होब्स ने 'लेवायथान' (१६५१) और लाक ने 'सिविल गवर्नमेन्ट'। लाक का निबन्ध 'ऐन एसे कनसर्निंग ह्यूमन अन्डरस्टैंडिंग' (१६६०) का प्रभाव सारे यूरोप पर पड़ा।

पेपिज, एवेलिन, हाइड

१७वीं सदी का सबसे विख्यात गद्यकार सेमुएल पेपिज़ (१६३३-१७०३) था। उसने साधारण जन की साधारण बातें अपनी कृति में लिखीं, पहली बार और अपने जीवन की बातें सविस्तर। पेपिज़ रायल नेवी का विधाता और रायल सोसाइटी का प्रधान था। उसकी डायरी सादी और अद्भुत है, जिसका जोड़ अंग्रेजी साहित्य में नहीं। पेपिज़ के कुछ और समकालीन थे जिन्होंने उसी की भाँति अपने जीवन की भी अपने लेखों पर छाया डाली। जान एवेलिन (१६२०-१७०६), रायल सोसाइटी का सदस्य, राजदरबारी और पेपिज़ का मित्र था, जिसने उद्यानों, मैदानों, यात्राओं आदि का वर्णन लिखा। वह वस्तुत चार्ल्स द्वितीय के सभासदों से रुचि में बड़ा भिन्न था। पेपिज़ और एवेलिन की ही भाँति क्लेयरेन्डन का अर्ल एडवर्ड हाइड (१६०९-७४) जब अपने विषय में लिखने चला तब राजनीति से घने रूप से सम्बन्धित होने के कारण उसे 'हिस्ट्री आफ दि रिबेलियन' लिख देना पड़ा। उसकी शैली जटिल है फिर भी तत्कालीन घटनाओं का उससे भरपूर ज्ञान हो जाता है।

डिफो, स्टील, स्विफ्ट

क्वीन एन का काल अंग्रेजी साहित्य के समुन्नत युगों में से है। उस काल के अधिकतर गद्य ने उपन्यास का रूप लिया। 'राबिन्सन-क्रूसो' के लेखक डिफो ने १८वीं सदी में फिर भी गद्य का रुख एक नयी दिशा में फेरा—पत्रकारिता की दिशा में। 'दि रिव्यू' पत्र-शैली का ही नमूना है। रिचर्ड स्टील (१६७२-१७२९) और जोजेफ एडिसन (१६७२-१७१९) ने उस दिशा में और सफल प्रयत्न किये और उनके पत्रों के कालमों में जो मध्यवर्ग के पाठकों के लिए छपते थे, आचार, फैशन, साहित्य सभी कुछ रूपायित होता था। निबन्ध-लेखन भी उस काल एक नये स्तर पर उतरा। एडिसन ने अपने 'स्पेक्टेटर क्लब' में एक नयी दुनिया ही रच डाली। जोनाथन स्विफ्ट (१६६७-१७४५) ने बड़ी निर्भीकता से जानी हुई दुनिया के व्यंग्यात्मक चित्र भिरजे। 'दि बैटिल आफ दि बुक्स' और 'ए टेल आफ ए टब' (१७०४) से लेकर 'गुलिवर्स ट्रैवेल्स' (१७२६) तक की कृतियाँ एक के बाद एक साहस और शैली की दुनिया रचती गयीं। उनके 'जर्नल टु स्टेला' से प्रमाणित है कि उसके व्यंग्य ने शत्रु नहीं उत्पन्न किये। 'ड्रेपियर्स लेटर्स' (१७२४) में उसने राजनीतिक वंचकता का घृणापूर्वक भण्डाफोड़ किया। शक्ति, सूझ और व्यंग्यात्मक विनोद में स्विफ्ट अकेला है। उसने अंग्रेजी गद्य को नयी शक्ति और दिशा दी।

: १४ :

आधुनिक गद्य

वटलर, मैन्डेविल

१८वी सदी में इग्लैंड के सक्रिय सघर्षमय जीवन ने भाषा की मर्यादा इस मात्रा में स्थापित कर दी कि वह अभिव्यक्ति का असाधारण साधन बन गयी। राजनीति, विज्ञान, धर्म सभी क्षेत्रो में उसकी अनिवार्य आवश्यकता प्रतीत हुई और सर्वत्र उसने समर्थ निर्माताओ का सक्रिय योग पाया। जिस प्रकार होब्स और लाक ने अपने राजनीतिक सिद्धान्त दार्शनिक परन्तु सुगम गद्य में व्यक्त किये थे, उसी प्रकार धार्मिक क्षेत्र में भी जोजेफ बटलर (१६९२-१७५२)-सा विवेचक हुआ। 'दि अनालोजी आफ रिलीजन' (१७३६) द्वारा उसने धर्म की स्थापनाओ का सशक्त समर्थन किया। परन्तु दुनिया तेजी से बदलती जा रही थी और लोगो में परम्परा के प्रति सन्देह घर करता जा रहा था। ऐसो में बर्नार्ड मैन्डेविल (१६७०-१७३३) असामान्य मौलिकता का व्यक्ति था। 'दि फेबुल आफ दि बीज़' (१७१४) में उसने राज्य की बचकता पर गहरी चोट की। उसके निबन्ध आज के पत्रकारो की कुशल शैली में लिखे गए हैं, सरकार की आलोचना में।

बर्कले, ह्यू म

जार्ज बर्कले (१६८५-१७५३) आदर्शवादी था और जीवन के क्षेत्र में उसने दार्शनिक समस्याओ को सरका दिया। उसने भौतिक ससार के अस्तित्व को न मानकर चेतना को ही मानव ज्ञान का आधार स्वीकार किया। डेविड ह्यू म (१७११-७६) ने भी ज्ञान-चिन्तन में ही अपना गद्य माँजा और देकार्त को अपने अनुशीलन में पुनर्जीवित किया। ह्यू म के 'एसेज़ कसर्निंग ह्यू मन अन्डरस्टैंडिंग' (१७४८) का चिन्तन के क्षेत्र पर गहरा प्रभाव पडा।

गिबन, जान्सन, बासवेल

१८वी सदी में इतिहास का विशेष चिन्तन हुआ है और इतिहास के क्षेत्र में विशेषत गद्य-भारती जगी। ह्यू म स्वय इतिहासज्ञ था यद्यपि उस दिशा में 'दि डिक्लाइन एण्ड फाल आफ दि रोमन एम्पायर' (१७७६) लिखकर एडवर्ड गिबन (१७३७-९४) ने बडा नाम कमाया। उसकी 'आटोबायोग्राफी' स्वय शैली का सुघड नमूना है। उसके इतिहास ने प्राचीन का उद्घाटन किया, जिससे नवीन का सापेक्ष्य मूल्याकन किया जा सका। गिबन की कृति का भी उस काल के ज्ञान पर बडा प्रभाव पडा। प्रसिद्ध डाक्टर सेमुएल जान्सन (१७०९-८४) गिबन के मित्रो में से था। उसके व्यक्तित्व ने अंग्रेजी

साहित्य पर असाधारण प्रभाव डाला। उसका यश अधिकतर जेम्स वासवेल (१७४०-९५) का 'लाइफ आफ जान्सन' पर अवलम्बित है, जिसमें उस महाकाय साहित्यिक के प्रतिपल का जीवन प्रतिबिंबित है। जान्सन का शेक्सपियर की कृतियो का सस्करण (१७६५) उस महाकवि के अध्ययन में बड़ा सहायक सिद्ध हुआ। उसकी भूमिका ने अपने साहस-भरे दृष्टिकोण से एक प्रकार से उसकी रक्षा कर ली। जान्सन की महान् कृति उसकी 'डिक्शनरी' (कोष) (१७४७-५५) है, जिसपर बाद के प्राय समस्त कोष अवलम्बित हुए। शब्दो का जितना ज्ञान उनके निर्माण और विकास के रूप में जान्सन को था, उतना किसी को न था। जान्सन की बौद्धिक चर्चा प्रसिद्ध है। उसके क्लब में बर्क, रेनाल्ड्स (जिसके घर क्लब की बैठकें हुआ करती थी), फाक्स आदि सभी बैठते थे। उसकी वाक्यावली की छाप अग्रेजी साहित्य में उतर गई। उसी चर्चा की गद्य-शैली मे जान्सन ने कावले से ग्रे तक के कवियो का जीवन चरित 'दि लाइव्ज आफ दि पोयट्स' (१७७९-८१) के नाम से प्रकाशित किया। 'दि रैम्बलर' और 'दि आइडिलर' में उसने एडिसन से कही अधिक साहित्यिक पूंजी प्रस्तुत की। इन पत्रो के अतिरिक्त उसके ज्ञान का भण्डार 'ए जर्नी टु दि वेस्टर्न आइलैंड्स आफ स्काटलैंड' (१७७५) में भी खुल पडा है। उसके 'रैसेलस' का हवाला अन्यत्र दिया जा चुका है।

गोल्डस्मिथ, बर्क

व्यक्तित्व में जान्सन से नितान्त लघु होकर भी कर्तृत्व में ओलिवर गोल्डस्मिथ (१७३०-७४) उससे महान् था। उसमे साहित्यिक प्रतिभा कही अधिक थी। जान्सन ने उसके विषय में स्वय कहा है कि उसने साहित्य के सभी प्रकारो को अपनाया और जिस-जिस को उसने अपनाया उस-उस प्रकार को अलकृत किया। नाटककार और उपन्यासकार तो वह था ही, निबन्धकार भी वह असामान्य था। उसके निबन्धो मे उसका व्यक्तित्व खुल पडा है। 'दि सिटिजन आफ दि वर्ल्ड' (१७६२) नामक लेख-सग्रह में उसने एक चीनी यात्री के बहाने जीवन पर कुछ चुटीले वक्तव्य किये हैं। गोल्डस्मिथ भी जान्सन की बैठक का महत्वपूर्ण व्यक्ति था। एडमण्ड बर्क (१७२९-९७) का नामोल्लेख पहले हो चुका है। बर्क असाधारण राजनीतिज्ञ था और अपने काल का प्रमुख वक्ता। उसने लिखा भी बहुत कुछ और जहाँ उसके व्याख्यान शब्दो का जादू प्रस्तुत करते हैं, उसके लेख चिन्तनशील व्याख्या का। 'इम्पीचमेन्ट आफ हेस्टिंग्स' जो उसके वारेन हेस्टिंग्स के विरुद्ध पार्लमेन्ट में दिये व्याख्यानो का सग्रह है, आज भी भारतीयो के आकर्षण का विषय है। उसकी अधिकतर रचनाएँ व्याख्यान के ही रूप में सग्रहीत हुई परन्तु वे भावो की उदारता और भाषा के प्रवाह में अद्वितीय है। 'दि सब्लाइम एण्ड दि ब्यूटिफुल' (१७५६) उसकी प्रारम्भिक कृति है। उसकी पिछली कृतियो में प्रधान हैं—'आन अमेरिकन टैक्सेशन' (१७७४), 'आन कन्सिलियेशन विद अमेरिका'

(१७७५) और 'रिफ्लेक्शन्स आन दि फ्रेन्च रेवोल्यूशन' (१७६०)। वर्क प्राचीनता और परम्परा का वडा हिमायती था। उसकी गद्य-शैली में जान्सन और गिवन दोनों से अधिक प्रवाह है।

ग्रे, काउपर, वेजली, वालपोल, चेस्टरफील्ड, मैकफर्सन

१८वी सदी के गद्य की शैली चिट्ठी-पत्रियो और पत्रिकाओ में भी निर्मित हुई। व्यक्तिगत चिट्ठी-पत्रियो में तो उसकी आकृति अनेक वार बहुत सुन्दर वन पडी है। वास्तव में १८वी सदी में पत्रलेखन को जितनी सुरुचि का आधार मिला शायद कभी नही। टामस ग्रे की चिट्ठियो में उस सदी के साहित्य का एक प्राञ्जल रूप सुरक्षित है और विलियम काउपर की चिट्ठियाँ तो उसकी कविताओ से कही सजीव हैं। उसके वर्णन जीवन का रस निचोड कर रख देते हैं, सुन्दर, भोडे सभी प्रकार के जीवन का। जान वेजली (१७०३-१६) ने जो मेथाडिस्ट सम्प्रदाय का प्रवर्तक था, अपनी डायरी में अपने सघर्ष का सहृदय वर्णन किया है। होरेस वालपोल (१७१७-६७) की चिट्ठियाँ १८वी सदी के जीवन का दर्पण हैं, यद्यपि उनका कलात्मक रूप चेस्टरफील्ड के अर्ले (१६६४-१७६३) के पात्रो में और भी निखर गया है। जेम्स मैकफर्सन (१७३६-६६) अग्रेजी साहित्य का अति करुण व्यक्तित्व है। उसने एक नये किस्म के गतिमान गद्य की अभिसृष्टि की जिसमे उसने अनेक पुरानो कविताओ का रूपान्तर भी किया। वाद में मालूम हुआ कि उनके मूल सिवा मैकफर्सन के दिमाग के और कही न थे। जव उससे मूल कविताओ के सम्वन्ध में प्रश्न किया गया तव वह अपने तथाकथित अनुवादो के आधार पर मूल की अभिसृष्टि करने वैठा। मैकफर्सन के वर्णनात्मक सग्रह का नाम 'दि वर्क्स आफ ओस्सियन' है।

कालरिज, कीट्स, वायरन

१६वी सदी में कालरिज ने अग्रेजी गद्य को अपनी 'वायोग्रेफिया लिटरेरिया' (१८१७) में जो एक नयी चेतना दी, वह थी साहित्यिक आलोचना की। कालरिज के लेखों ने अपने दार्शनिक दृष्टिकोण से १६वी सदी के चिन्तन को वडा प्रभावित किया। आलोचना के क्षेत्र में तो उसने सर्वथा नयी शब्दावली का सृजन किया। जान कीट्स की चिट्ठियो में भी अद्भुत भावुक शक्ति है, जो उन पर उसकी स्वाभाविक काव्य-प्रतिभा की छाया डालती है। परन्तु वास्तव मे वायरन के पत्रो और जर्नलों में समसामयिक जीवन का जितना कल्पनातीत सुखद, सच्चा और क्रूर वर्णन है, उतना और कहीं उपलब्ध नही।

लैम्व (१७७५-१८३४)

चार्ल्स लैम्व अग्रेजी साहित्य के प्रधान निवन्धकारों में हो गया है। उसके 'एसेज आफ एलिया' (१८२३) और 'लास्ट एसेज' (१८३३) अग्रेजी गद्य-साहित्य की

अमर कृतियाँ हो गई हैं। उसकी निबन्ध शैली का प्रारम्भ फ्रेंच निबन्धकार मोन्तेन ने किया था। उसका पहला अंग्रेज समर्थक काउले था। पुराने निबन्धकारों की पृष्ठभूमि पर खड़ा लैम्ब अपने विनोद और नित्य के जीवन का योग देता है। उसका सृजनात्मक हृदय दु.ख बर्दाश्त नही कर सकता था। उसकी बहिन का विक्षेप उसके लिए दारुण विषाद बन जाता है। उसके निबन्धो मे साधारण और सामान्य का अटूट उपयोग हुआ है।

हैज्लिट

निबन्धकार के रूप में लम्ब का मित्र विलियम हैज्लिट (१७७८-१८३०) भी प्रभूत विख्यात हुआ। उसके निबन्धो में आज भी असामान्य ताजगी है। वह शब्दो का शिल्पी है और शब्दो का चुनाव धीरता से करता है। अपनी आलोचना में वह कही समझौता नही करता, प्रखर है। लैम्ब दयार्द्र है, हैज्लिट परुष। अपने 'लिबर अमोरिस' (१८२३) में उसका व्यग्य अपने को भी नही छोड पाता। उसके निबन्ध-सग्रहो में सबसे प्रखर 'दि स्पिरिट आफ दि एज' (१८२५) है। इसमे उसने अपने समकालीनो का शब्द-चित्रण किया है, स्पष्ट और निष्ठुर।

डि क्विन्सी, काबेट, लैन्डर,

डि क्विन्सी (१७८५-१८५९), काबेट (१७६३-१८३५) और लैन्डर (१७७५-१८६४) भी प्राय उसी काल के निबन्धकार हैं। टामस डि क्विन्सी ने तो अपने 'कन्फेशन्स आफ ऐन इग्लिश ओपियम ईटर' (१८२१) द्वारा अंग्रेजी गद्य में एक नया प्रयोग किया। इसमे उसने अफीमची के रूप मे अपनी अनुभूतियो और स्वप्नो का चित्रण किया है। विलियम काबेट बडे दम का निबन्धकार है, जो बडे जोशोखरोश से लिखता है। 'रूरल राइड्स' (१८३०) में उसने इग्लैंड के देहातो का जीता-जागता चित्र खीचा है। यह यात्रा उसने घोडे पर की थी। उसका वर्णन बडा स्वाभाविक है, जो कभी बासी नही हो सकता। वाल्टर सैवेज लैन्डर इन सबसे भिन्न है, शैली, शब्दावली, अनुभूति सब में। अपने 'इमेजिनरी कानवरसेशन्स' (१८२४-२९) मे उसने शाब्दिक सौन्दर्य का एक राज खडा कर दिया।

जेफ्रे, स्मिथ, लोखार्ट

उन्नीसवी सदी के पत्र-पत्रिकाओ में भी साहित्य का रस काफी छलका। इनमें 'दि जेन्टिल मैन्स मैगेजिन' (१७३१-१८६८) पोप के जमाने से ब्राउनिंग के काल तक चली। उन्नीसवी सदी के पहले दशक में ही प्रसिद्ध 'एडिन्बरा रिव्यू' निकली। उसका सम्पादक फ्रैंसिस जेफ्रे (१७७३-१८५०) था, जिसने रोमैंटिक कवियो की अच्छी खबर ली। सिडनी स्मिथ (१७७१-१८४५) भी उस पत्रिका में लिखता था। उसकी पैनी लेखनी का तीखापन असह्य हो जाता था। एडिन्बरा रिव्यू के जवाब में 'टोरियों' (नरमदल वालों) ने १८०९ में अपनी 'क्वार्टर्ली रिव्यू' निकाली। स्काट का

जामाता और चरितकार लोखार्ट अपनी सबल लेखनी का उपयोग 'ब्लैक उड्स-एडिन्बरा मैगेज़िन' के कालमो मे करता था। इस पत्रिका का नाम अक्सर कीट्स की समालोचना में लिखे लेखो के सम्बन्ध में लिया जाता है।

डारविन, हक्स्ले, बेन्थम, माल्थस, मिल

चार्ल्स डारविन वैज्ञानिक था परन्तु अपने विचारो की स्पष्टता के कारण उसकी गद्य-शैली की चर्चा भी की जाती है। अपने 'ओरिजिन आफ स्पिसीज' और 'दि डिसेन्ट आफ मैन' में उसने वैज्ञानिक जटिलता से अलग अकृत्रिम गद्य का प्रयोग किया। डारविन (१८०९-८२) के समर्थन में टी० एच० हक्स्ले (१८२५ ९५) ने भी स्पष्ट गद्य का सहारा लिया। वैज्ञानिको के अतिरिक्त राजनीतिक दार्शनिको का हाथ भी उन्नीसवी सदी के गद्य-निर्माण में काफी रहा है। उन्होने राजनीति में व्यक्तिगत चेतना और व्यापार में स्वतन्त्रता का विचार रखा। जेरेमी बेन्थम (१७४८-१८३२), टी० आर० माल्थस, जेम्स मिल और उसका पुत्र जान स्टुअर्ट मिल (१८०६-७३) इसी क्षेत्र के लेखक हैं। पर उनकी शैली में चिन्तन तथा वाद-प्रतिवाद तो है, साहित्यिक आनन्द नही। हा, जान स्टुअर्ट मिल की 'आटोबायोग्रैफी' में निश्चय कुछ आकर्षण है।

मेकाले, कारलाइल, न्यूमन, रस्किन

टामस बैबिंग्टन मेकाले (१८००-५९) का गद्य अत्यन्त समृद्ध था। सविस्तर ज्ञान रखता हुआ भी वह अपनी विवेचनाओ में कठमुल्ला और एकागी था। उसकी भाषा में गजब का प्रवाह था और शब्दावली का वह आचार्य था। कुवाच्यो के धन में वह बेजोड था। उसकी 'हिस्ट्री आफ इगलैंड' (१८४९-६१) साहित्य की कोटि की है। टामस कारलाइल (१७९५-१८८२) साहित्यकार था परन्तु उसका आधार उसने इतिहास को बनाया। उसकी सुन्दरतम कृतियाँ 'सार्टर रिसार्ट्स' (१८३३-३४) 'आन हिरोज ऐण्ड हिरोवर्शिप' (१८४१) और 'पास्ट एण्ड प्रेजेण्ट' (१८४३) हैं। उसकी ख्याति उसके 'फ्रेंच रेवोल्यूशन' से ही हो गई थी। उसके वाक्य लम्बे, कभी सामान्य, कभी पेचीदे और चिन्तनशील हैं। उसके शब्दो की परम्परा अटूट है, उनका प्रवाह अविच्छिन्न। कारलाइल के आदर्शवाद के साथ ही धार्मिको का आक्सफोर्ड से एक आन्दोलन चला। उनमें अग्रणी जान हेनरी न्यूमन (१८०१-९०) था, जिसने सुन्दर गद्य रचना की। अपनी 'अपोलोजिया प्रो विटा सुआ' (१८६४) में उसने अपने ही आध्यात्मिक इतिहास को भावमयी वाणी में व्यक्त किया। जान रस्किन (१८१९-१९००) उन्नीसवी सदी के साहित्यकारो में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। अपने 'माडर्न पेन्टर्स' में उसने सौन्दर्य के दर्शन को धर्म का स्थानापन्न बना दिया। वास्तु का उसने अपने 'सेविन लैम्पस आफ आर्किटेक्चर' (१८४९) और 'दि स्टोन्स आफ वेनिस' (१८५१-५३) में दार्शनिक विवेचन किया। अपनी शताब्दी के घृणित व्यवसायवाद का उच्छेद उसने अपने 'अन्ट दिस लास्ट' (१८६२) में किया। रस्किन के वाक्य नितान्त लम्बे हैं और शैली पेचीदी है।

आर्नल्ड

उस सदी के साहित्यकारो में मैथ्यू आर्नल्ड (१८२२-८८) का स्थान बहुत ऊँचा है। उसने कविता को जीवन का दर्पण कहा है और आलोचना के साहित्य में प्राय: एक क्रान्ति उपस्थित कर दी। उसने आलोचना के उन सिद्धान्तो का पहली वार निर्माण किया, जिनके आधार पर साहित्य का मूल्याकन हो सके। जहाँ रस्किन ने कला को धर्म का पद दिया था वाल्टर पेटर (१७३९-९४) ने कला का अन्त कला ही में माना और 'कला कला के लिए' का आदर्श चलाया। उसकी 'स्टडीज इन दि हिस्ट्री आफ रिनैसास' गद्य-साहित्य में असामान्य सौन्दर्य प्रस्तुत करती है। वाल्टर पेटर उन्नीसवी सदी के गद्य का अन्तिम शैलीकार था।

वीसवी सदी

वीसवी सदी का गद्य, नाटक और उपन्यासो से भिन्न, अमित है, और उसका मूल्याकन अथवा उल्लेख आसान नही। जी० के० चेस्टर्टन, हिलेयर वेलाक, मैक्स वीर-वोम, लायड जार्ज, विन्स्टन चर्चिल आदि इस काल के कुछ प्रसिद्ध गद्यकार हैं। इनमे पहला अपने विचारो की शक्ति के लिए स्मरणीय होगा, दूसरा अपनी साहित्यिक ताज़गी के लिए, तीसरा शैली की वारीकी के लिए और पिछले दोनो अपने व्याख्यानो की शालीनता के लिए। यह शालीनता चर्चिल के सस्मरणो में फूट पड़ी है। इस काल की शैली का चमत्कार लिटन स्ट्रेची (१८८०-१९३२) के अमूल्य इतिहासाकनो में देखा जा सकता है। 'एमिनेन्ट विक्टोरियन्स' (१९१८), 'क्वीन विक्टोरिया' (१९२१) और 'एलिजावेथ एण्ड एसेक्स' (१९२८) उसकी शालीन कृतियाँ हैं।

इसी सिलसिले मे एक विदेशी गद्यकार का भी यहाँ उल्लेख अनुचित न होगा। भारत के जवाहरलाल नेहरू ने जो चरित मूल अंग्रेजी (माई आटोवायोग्राफी) में लिखा, शैली के विचार से उस भापा मे वह एक मजिल स्थापित करता है। शैली की सरलता में वह रावर्ट लुई स्टिवेन्सन और गार्डिनर(अल्फा आफ दि प्लाऊ)की परम्परा में है, पर साथ ही अपनी राजीनीतिक चेतनाओ और समसामयिक घटनाओ के निरूपण मे वह वेजोड है, उनसे कही आगे।

: १५ :

अमेरिका में अँग्रेजी साहित्य

अँगेजी साहित्य का मूल विकास इग्लैंड मे हुआ, जिसका सक्षिप्त विवरण पीछे दिया जा चुका है। इग्लैंड के उपनिवेशो मे भी अँगेजी साहित्य फूला-फला। सयुक्त-राष्ट्र अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका आदि में भी, जहा अँग्रेज वसे, उस साहित्य की वेल लगी। यहाँ उन सब देशो के साहित्यिक इतिहास का यह विव-

रण दे सकना स्थानाभाव के कारण किसी मात्रा में सम्भव नही। परन्तु अंग्रेजी की उन बाह्य शाखाओ के सम्बन्ध में सर्वथा चुप रह जाना भी उचित नही होगा। इससे उनमें से कम से कम एक—सयुक्त राष्ट्र अमेरिका के साहित्य की ओर सकेत कर देना अनिवार्य है।

इग्लैंड के बाहर अंग्रेजी साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र उत्तरी अमेरिका ही बना भी। उसका अपना साहित्य काफी स्वतन्त्र और विशद भी है यद्यपि हम यहाँ उसका सविस्तार उल्लेख नही कर सकेंगे। केवल सक्षिप्त, प्राय साकेतिक, उल्लेख ही करेंगे, मात्र चोटी के साहित्यकारो का।

एडवर्ड्स, फ्रैंकलिन

वैसे तो सत्रहवी सदी से ही अमेरिका में साहित्य की चर्चा होने लगी थी, १८वीं सदी में सही-सही उसे वहाँ प्रतिष्ठा मिली। प्यूरिटनो में अग्रणी और अमरीका के महान् चिन्तकों में एक जोनाथान एडवर्ड्स (१७०३-५८) था। १८वीं सदी के मध्य की धर्मशास्त्रीय गवेषणाओ में उसका स्थान बहुत ऊँचा है। वह उदारवादी और कॅल्विन-वाद का विशिष्ट अग्रणी था। उसकी प्रारम्भिक चेतना आदर्शवादी और रहस्यवादी थी। अमेरिका के उस काल के लिखनेवालो में वह असामान्य है। बेन्जैमिन फ्रैंकलिन (१७०६-९०) के नाम का राजनीति के अतिरिक्त अमेरिका के पत्र-पत्रिकाओ और पुस्तको के प्रकाशन से भी घना सम्बन्ध है। प्रकाशन के क्षेत्र में तो बेन्जैमिन फ्रैंकलिन ने युगान्तर उपस्थित कर दिया। वस्तुत अमेरिका की अनेक प्रकाशन-शृखलाओ का आरम्भकर्ता वही है। उसकी क्रियाशीलता से साहित्य का कितना उपकार उस देश में हुआ, आज उसका अन्दाज लगा सकना कठिन है।

फ्रेनू, इरविंग

फ़िलिप फ्रेनू (१७५२-१८३२) अमेरिका का पहला विशिष्ट कवि था। वह उस देश की दो साहित्यिक धाराओं—नव-क्लासिकवाद और रोमान्टिक परम्परा—के सन्धि-स्थल पर खड़ा है। वह अमरीकी नेशनलिस्ट था और उसने देश की आजादी और फ्रेंच राज्यक्राति के पक्ष में लिखा। जेफर्सन के प्रजातान्त्रिक दल का वह प्रबल समर्थक था। वह बुद्धिवादी और व्यग्यकार भी है। वाशिंगटन इरविंग (१७८३-१८५९) पहला अम-रीकी लेखक था, जिसकी इग्लैंड में मुक्तकण्ठ से प्रशसा हुई। उसमें रोमास और उससे भी बढकर विनोद और हास्य का पुट है। उसकी प्रसिद्ध कृतियाँ 'ब्रेसब्रिज हाल' (१८२२), 'दि अलहम्ब्रा' (१८३२) और 'ओलिवर गोल्डस्मिथ' (१८४९) है। उसका लिखा जेन-रल वाशिंगटन का जीवन-चरित भी काफी प्रसिद्ध है। इरविंग वैसे तो रोमान्टिक है परन्तु उसका व्यग्य भी बडा प्रखर है।

ब्रिया, कूपर

ब्रियाँ (विलियम कुलेन, १७९४-१८७८) ने अमरीकी कविता को उसकी

पुरानी रूढियों से मुक्त किया। वह रोमान्टिक कवि और प्रकृति का पुजारी ('ए फारेस्ट हिम') था। वह साथ ही प्राचीन 'क्लासिकल'-परम्परा और आदर्शों का भक्त भी ('दि फलड आफ ईयर्स') था। 'न्यूयार्क ईवनिंग पोस्ट' के सम्पादक के नाते उसने काव्य-शैली पर काफी लिखा। वह आज़ादी और राष्ट्रीयता का प्रवल समर्थक था परन्तु रोमान्टिक उदारवादिता की दृष्टि से। जेम्स फेनिमोर कूपर (१७८९-१८५१) उपन्यासकार था। उसने कुछ समुद्री जीवन की कहानियाँ भी लिखी। उसे ख्याति 'लेदर स्टाकिंग टेल्स' से मिली। उसकी अन्य सुन्दर कृतियाँ निम्नलिखित हैं—'दि स्पाई' (१८२१), 'दि पायोनियर्स' (१८२३), 'दि पाइलट' (१८२४)। उसने यूरोपीय और अमरीकी दृश्यो का अकन बडी खूबी से किया है।

पो

एडगर एलेन पो (१८०९-४९) अमरीका का प्रकाण्ड साहित्य-निर्माता हो गया है। उसका प्रभाव सारे अग्रेज़ी साहित्य पर पडा है। वह अभिनेता पिता और अभिनेत्री माता का पुत्र था। शिक्षा उसकी इग्लैंड में हुई थी और साहित्य-साधना उसने पत्रकार के रूप में शुरू की थी। उसने कविता की व्याख्या की और साहित्य के सिद्धान्त तथा प्रयोग दोनो क्षेत्रो में अप्रतिम हुआ। उसने फ्रेंच प्रतीकवादियो और अमरीकी कल्पनावादियो का समर्थन किया। उसके रोमान्स और बुद्धिवाद के सामजस्य ने गद्य-पद्यात्मक कृति 'युरेका' को जन्म दिया। वह सम्पादक और समालोचक भी था। उसकी गद्य और पद्य की कृतियो ने ससार के साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला।

इमर्सन, थोरो

राल्फ वाल्डो इमर्सन (१८०३-८२) उन अमरीकी प्रतिभाओ में था, जिनका ससार के इतिहास में साका चला। वह उच्चकोटि का चिन्तक और निवन्धकार था। वह अग्रेज़ी साहित्य के प्रधान निवन्धकारो में गिना जाता है। उसकी कृतियाँ, 'नेचर' (१८३६), 'दि अमेरिकन स्कालर' (१८३७), 'दि डिविनिटी स्कूल ऐड्रेस' (१८३८) विशेष प्रसिद्ध हैं। उसमें अपने विचारो द्वारा दूसरो के विचारो को उद्वेलित कर देने की अद्‌भुत क्षमता थी। अग्रेज़ और अन्य रहस्यवादी लेखको से वह प्रभावित था। भाषा को उसने द्विधा साधक माना—आध्यात्मिक सत्य के प्रतीक तथा मूर्त भावना के वाहक-रूप में। भाषा की सार्थकता उसके विचार में इन दोनो स्थितियो की पूर्ण एकता द्वारा सत्य-शिव-सुन्दरम् के सृजन में है। उसकी शैली पुष्ट, सक्षिप्त और दार्शनिक है। उसके निवन्ध और कविताएँ 'क्लासिक' वन गई। कलात्मक स्रष्टा के रूप में हेनरी डेविड थोरो (१८१७-६२) का स्थान इमर्सन के निकट ही है। वह प्रकृतिवादी था और वैयक्तिक आध्यात्मिक स्वतत्रता में विश्वास करता था। उस दिशा में उसने 'नष्क्रिय अवज्ञा' (पैसिव रेजिस्टेन्स) का प्रचार किया। इस पद का प्रयोग उसी ने पहलेपहल किया।

महात्मा गाँधी उससे बड़े प्रभावित थे और उसी के शब्दो—पैसिव रेजिस्टेन्स का उन्होंने अपने सत्याग्रही दृष्टिकोण से प्रयोग और प्रचार किया। वह उच्चकोटि का निबन्धकार था। उसकी कृतियाँ 'लाइफ विदाउट प्रिंसिपुल' (१८६२), 'दि मेन उड्स' (१८६४), 'केप गॉड' (१८६५), 'ए याकी इन कैनेडा' (१८६६) आदि जानी हुई हैं। उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति 'वाल्डेन ऑर लाइफ इन दि उड्स' है। उसकी कविताओ के भी दो सग्रह प्रकाशित हैं। प्रकृति-सम्बन्धी उसकी कविताएँ प्रसिद्ध हैं।

हाथार्न, मेल्विल

नथेनियल हाथार्न (१८०४-६४) प्रसिद्ध उपन्यासकार और कहानीकार था। उसने अपने उपन्यासो में आध्यात्मिक आचार-सम्मत यथार्थवाद की साधना की। शैली उसकी बडी निखरी-सुथरी है। ये उपन्यास एक प्रकार के सामाजिक सम्वेदनशील रूपक हैं। पाप की समस्या को उसने अपनी कृतियो में हल करने का प्रयत्न किया। उसका प्रसिद्ध उपन्यास 'दि स्कारलेट लेटर' और अनेक अन्य कृतियाँ उस दृष्टिकोण से प्रस्तुत हुईं। 'दि हाउस आफ दि सेविन गैवेल्स' (१८५१) उसकी विशिष्ट कृतियो में है। हाथार्न ने बहुत लिखा और बहुतो को प्रभावित किया। प्रसिद्ध उपन्यासकार हरमान मेल्विल (१८१९-९१) उन्ही प्रभावितो में था। पहले उसने अपनी समुद्री यात्राओ से प्रभावित हो तत्सम्बन्धी कहानियाँ लिखी, फिर रूढिवाद से सर्वथा मुक्त आध्यात्मिक उपन्यास लिखे। उसने प्रतीक रूप से विश्व का सत्य खोजा और परिणाम हुआ तीन उपन्यास—'मार्डी' (१८४६), 'मोबी-डिक' (१८५१) और 'पियर' (१८५२)। 'मोबी-डिक' उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति मानी जाती है। उसकी कविताओ का भी एक संग्रह छपा। वह हाथार्न का मित्र था। उसकी शैली में दृश्यो को व्यक्त करने की बडी शक्ति है। वह सूक्ष्म से सूक्ष्म और स्थूल से स्थूल का वर्णन अद्भुत क्षमता से कर सकता है। 'मोबी-डिक' ह्वेल मछली के शिकार का अंकन करता है परन्तु वस्तुत वह जीवन की बर्बरता और मानवता के उसमे सघर्ष का चित्रण है।

लागफेलो, लावेल, होम्स

कविता के क्षेत्र में क्या घर क्या बाहर हेनरी वैड्स्वर्थ लागफेलो (१८०७-८२) का नाम बडे आदर से लिया जाता है। उसने सुन्दर छन्दोबद्ध अनुवाद के रूप में ससार के अनूठे साहित्य-रत्नो की भेंट अपने देश को तो की ही, स्वय प्रबन्ध-काव्य लिखने में वह अप्रतिम था। सुन्दर-सरल शैली में वह आध्यात्मिक सत्य अनायास कह जाता था, जो सहज रीति से पाठको की जबान पर चढ जाता था। उसकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं—'ए साम आफ लाइफ', 'दि विलेज ब्लैकस्मिथ', 'दि वार्निंग', 'दि आर्सेनल ऐट स्प्रिंग फील्ड', 'दि बिल्डिंग आफ दि शिप', 'इवेंजेलीनी', 'दि गोल्डेन लीजेन्ड', 'दि साग आफ् हिमावाथा', 'टेल्स आफ ए वेसाइड इन', 'पाल रीवियर्स राइड',

'किंग राबर्ट आफ सिसिली,' 'दि सागा आफ किंग ओलफ', 'दि न्यू इंग्लैंड ट्रैजेडीज', 'माइकेल एँजेलो' आदि। जेम्स रसेल लावेल भी लागफेलो की ही भाँति अमरीकी साहित्य का विशिष्ट निर्माता था। वह वडी सूझ का आलोचक था। उसी काल का आलिवर वेन्डेल होम्स भी सुन्दर निबन्धकार था। उसकी शैली वडी मधुर थी। उसने लिखा भी पर्याप्त। लावेल और होम्स दोनो का अमरीकी गद्य प्रभूत ऋणी है।

ह्विटमैन

उन्नीसवी सदी के उत्तरार्द्ध के अमरीकी साहित्य में वाल्ट ह्विटमैन (१८१९-९२) के आकार की प्रतिभाएँ इनी-गिनी ही हैं। वह रूढियो का शत्रु था और अपनी कविता में उसने तुक, छन्द, रूप, सकेत, शैली सभी दिशाओ में युगान्तर कर दिया। साहस के साथ उसने जीवन के नए विपयो को अपनाया। भौतिक जीवन के यौन पहलू, जनतान्त्रिक वन्धुत्व का विकास, वैयक्तिक चेतना का सामाजिक प्रसार में निलय—ये सब उसकी कविताओ के दृष्टिकोण हुए। उसने अपनी गद्य-कृति 'डैमोक्रेटिक विस्टाज' (१८७१) द्वारा यथार्थवादी दृष्टिकोण से अमरीकी जनतान्त्रिक सदेश की विफलता पर गहरी चोट की। 'लीव्ज आफ ग्रास' नामक अपना कविता-सग्रह लेकर १८५५ में वह साहित्य क्षेत्र में उतरा। उसने लिखा—'सावधानी से मेरी कविताएँ पढो क्योकि वे रक्त-मास के बने मनुष्य को छूती हैं।' उसकी इमर्सन ने वडी प्रशसा की यद्यपि लावेल और होम्स उसके दृष्टिकोण को न स्वीकार कर सके। ह्विटमैन अमेरिका से अधिक यूरोप में प्रसिद्ध हुआ। उसने कवि को सत्य का सवाहक माना जो प्रगति का अग्रदूत है और जिसके दर्शन की नीव पर प्रगति का निर्माण होता है। ह्विटमैन की कृतियाँ अनेक हैं, एक से एक महान्।

लानियर

जिन अमरीकी कवियो ने गृह-युद्ध के वाद का कुण्ठा को स्वीकार न कर आगे आशा की लौ देखी, उन्ही में सिडनी लानियर (१८४२-८१) भी था। दक्षिण के कवियो में वह विशिष्ट था। उसने अपनी कविताओ में सामाजिक आलोचना को स्थान दिया। सगीतज्ञ होने के कारण उसने कविता को प्राय गेय वना दिया। उसकी अनेक कविताएँ सामाजिक हैं—'कार्न', 'दैट्स् मोर इन दि मैन दैन देयर इज इन दि लैण्ड', 'दि रिवेन्ज आफ हमिश'। कुछ मधुर लिरिक निम्नलिखित हैं—'दि स्टिरप कप', 'ए वैलड आफ ट्रीज एण्ड दि मास्टर', 'ईवनिंग साग', 'साग आफ दि चटाहूची'।

मार्क ट्वेन, हार्ट

ससार के साहित्य में मार्क ट्वेन (सेमुएल क्लेमेन्स, १८३६-१९१०) का अपना स्थान है। व्यग्य और विनोद के क्षेत्र में तो वह प्रायः अप्रतिम है परन्तु उसके अतिरिक्त गभीर, साहित्य के विवेचन मे भी वह कुछ पीछे नहीं। वह वाग्मी भी असा-

धारण था। वैसे तो उसने अनेक रचनाएँ की परन्तु सुधार और आदर्शवादी रचनाएँ उसकी विशेष महत्व की हैं। मिसिसिपी घाटी के जीवन का जो चित्र उसने खींचा है, वह साहित्य में अमिट है। 'टाम सायर' (१८७६), 'लाइफ ग्रान दि मिसिसिपी' (१८६३) और 'हकलबेरी फिन' (१८८४) उसकी कुछ असामान्य कृतियाँ हैं। इनका हास्य हृदय पर गहरी छाप छोड जाता है। इनमे से अन्तिम कृति जीवन की यथार्थ-ताएँ, आदर्श, वैयक्तिक चरित और वातावरण का अद्भुत विश्लेषण करती है। उसने मानवतावाद का बडी सहृदयता से चित्रण किया और झूठ तथा कपट का भण्डाफोड किया। मार्क ट्वेन न केवल अमेरिका में वरन् सारे यूरोप में अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। उससे कही रोमान्टिक ब्रेटहार्ट था, जिसने पश्चिम के जीवन को उसी प्रकार अपनी कृतियो में प्रतिबिम्बित किया जैसे मार्क ट्वेन ने पूर्व को। परन्तु निस्सन्देह वह मार्क-ट्वेन की निष्ठा और ईमानदारी को नही पा सकता, मार्क ट्वेन असाधारण ऊचाई का साहित्यकार है।

जेम्स

एमिली डिकिन्सन (१८३०-८६) उस काल की सबमे बडी अमरीकी कवियित्री है। उसकी कविताओ में गहरी मात्रा की मौलिकता है। उसके लिरिक निष्ठा और माधुर्य के सुन्दर उदाहरण हैं। अमरीकी यथार्थवाद के साहित्यिक आन्दोलन में विलियम डीन हावेल्स (१८३७-१९२०) का स्थान ऊंचा है। उसने सामाजिक न्याय का सबल चित्र अपनी कृतियो में खीचा। पहले उसने कविताएँ लिखीं फिर उपन्यास, कहानियाँ, निबन्ध सब कुछ और यह समूचा साहित्य प्राय ८० जिल्दो में प्रकाशित हुआ। हावेल्स का दृष्टिकोण अभी तक तालस्त्वा का है। उसके उपन्यासो में सबसे सुन्दर 'दि लेदरउड गाड' (१९१६) है। यथार्थवादी साहित्यकार की सही परम्परा गार्लेन्ड के बाद फ्रंक नोरिस ने कायम की। उसकी सुन्दर कृति 'दि आक्टोपस' उसी परम्परा का विस्तार करती है। हैनरी जेम्स भी यथार्थवाद के क्षेत्र में शैलीकार के रूप में विख्यात हो गया है। वह आलोचक और कृतिकार था और उपन्यास तथा कहानी को व्यजना का सबसे ऊँचा साधन मानता था। उसकी कुछ कृतियाँ, आलोचना की दिशा में 'क्रिटिकल प्रिफे-सेज़', 'दि आर्ट आफ दि नॉवेल,' 'दि आट आफ फिक्शन' हैं, और उपन्यास की दिशा में 'दि पोर्ट्रेट आफ ए लेडी', 'दि स्पाएल्स आफ दि पोइन्टन', 'दि विंग्स् आफ दि डव', 'दि ऐम्बेसेडर्स' और 'दि गोल्डन बोल' हैं। एडिथ वार्टन ने, जो हेनरी जेम्स द्वारा प्रभा-वित थी, अपने उपन्यासो में व्यक्ति और समाज के सामजस्य पर विचार किया। उसकी कृतियाँ 'इथन फ्रोम', 'दि एज आव इनोसेन्स' उसके उसी दृष्टिकोण की परिचायक हैं।

फ्रास्ट

क्लासिकल परम्परा का सबसे महत्वपूर्ण कवि राबर्ट फ्रास्ट (ज० १८७५) है।

वह अत्यन्त सरल और यथार्थवादी है। १९१३ में उसने अपने लिरिक 'ए व्वाएज़ विल' प्रकाशित किया और बाद में अन्य कविताओ का सग्रह। उसमें अनुभूति का पुट पर्याप्त है और करुण वातावरण उसे विशेष आकृष्ट करता है।

ड्राइज़र, जेफर्स (ज० १८८७), उल्फ

थियोडोर ड्राइज़र जैकलण्डन के-से उन अनेक साहित्यकारो मे है जो व्यक्तिवाद से समाजवाद की ओर प्रस्थित हो चुके हैं। वह भी प्रकृतिवादी दल का रचयिता है। पहले उसने मनुष्य को उद्देश्यहीन और रूढियो का शिकार चित्रित किया। 'सिस्टर कैरी' और 'जेनी गरहार्ट' उसी के नमूने हैं। 'दि फिनेन्शियर' और 'दि राइटन' मे उसने 'सुपरमैन' की शालीनता स्थापित की परन्तु 'ऐन अमेरिकन ट्रैजडी' (१९२५) में ड्राइज़र समाजवाद की ओर स्पष्ट बढ गया। राबिन्सन जेफर्स आधुनिक अमरीकी काव्य-क्षेत्र का विशिष्ट कवि माना जाता है। उसकी कल्पना-शक्ति उतनी ही सबल है, भावनाओ की गति जितनी आकर्षक। जेफर्स नितान्त व्यक्तिवादी है। शेरउड ऐन्डरसन अभिव्यजनावादी कहानीकार है जो सामाजिक व्यवस्था का प्रबल विरोधी है। उसके उपन्यासो के पात्र अधिकतर आत्मकथात्मक हैं। उसकी कृतियो में यौन के प्रति अमात्रिक आकर्षण व्यक्त हुआ है। टामस उल्फ के हिरो भी प्राय उसी प्रकार के हैं जैसे ऐन्डरसन के पात्र, आत्मचरितात्मक, जो अपने भीतर की दुर्बलताओं से निरन्तर सघर्ष करते हैं। एडवर्ड आरलिंगटन राबिन्सन (१८६९-१९३५) इस सदी का सबमे बडा अमरीकी कवि माना जाता है। उसने अपनी कविताओ में मनुष्य के विश्व से सम्बन्ध को व्यक्त किया। इसी परम्परा का यूजीन ओनील भी है। वह पुरानी देव-भावना के मिट जाने और नई विज्ञान व्यवस्था की सामाजिक असफलता से उद्विग्न हो उठा है। उसने कविता के अतिरिक्त अनेक नाटक भी लिखे और उनमें उसने रोमान्टिक यथार्थवाद का प्रयोग किया। १९३६ में उसे नोबुल पुरस्कार मिला। इधर का वह सब से बडा अमरीकी नाट्यकार है।

हेमिंग्वे

अर्नेस्ट हेमिंग्वे (ज० १८९८) अमेरिका के सुन्दरतम उपन्यासकारो में है। शैली का तो वह असाधारण 'मास्टर' है और उसका प्रभाव आज के गद्यकारो पर गहरा पड़ा है। उसने युद्ध में गति और खतरे का विशेष अध्ययन किया है। उसके उपन्यासो में इनका विवेचन बडी खूबी से होता है। पिछले स्पेनी गृहयुद्ध-सम्बन्धी उसका एक ड्रामा और अद्भुत कहानिया 'दि फिफ्थ कालम एण्ड दि फर्स्ट फार्टी फाइव स्टोरीज़' (१९३८) एकत्र छपे हैं। उनमें भी गति और खतरे का निर्वाह भरपूर हुआ है। उसका 'फेयर-वेल टु आर्म्स' अनेक लोगो के विचार मे सुन्दरतम अमरीकी युद्ध-उपन्यास है। उसका उसी महत्व का दूसरा उपन्यास 'फार हूम दि बेल टाल्स' है। दोनो ससार के आधुनिक साहित्य में अपना स्थान रखते हैं।

अपटन सिनक्लेयर, सिनक्लेयर लुइस, रिंग लार्डनर,

अमरीका में भी प्रथम महासमर के बाद राजनीतिक और आर्थिक उपन्यास विशेपरूप से लिखे जाने लगे। अपटन सिनक्लेयर ने अद्भुत योग्यता और क्षमता से कारखानो और उद्योगो का जीवन चित्रित किया। 'दि जगल' से लेकर 'किंग कोल', 'दि गूज स्टेप', 'आएल', 'बोस्टन', 'दि फिलवर किंग' आदि में, 'विविध अमरीकी जीवन की आलोचना हुई है। और इधर हाल में तो प्रथम महासमर और दूसरे महासमर के अन्त के बीच के जीवन पर ६ उपन्यासो की सीरिज में अपटन ने ससार के साहित्य को एक नई सम्पदा दी है। रूढिवादिता, मिथ्यावाद, मध्यवर्गीय गाँव के जीवन पर अपने उपन्यासो में उत्कट व्यग्य करने वाला समर्थ उपन्यासकार सिनक्लेयर लुइस (१८८५-१९५०) था जो पिछले वर्ष इटली में मरा। उसकी सुन्दरतम कृतिया, 'वैबिट' के अतिरिक्त 'ऐरोस्मिथ' (१९२५) और 'डाड्स्वर्थ' (१९२९) हैं। वह पहला अमेरिकन था जिसे साहित्य के लिए नोबुल पुरस्कार मिला था। व्यग्य के क्षेत्र में रिंग लार्डनर लुइस से भी बढ गया है। उसे इस सदी का सुन्दरतम व्यग्य-शैलीकार माना जाता है। उसकी निम्न लिखित कृतियाँ निम्नवर्ग का जीवन प्राय उसी की जबान में चित्रित करती हैं— 'यू नो मी आल' (१९१६), 'दि लवनेस्ट एण्ड अदर स्टोरीज' आदि।

स्टाइनबेक

जीवित अमरीकी उपन्यासकारो मे जान स्टाइनबेक (ज० १९०२) का स्थान बहुत ऊँचा है। वह उपन्यास-क्षेत्र का सफल कलावन्त है। वर्तमान उपन्यासकारो में यथार्थवादी प्रकृतिवाद की कला का वह अप्रतिम शैलीकार है। उसकी कुछ कृतियो को ससार के आलोचको से बडा आदर मिला है। वे ये हैं—'दि कप आफ गोल्ड' (१९२९), 'टु ए गाड अननोन' (१९३३), 'टोरटिला फ्लैट' (१९३५), 'इन ड्यूबियस बैटिल' (१९३६), 'ओन माइस एण्ड मेन' (१९३७,) 'दि ग्रेप्स आफ राथ' (१९३९), 'दि मून इज डाउन' (१९४२)।

सैण्डबर्ग

काल सैण्डबर्ग (ज० १८७८) फास्ट के अतिरिक्त वर्तमान अमरीकी कवियो में शायद सबसे वृद्ध है। वह ह्विटमैन की परम्परा में है। १९१४ में वह अति साधारण, परुष, बर्बर, कल्पना और सौन्दर्य का अप्रतिम प्रतिनिधि बनकर अमरीकी काव्य-क्षेत्र में उतरा। उद्योग और खेती सम्बन्धी काव्य-क्षेत्र का वह असामान्य विवेचक है। इस दिशा में उसकी 'शिकागो पोएम्म' (१९१६) 'कार्नहस्कर्स' (१९१८) और 'स्मोक एण्ड स्टील' (१९२०) प्रमाण हैं।

पर्ल बक

एलेन ग्लासगो (१८७४-१९४५) दक्षिण की स्यानीयता का उपन्यासकार है।

उसने गृह-युद्ध से आज तक के वर्जीनिया के बदलते जीवन का चित्रण किया है। उसके उपन्यास समस्या-उपन्यास हैं। पर्ल बक जीवित अमरीकी उपन्यासकारों मे बहुत ऊँचा स्थान रखती है। उसके अनेक उपन्यास ससार के श्रेष्ठतम आधुनिक उपन्यासो में गिने जाते हैं। उनमें उसने अमेरिका का नही बल्कि चीन के साधारण वर्ग का जीवन व्यक्त किया है। पूर्वात्य जीवन का इतना सच्चा अध्ययन शायद किसी पाश्चात्य उपन्यासकार ने नही किया है। चीनी जीवन और सघर्ष का जितना सही और सरस अकन उसने किया है अन्यत्र कही उपलब्ध नही। उसके अनेक प्रथम श्रेणी के उपन्यासो में महान् 'गुड अर्थ' और 'ड्रैगन सीड' हैं।

बेनेट

पद्य में फ्रास्ट, सैंण्डवर्ग और स्टिफेन विन्सेन्ट बेनेट तथा गद्य मे लार्डनर, हेमिन्वे, डास पैसस और स्टिफेन विन्सेन्ट बेनेट अमरीकी साहित्य के निकटतम 'क्लासिकल' (वर्तमान) युग के उत्तरोत्तर प्रतिनिधि हैं। बेनेट ने केवल वस्तुओ के कारण पर ही नही उनके महत्व पर भी जोर दिया। अपनी कहानियो, उपन्यासो और कविताओ में उसने सामाजिक दृष्टिकोण का मानवतावादी सहृदयता से अकन किया है।